

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. २८६१
Title जीत-गोविन्द काव्य
(हिन्दी-संस्कृत)
Author जयदेव : राग-संस्कृत
Age
Subject काव्य

No ६१२६ पत्र
८४०

७०७

रा.रा.
स.

नी रामकली जाल । सवैया । पाइपै स
नसार करै पलका परपाय दियो भयभीने । सो
यगई कहि केशव कैसेहूँ कोरही कोरक सौह
न कीने । साहसकै सबसौं सबछै छिनमे
हरि मानि सबै सबलीने । एक उसासही
के उससे सिगरेई संगेथ विदा करि दीने ।

रागिनी रासकली ताल सवेया मोहिबो मो
नकी रागिको रागिनी पद्यो वैत कह्यो पढ़े
गी । ओप उरो जनकी अपजे दिन कहि मटे भेगि
या न मढ़ेगी । नैननकी रागि गढ़ चला चल के
शवदास अकास चढ़ेगी । माई कह्यो यह माय
गी दीपतिजौ दिनहै इहि भाति बढ़ेगी । रागि

रा-रा
सं

रागिनी रामकली ताल सवैया बोली न सैवे
बलाय रहे हरि पायपरे अरु डो लिये डोरी । के
सव भेटि वेको भरि अंक छुड़ाउ रहे जकमै नहि
छोरी । सूर्ये चित्त वेकौ केनो कियो सिर चापि उ
दाय अंगदति होरी । मै भरि चित न ऊन चित्यौ न र
ही राहि नैनति लाजति गोरी । रागिनी रामकली ताल

रागिनीरामकली ताल सवैया थनभूथरि
लोचन लोलसोमेलि स्र कोड कटाक्षकी कोरक
छो । सख माथरि बानी वसी चतराईयो केश मोह
न तास पछी । ऊच तेहू तेनै तन लाज विराजति
वार गहे चहे ओर मछी । नवछी इति बालहि
बालकता इति श्रेया अनेरा की पौज चछी ॥

रा रा
स

सवैया । आजमै देखी है गोपसनाइ कहोयन अ
सो असीरकी जाई । देखत ही रहिये इति देखकी
देखते औरन देखी सहसई । एकही वेक विलोक
ति ऊपर वारो विलोकि विलोकति काई केसव
दास कलानिय वरु हूजिय काम किमेरो क
ह्राई । रागिनी रागकली ताल सवैया-

सवैया । वौलै न बाल बुलावत रहे न परेष लिखै
भुव प्रेम परेषौ । आपन हाथ विलोकि विलो
कि कही तव केसव बुद्धि वसेषौ । छोटी बड़ी
विधि रेष लिखी जरा आशु को रेष सब कौन जले
षौ । प्रेम ते बोल सस्यो न पश्यो अकलाय कस्यो
पिय कैसी है देखौ । रागिनी राम कली ताल ।

रा-रा
स-

हैगति मेद मनोरु केसव आनेद केद हिये उलहे
हैं । भौह विल्याति कोमल हासति अंग सवास
निगाछे गहैहैं । बेक विलोकनिको अविलो ।
कि समारुके नेद ऊमार रहेहैं । एई तो कामके
वान कसावत फूलन के विधि भूलि कहैहैं । रा
गिनी राम कली ताल सवेया तोरिन गायव

कान्ह भले जूभली समुजईहैं मोहि समुइको
जौ उमयोहो । केशव आपनो मानिक सो मन
राय पयाय दै कौनै लयोहो । नैनन हो मिलवो
करियै अब वैनन को मिलिवो नो रयोहो । जाउ
कयो तम जै सो सखी सइ अहो यपाल मै अयो क
ह्योहो । रागिनी राम कली ताल सवैया

रा-रा-
से दि आगे कै केश आपदि आसन दीनौ । आपदि पा
इ पषारि भलै जल पान कौ भाजन लाइन वी
नौ । वीरा बनाइ कै आगे थरे जव वै शरीर कौ कर
वीजन लीनौ । वारे गरी शरीर ऐसे कह्यो हसि
मै नो शनो अपराध न कीनौ । रागिनी राम कली
ताल सवैया चितवौ चित्त बोए हसा ऐ

जावत नावत वार अनेक सिंगार वनायो । जीह
मै आनको आनिवो क्योपै तेरो नऊन भयो म
न भायो । भावै सुने करिवो करि भासिति भाग
वडेव सनै करि पायो । कान्हो सथे जवाहति
नाही सवाहति है अव पाइ लगायो । रागिनी रा
म कली नाल सवेया आवत देखिलिये उ

रा-रा-
क- जू देखो सवै हित बात सवौ जू सनी सबहीहैं य
हनौ कछु और वहै सबही अव सौह करौ वकरी
जतहीहैं । समजार कहौ समझी सबके सब
रूढी सवै हमसौ जकहीहैं । मान कियौ अपमा
न करौ तो हसो अवके हसिके कोरहीहै । रागि
नीराम कली ता- सवैया वैदी सपीन की

हमौ हो बला एतै बोलौ रहौ नित मोनै । मोह
अनेकनि आवहु अंक करौ रतिकौ प्रति रैन की
गौनै । बवाएतै पाहु बस्याइ विरीजन आईहो के
शव आजही गौनै । मोहन के मनको मोहनी
सकहौ यह थो सिष ईसिष कौनै । रागिनी रा
मकली नाल । सबैया । हित के इत देषहु

रा-रा
सं

उपरी । एकचित्तै समकाय उतै उत वात कहै
वड भायपरी । चारुवकोर विलोचन भासि व
जे दिसतै अगरी एमरी । सवि आजगई होनी गो
कल हौं सबही मिलि हैजको चोदकरी । रागि
नी रामकली ता । संवेया हौं सब पाइ सिपाइ
रही सिष सोषे नए सिष नैहू सिपाई । मैवहुनै अष

सोभे सभा सवरी के सनै नन माऊ वैसे । वृजे ते वा
न वस्याय करै मनही मन केशव दास हूँ । बेल
तिरै उत बेल उतै पिय चित पिलावति यों विलसै
कोई जानै नही दृगदौरिक वै कितकै हरि ओषिन
छै निकसै । रागिनी राम कली ताल सवेया
केशव राय की सौंर कै कै कछू एकन आप्रमै हो

रा-रा
सं
बोल हसौं हैं । देवदूत धौड़ कवार सकोचन आर
स लोचन आरसी सौ हैं । आपन्न वैसेही साजसौ
आज सभूलि गई पिय काल्हिकी सौ हैं । रागि
नीराम कली ताल सवैया वैदिकनी हजना
रिनमै वनिश्री हषभान ऊमारि सुभागी । घेलति
ही सखि चौपर चारि भई नहि बिल षरी अनुरागी

पाइसी देखोपै केशव केहे कटेवन जाई । देउदिये
वित साथनिहे संग कूटन कौं बलकी बलताई ।
देखउ दैमधकीपट कोटि मिटै नचटै विषकी विष
ताई । रागिनी रामकली ताल सवैया केश
व औरनसौ रसरासि रसो रस वाड सवै हमसौहैं ।
हैं मन मैलेन जो लोकहु अब छाउहु वोलिवो

रा-रा-
स-

है मरा आय गये कियौ आवेहिरो सजनी सुख
दाई । आयन नेद कुमार सवा सवकौन विचार
अवेर लगार्इ । रागिनी राम कली ताल सवेया
केशव जीवन जो हज को निज जीव झेते अति वा
पहि भावै । जापर देव अदेव कुमार नि वारत माई
नवार लगवै । ताहरि पैं नूरा वारि की वेदी मरु

पीछेते केसव बोलि उटे सति कै चित चानि आन
रिजागी । जानिन काऊ कवै हरि के हर मारग
ही सरसी दग लागी । रागिनी राम कली ता
सवैया । सधी भूलि गई भूल प कियौ काह कि
भूलेई डोलत वादन पाई । भीत भये कियौ केश
व काहू सो भेट भई कोऊ भामनि भाई । आवत

रा.रा. सं. ऊँज विराजति गोप दधु कमला जल केज ऊँटी
महमोहें । रागिनी राम कली ताल सवैया पो
य एरेहेंते प्रीतम नौ कहिके शवके हूनमै दयादी
नी । तेरो सखी सिष सोपीत एकहे रोषझकी सिष
सीषिजलीनी । चेदन चेद सरोज समीर जौ अख देख
भरे सखसीनी । मैउलटी जकरी विधि मोकड़ न्यायन

वर पाय ऊँवाय दिषावै । हौं तो वची अत शसति
हे अैसे और जदे पै तो ऊतर आवै । रागिनी राम क
ली ताल सवैया भाषति है सष्वैन सषीन सौं ला
षदिये अभि लाषनियो है । कोमल शसति नैन वि
लासति अंग सवासति कोमन मो है । मूरति वे
न किथौ तलसी तलसी वन मै रति मूरति को है

रा-रा-
स-

काहूके प्रेम पगीहैं । रागिनी रामकली ता-
सवैया केशव कैसेहैं एव प्रण मिल्यो मनभा-
वतो भाग भयोरी । जानैको मारि कदा भयो कैयों
हेजो औधीको आयु ऊयो सटह्योरी । ताकड
तन अजौ हसिबोलै जरु मेरो मोहन पाय प
ह्योरी । कादहूतै इह तेरो कठोर इहे विर

हैं उलटी विधि कीनी । रागिनी रामकली ता
सबैया आज कछु अखियो हरी औरसी मानो
महावर मोहि रेगीहैं । मोहन मोहि सी लागत
मोहि उतेपर मोहन मोहि लगाहैं । मेरी सौ
मोहसौ मानऊ बेगि हिये रस रोसकी रीति ज
गीहैं ॥ मेरे वियोगके तेज तवी कियौ केशव

साया
स

हैं। रागिनी रासकलीनाल सवैया हलसे
हल सवास कवाससी भाकसीसे भये भौनस
भागे। केशव वाग महे वनसों जरसी चढीजो
नह सवै अंगदयो। नेह लग्यो उरना हरसों निस
नाह चरी ककहे अनरागे। गारि सो गीत विरी
सिससी सिगोरे सिगार अंगार सोलायो। रा-रास-

होनल हून जह्योरी । रागिनी राम कली ना
सवैया औधिदै आय उसो उनसो यह भोजन
कै अवही हम अहैं । ताकहुनो अवलो वहराके
राषी वर्याइ मरु करि महे । बैठे कहा इनकी फि
राके शव जाहुनही कोऊ जाय जकैहैं । जानत
हैं उन आषितिते अस ओउमरो वहुह्यो अनिर

रा.रा.
स.

मली जाल सवैया गोप बडे बडे बडे अथा इति
केशव कार सभा अवगाही। विलत बालक जा
ल गलीन मे बाल विलोकि विकाही। आवत जा
तिलगाई चहूँ दिश चहूँ टमै पहिचानत काही। वं
दमो आनन काफि कही चली सृजन है ककुनो
ही किनाही। रागिनी राम कली ना सवैया

नाल सवैया लाडिली लीलिक लोरि ल
री कहे लाल लके कहे अंगि लगायके । आज
तो केशव कैसे हूँ लैरुपे लागन देतिन देषऊ
आयके । वेराचलौ उदि आई लिवावन दौरि
केली एही अऊ लायके । भूलेहूँ गोकुल गाउमै
गोविंद कीजै शरुवन गाउ चरायके । रागिनी रा

रा-रा-
स-

नही वितयो इह कान्हू कियो लविलालच केतो-
झझाके झरिबहे प्रति केशव पाय परे तो परेई
रहे तो । हौं तो यहै तबही की विचारति होतो उ
मान कौं याही तो एतो । लामा लई अत पात
रि देह जनै कवरी विधी ओंठें न देतो ॥ इति
रागिनी रासकली नाइका नाइक समाप्तम् ॥

होत कदा अवके समके समकेन तवै जवहे स
मजाए । एकहि देक विलोकनि माहि अनेक अ
मोल विवेक विकाए । जान पयो नजना वझू
जनमावधि लौउहि जातिहो पाए । वात वनाय
वनाय कदा कहौ लेइ मनाय मनाय जौ आए ।
रागिनी राम कली नाल सवैया । भूलेहे सुखे

ग-रा
क- सो दास रूपकीसी माला प्रेमकीसी माला आज
लौ न देवी सति जैसी आज दीसी है ॥ रागिनी
रामकली ताल कवित चंचलनहूँ नथ
अचर नखूँ जै राय सोवे नैऊ सारिकाऊँ सकतो
सवायोजू । मंदकरोँ दीपउति चंद मुख देखि य
न दौरिकै उगई आऊँ हारतै दिषायोजू । मयाज

शांतिनी रामकली ताल कवित सुकता
मनित की है मक्त उरीसी नाक दोन दास्यो द
मनी हसनी वनी सी है । मोहन के मेहन के अथ
रोन की सी रेष भुजटी खेवष भाव भेट कवि
की सी है । वित वन राई उज की सी उज के से
अरु ऊच सकुचौ तो नैन जैसे उज की सी है । के

रा-रा
को नौ देखतिहैं उसे कच्छुझतो नही प्रवहते देखि
यत उर उदनयोहै । रहसि खिलन गई नोते जे
व भारी भई कियोयाने वाज भयो महावर द
योहै । ओषनकी मेरी फाटनसी आवतहै जा
नतहैं रीठ लारि केशो जो कियोहै । रागि
नी रामकली नाल कविन सबदे सखीन

मगल बाल बाहिरै विगारि देखै भाषो तमै केशव
समोह मन भायो जू । कल के निवास ऐसे व
चन विलास सति सेश तो हरति हे ते स्याम स
ष पायो जू ॥ रागिनी राम कली ताल कवि
त । अत उत बाहि देखो जव कोऊ छिगनाहि
वार वार जिय कहो हिये कहा भयो है । अत लो

राधा
की


एसा मै कौन रस है रागिनी राम कली नाल ।
कवित । चंद कैसे भाग भाल मज्जदी कमान
कीसी मन कैसे पने सर नैनन विलास है । ना
सिका सरोज गंध वाहसे सरोध वाहू दाखो से
दसन के सोवी जरी सो हास है । भाई कीसी जीव
भज पान सो उदर और पंकज से पाइ गति हेस की

वीच दैके सौहै पाय के पवाय कच्छु खाइ वरकीनी
वस वसहै । कोमल मलकासी मलकाकी मा
लकासी बालिका जशरी मोडि मानस किपसहै ।
जानैको विभातु भयो केशव सनै कोवात देखौ
शानि गात जात भयो कियौ प्रसहै । विजरीज
राषी यह विजनी विचित्र गति कहौ यौ शसिक न

रा-रा विवौ । बोलति हसति मउ चातरी चलति चारु
को पल पल प्रति पति वत प्रति पारिवौ । केशोदास
सविलास करु कअरि राये इहि विधि सोरह सि
गारिवौ । रागिनी रास कली ताल कविन
केशोदास सविलास मेदहास जन अवलोकति
अलापनि कौ आनेउ अणारहै । बहिरति सान अरु

सी जास है । देखी है गुणाल एक गोपिका मे देवता
सी सोने से सरीर सब सोये कीसी वास है । रागि
नी राम कली नाल कवित प्रथम सकल स
वि मजन प्रमल वास जावक सदेस केस पास
को सधारि वौ । अंग राग भूषण विविध मेष
वास राग कज्जल कलित लोल लोचन निरु

श-श-
क- बल बल वीर कौसौ मान कोसौ सब मझे सो
हि मन भायो है । यलसौ अचल सील अतल से
चलचित जलसे अमल तेज तेज कौसौ गायो है
केसो दास वसत अकास के प्रकास चोख चरचर
बट बट चेरुवनौ छायो है । रति कीसी रति ना
थ रूप रति नाथ कौसौ कहौ केसो राइ फूट



प्रेत रति सात प्रति रति विपरी तितिकों विविधि
विचारु है । कूटि जाति लाज जहो भूषन सदेस
केस दूटि जात शर सब मिदत सिंघारु है । कूजि
कूजि उदै रति कूजि तति खन घरा सोई नौस
रति सधि औरु विवहारु है । रागिनी रामक
ली ताल कवित । तात को सो गात सब

स-श-
क ति देवता बषानी है । ऐसी बातें कौन जनमा
नी सति मेरी सती उनके तो तेरी बानी वेदकी
सी बानी है । रागिनी राम कली ता-४ कवित
कैथौ गदर काज कैथौ कूटोत सष समाज कै
थौ कछु आज बत वास विधातै । सेनोतै न
सोय किथौ काहु सो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध

कौन परि पायो है ॥ राखिनी राम कली ता
कविता । चोली को सो पान तोहि करत सेवा
रि बोई दर्पन ज्यों तोही मोऊ मूरती समनी है ।
तेरे मनोरथ भरी रथ रथ पीछे पीछे डोलत
शुपाल मेरो गंगा को सो पानी है । तेही निय
देवता पै पायो पति केशो सर पतिनी बद्धन प

रा-रा की । केशोदास नामे उरी दीपकी सिपासी दौरी
के उरावति नीलवास अति श्रेया श्रेयाकी । पौनपा
ति पेक्षीपशू वासमे सवद सति जित तित वौ
कि वौकि चाहै चोप श्रेयाकी । नंदलाल आराम
विलोकै कुंज जाल वाल लीनी गति तरि का
ल पिंजर पतेयाकी । रागिनी रामकली ता-

कियौ उर प्रव दानतैं । साव मैत देह कियौ मोह
सौ कपट नेह कियौ देखि मेह अति उर प्रियातैं ।
कियौ मेरी प्रीत की प्रतीत लेत केशो रात्र अजह
न आय मन सूर्यौ कौन वातैं । रागिनी राम
कली ताल कवित चंदन बिट वष कोमल
विमल दल ललित वलित लता लपटी लवेरा

रा-रा-
क
मायो न मनायो मन असी तोहि हृदि पज पी
छे पछितात है । रागिनी रास कली ताल ।
कवि आषन ज्यौ सृजत न कानन तो सनि
यत जैसे केशो राइ तम लोग न मै गाये सौं । वे
सकी विसारे सथी काक ज्यौ वनत फिर जूहे
सीदे सीत पात ईद सीद दाय सौं । हरि हरि करत ही

कावित । बार बार बोली जव बोलीन विहसि
तव बालक ज्यों बालि बेको कत विललात हैं ।
ज्यों ज्यों प्ये पायन त्यों पाहन ते पीन भयो होत
करा किये अब साधन सो गात हैं । केशोदास
सब छारि कीनो इटरे सो होत तोरू छाडि जिय
जिये विन करा जात हैं । ऐसे प्यारे पियरे को

रा-रा
के
प्रतिफल माल तो रिझारी वीरा बगारैके । लैलै
दीह सास नजि विविध विलास हास के सो दास
है उदास चली अकलाइके । सेइके संकेत सुनो
कान्हू जसो बोली ऊनो सो सो जोरे कर हनो हनो
उष पाइके । रागिनी राम कली ताल कवित
लीने हम मोल अनबोली आई जायो मोह मोहि

दौरि दौरि गहो पाय जो नौत कहर दौर जानि जि
य पायेहो । काको चर चालवे को वसे कहो वन
साम रहेहो जौ वसन प्रात मेरे चर आयेहो । राशि
नी राम कली ताल कवि । देषति उदधि जा
न देषि देषि निज गात चपकके पात कछू लिखो
हे वनाइके । सकल संगंध फारि हरि काको मारि

रा-रा कवि नैननकी अतवाई वैतनकी चतवाई रा
की तकी अवाई नडरति इति चालकी । अपने चरित्र
निके चित्र वचित्र चित्र चित्रनी ज्यौ सोहै साय प्रवि
काय अलकी । चंदके समाचार वाय सो चली फि
रति करके तिसारे मरानैनन की पालकी ॥
की जैपे पान प्राण पारे आई है जू आई अलवेति

चन स्याम चन सात्वा बोलि लाई है । देखो है उष
जहो देख ऊन देखी परै देखी कैसे बाट के शोदास
नी दिखाई है । ऊंचे नीचे बीच कीच के ठकनि पीर
पर साहस गये दमति अति सुषदाई है । भारीय
हकारी निसि निपट अकेली तम नारी प्राण ना
थ साय प्रेम जस हाई है । रागिनी राम कली ता

रा-रा
को

मेदज्यों । निमर वियोरा भूले लोचन वकोर रु
ले आई वज्र वेद चेद वलि चलि वेदज्यों । रागि
नी राम कली ताल कवित उरुजत उरुग
चपत फति चरनन देषति विविध निमिचर दि
स चारके । गन तिन लगन मसलथार सुनति
न फिली गन घोष निरघोष जलथारके । जा

खालि कलकी । रागिनी रामकली ताल ।
कवित । चंदन चण्डादकारु अंबर के उर हार स
मन सिंघार सोहैं आनेदके कंदज्यौ । वारो कोरि
रति नाथ वानामै बजाय गाय म्याज मयाल
साथ वानी जगवेदज्यौ । चौकि चौकि चकईसी
सोति निकी हूनी चली सोते भई दीन अविद उति

रा-रा
के

क आनि नीकेरेको लागात है सीताज को हन गी
त कैसे उर आनिये । आविन जो देखियत सोई
सोची केशोदास कानन की सुनी सोची कवड़े
नमानिये । गोपाल की जलदाप यौही उलटा
वति है आज लौनो वेसे है कालि की न जानिये
इति रागिनी राम कली कविने समाने शुभम

वनिन भूषण गिरत पट फटतन कटक अटक
उर उरज उजारके । प्रेतनकी एहैं नारि कौनपै
नैं सीछौ यह जोग कोसौ सार अभिसार अभि सा
र अभिसारके । रागिनी राम कलीनाल कवि
न । हरिसेहि तू सो भ्रम भूलिहून कौज मनहो
नो करि स्थिर हूँ ते होत हित जानीये । लोक में प्रलो

रा-वे वन विलता वतरे । उथोजे पद सेवत वीते कल्प
जग सो कवजा उरला वतरे । ज्यो सख ब्रह्मलो
क मै नाही सो कवरी सख पावतरे । सगरे ब्रज
को राज दीयो है हमे लावि जोरा पदा वतरे ॥
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । हरि सख सो
रती रलीयो तव ते भवन नही भावतरे । गावै शु

रागिनी बंगाली दुमरी ताल । ३ । सोवराजी
होसै जायो थारो जान । रतमानी परभातडी
आया रूढो करो खोवावान । प्रकट प्रकार
करी छेक जरा पीकलोक प्रथमत । इनमें
रूढ नहै तिल जीकाई रेगीला पीतमरी आन
रागिनी बंगाली दुमरी ताल । ३ । कवनव

रा-वे मन राम कल राम कल थावरे सोई । महा जय
करे वेहरि प्रसन्न होवैगे । मन बच क्रम सौं
याद करे ज्ञान करे भव पार परोरे । प्यारे क
रुणा सागर तिन पालो सब से सारे पेसे मथ
सुदन मयारे । रागिनी बंगाली दुमरी ता । ३ ।
मोरी गली पाय फेर जो हो मोरी रा । हयो यो

दरमैकरे थाकी सोवस कवहुन आवतरे ॥ रा
गिनी बेगाली दुमरी ताल ॥ ३॥ तेरीगत अणरेण
२॥ अतप्रवेड जिनरव्योहैब्रह्मंड अदजोतिनिरेज
न निराकार ॥ जाकौकोउतपायोपाररे ॥ निरा
मगावै पारनपावैब्रह्मा माव उवरे ॥ थ्यानथरेजा
को पेचानन श्रीपत जश अत अमैभक्त दातार ॥

रावे ली दुमरी ताल ॥ ३ ॥ कारीरे बहरीया राम कैसी उ
मड आई । सोवत कीरित आई पीया मिले वन थाई
अरे वहे परवै आसन भावन विना सुना मेदि वा
हो राम कैसी ॥ रागिनी बेगाली दुमरी ता
ल नितारा ॥ ३ ॥ उमरौ उमरौ आवै गोरी
या जीया रहमारहो ॥ कहा कहे कबु वसन

चढ़कर आप मोरे बालमलोक जाने प्रमयावसे
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३१ नई लगन ह
मजानीरे । जो तम रसीया बोली बोलौ तम रहे
ते नारस यांनी हो । रागिनी बेगाली दुमरी ता
ल । ३१ मै गवनै नही जई हे राम । जो गवने की वा
न चलै है ता पर टोंता चलै हे राम । रागिनी बेगा

१-३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥

ह्रीं मेरो तन कारो मन पीय राह मा रहो ॥ क
सानन्द रुकत नही रोके मोही लीयो हेमही
य राह मा रहो ॥ इति रागिनी बेगाली हु
मरी ताल तितारा समाप्तम् ॥ ॥

रा-वे टपा ताल । ३ । सयाने वेलियावे हरनया वसदे
लोक विगाने । मित्र करदि वारिदे पैया ना
पउदी वेमियो खकरेत्त सिमुदे आवो नैयतादे-
रागिनी बेयाली टपा ताल । ३ । केस जाउअ
कीता वेदिलन कदर ना जाने दर कदर मियो ।
वेषन न्मुक्ताक जि मेरा इस्क लगामत लीता

रागिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥ नोडे वेखन दि
नोगा मेव । चढवेषो वारिवे राजन नू हरी वेसो
णार वस नले साडी चोगा ॥ रागिनी बेगाली ट
पा ताल ॥ ३ ॥ आया निस भाल वोरो जनयार
किङ्कयो ते नूयार । हीरति मानि नू कि प्रकटा
पीरू दिल दिङ्कई ओसार । रागिनी बेगाली

रावे चोन शोरि मियो सोई गति मत ईमान प्यायेदा ।
राशिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥ कि जालमा
दिवे मियो योकि सदी यारी दले विसड्डे ना
लन जाने नामन जाने की करवे । माववेखो
नेअ सोवरो योमे दियाने जिंदरी दिवानी मैदा
जिंदरे । राशिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥

दिलतू ॥ रागिनी बेगाली टण ताल ॥ ३१ चल उ
ढकर दीदन याग मियो । दीदन यादेदा आमदा
जोदा मियो । वाग बहारो निवे वेधन चलिण हो
मियो मैडा दिल परदा वजार मियो । रागिनी बे
गाली टण ताल ॥ ३१ देवणा दिदार जायेदा प
रावले परावायले छ मियो । खोटा खारा पय

रा-वे- मार चला कौं छोड़ि चलावे मज नृ इस्क गरी
वो कौं मियो । ईया खदा यद सन मेरी दाहिफि
र याद सो मेरी मियो । रागिनी बगाली टपा
ताल । ३ । बिडनदा परवे लावे भला मियो वे
सान् चाक चाक जवावो भोदा कोईवे । ओदा
नियोदा साडे चरवे शोरी लगि सहवत पाक

जाउडाक मालकी जाये । इस्क लगा में श जीत
र सोदाके हाहाल जिगार परवी जावे । शशिनी
वेगाली टण ताल ॥ ३ ॥ कौन गत भई मोरी आ
नना मिलै पिया मोकों । उन वित कलन प
र न प लखिन के सै रेण विहाय आन मिलै पि
या मोकों । शशिनी वेगाली टण ताल ॥ ३ ॥

रा.वे. सवि आंखी मेरे प्यारे नू रात कि ये वे मारिओ ॥
आप छुड जा दे वारी नाल मही ले मछुड थकें
दी मैं सारिओ । रागिनी बेगाली टपा नाल । ३।
कोता वे करे जा सारदा पारदा गम खावा ॥
की प्रछु दे वारी आ जय दिल वे करारदा हौ तो या
रियो दे नाल गुजारदा । रागिनी बेगाली टपा

रागिनी बेगाली टणा ताल १३ । होवे फोला म
न पर चोदियो । ओष लउंदिम मा क मोदि वि
न च फयो दियो होवे फोला मे । रागिनी बेगा
ली टणा ताल १३ । जिद मोदिया रोदे ताल ल
गि वे । अदा रेगने जद मै पावो गारे लगावो बिन
डिटे ओ मै दगो । रागिनी बेगाली टणा ता १३

रा.वे नी बेगाली टपा ताल।३। पलक दो आऊ मे
रा साई। जो चाहे जरा राज कर कोई कर सभ
ऊ दरत उसि ताई। रागिनी बेगाली टपा ता
ल।३। भई लीजे वो मरी बिन देखिने कना स
हाय। जवने रासन कीनो विदेश वा भवन भा
वे ककुनहिंचा। रागिनी बेगाली टपा ता।३।

ताल।३। तोरिनगरिआमैं नारहोंगि तेतो अ
नत करारस भोग। सदादेगारस देग करारइ ह
मको दीनी वद्धत विरोग। रागिनी बेगालीट
पाताल।३। आज तोरन गाजै आये पियारवा
वर मेरे। अंग सेंगरेग लागै प्रचट डरावत गा
त छिनल विपल ऊप कत आप डेरें। रागि

रा.वे वैगाति साय साय सानी था पस गारे ॥ इति
रागिनी वेगाली टपा समाप्तम् ॥

मया मय मेरे मयोंरे थाति सामरे सानी । पया मे
थरे थरे पयाथम थामरे सासरे सानी । सादेगा
ममे सगरे मगमे थाम थाम पेप थानी । साथ
साथ पयाथरे सदारेग मोरी एकत सानी ॥
रागिनी बेगाली टपा तिनारा ॥ ३ ॥ पया
मयारि साति परे मपराथरेरे । गी समाथ हो

रावे धुको रसमेजरीमै प्रेकुत जो वना कहाइ ॥ रा
गिती बेगाली सवैया ताल ॥ १ ॥ थन मूथ
रि लोचन लोल सो मेलि सकाउ कटाक्ष की
कोर कछी । मात माधुरि वानी बसी चतरा
इयो केश मोहन नास पछी । कच तेहू नैन
नन लाज विराजति वारगहे बड़े डोर मछी

गगिनी बेगाली सवैये जाल।३। मोहिबो मोह
नकी गतिको गतिही पयोबन कहा थौ पड़े
गी। ओप उयो जनको उपजै दिन कहि मदै अगि
या नमदैगी। नैनन की गति गुरु चलावल के
शबदास अकास चढ़ैगी। माई कसो यह माय
गी दीपति जौ दिन है इहि भाति वढ़ैगी। नवव

रा.वे. पर सो है । नाहिकरो जिन नागारिनु राज राज
दियो तव येऊस को है । रागिनी बेयाली स
बेया ताल । ३ । पार पारै मनुहार करै पलका प
र पाय दियो भय भीने । सोय गई कहि केशव
कैसे हूँ कोर हो कोर क सौ हन कीने । साहस कै सु
ष सौं सब छै छिन मै हरि माति सवै सुषलीने

नवछी इति बालहि बालकता इति श्रेया अ
नेगकी फौज बछी । रागिनी बंगाही सवै
या ताल । ३ । ऊरु उोजनके परसे रिस भौ
रि बछी नवछी कित कोरे । दैरद बच्छद चे
वनही रस सीति गही उनही मन मोरे । नीवी
की नीवि कुँवे ब्रवि औरसी पेलत पाति पिया

रा.वे सस्योन पश्यो अकलाय कस्यो पिय कैसी है देषो ।
रागिनी बेगाली सदैया ताल । ३ । आज मै देषी
है गोप सता ३ क होयन ऐसी अहीर की जाई ॥
देषत ही रहिये इति देह की देषते और न देषी स
हाई । एक ही बंक विलोकति ऊपर बाँये विलो
कि विलोकति कारी । के सब दास कलातिथ व

एक उसा सही के उससे सिगरेई सगोथ विदा करि
हीने । रागिनी बेगाली सवेया ताल । ३ । बोलै
न बाल बलावत रहे न घरेष लिषे भव प्रेम परे
षौ । आयन हाथ विलोकि विलोकि कही तव
के सब बहि वसेषौ । छोटी बड़ी विधि रेष लिषी
जग आशु की रेष सकौन जलेषौ । प्रेमने बोल

रा.वे. विद सो है सो तो चेद सो देखौ । रागिनी बेगाली
सवैया ताल । ३ । कान्ह भले जभली समजार्
हैं मोहि समझ कौ जो उम सो हो । केसव आप
नो मानिक सो मन शय परायें कौ नै लखो हो
नैन न ही मिलवौ करिये अव नैन कौ मिलि
वो नौर हो । जाइ कसौ तम जै सो सषी सज्जये

रु वृजिय कामकि मेरो कन्हाई । रागिनी बेग
ली सवेया ताल । ३ । ज्यों ज्यों इलास सो केसव
दास विलास निवास हिये अवरेष्यो । त्यों त्यों व
छो उर कंप ककुभ्रम भीत भयो कि थौं सीत वि
सेष्यो । सुदित होत सषी वरही मेरे नैन सरोज
नि सोचके लेष्यो । तैंज कसो मध मोहन को प्ररु

रा.वे. केविधिभूलिकहेहैं । रागिनीबंगाली सवै
या ताल । ३ । तोहित पाय वजावत नाचत वा
२ अनेक सिंगार बनायो । जीहूमें अतकौ
आनिवौ छोड्योपै तेरो तऊत भयो मनभायो ।
भावै सने करिवो करि भामिति भागवडे वस
नै करि पायो । काहु तौ स्येज वाहति नाही

है गणाल मैं प्रेसो कह्यो हो । रागिनी बेगाली
सवैया ताल । ३ । है गति सेद मनोहर के सब
आनेद के देखिये उल रहे हैं । भौह विलाति कोम
ल हासनि प्रेस सवासनि गाढे ग रहे हैं । बेकवि
लोकनि को अविलोकि समाह कै नेद ऊमारु
रहे हैं । परीतो काम के वान कशवत फूलन

रा.वे. वेत सिंघार समीप सिंघार किये किये सेंद
र नाई । रागिनी बेगाली सवेया ताल । ३ ।
आवत देखिलिये उदि आगे के केश आश्रि
आसन दीनौ । आश्रि पाई पधारि भलै ज
लपान को भाजन लाइन वीनौ । वीरावना
इके आगे थरे जब बेहरि को कर वीजन ली

सुचारति नारी सुचारति है अव पाइ लगायो ।
रागिनी बेगाली सवेया ताल ॥३॥ आज वि
राजत है कहि केसव श्री हृषभा नकुमारि क
न्याई । वाति विरेचि वहि कस कामची सुवि
चारि सुबुद्धि बनाई । अंग विलोकि विलोकि मै
ऐसी को नारि नहि जहि नारि निवाई । मूरति

श-वे ज ही गौनै । मोहन के मत को मोहनी सकहौ
यह सिष ईसिष कौनै । रागिनी बंगाली सवैया
ताल । ३ । हित कै इत देष झुज देषो सवै हित वा
त सनौ जसनी सवरी है । यहनौ ककु और
वहै सवरी अव सौह कौ वकरी जतरी हैं । स
सुजाद कहौ समुजी सव के सव कूटी सवै हम

नौ । वाहेगद्दी हरि प्रेसो कस्यो हसि मैतो इतो
अपराध न कीनौ । रागिनी बेगाली सवेया
ताल ॥३॥ वित्तवौ वित्त वोए हसाए हसौ होबु
ला ऐतें बोलौ रहौ नित मौनै । सौं ह अनेक नि
आवहु अंक करौ रति कौ प्रति रैन की रौनै । व
वापतें पाहु वस्याइ विरी जन आईहौ केशव आ

रावे की घट कोटि मिटै न बटै विष की विषताई । रा
गिनी बंगाली सवैया नाल । ३ । केशव औरत सौं
रसि रसि रस्यो रस वादु सवै हम सौं हैं । हौं मन मे
लेन जो लो कबु अब ह्या डड बोलि वो बोल हमौ
हैं । देख ड्यौ श्वार सकोचन आर सलोचन आर सी
सौं हैं । आपज वैसे ही साज सौं आज सभूलि गई

सौ जकरी हैं । मान कियौ अपमान करौ तोर सो
अव के हसिके कोर ही हैं । रागिनी बंगाती सबै
या ताल । ३ । सौ खल पाइ रही सिष सीषे न ए सि
षतै हूँ सिषाई । मैव झूतै आव पाइ रही देख्यो पै के
शव के हूँ कटेव न जाई । देख दिये वित साथ तिहूँ
संग कूटत को पलकी पलताई । देख दै मथ

रा-वे- निकसै । रागिनी बंगाली सवैया ताल । ३ । वैठि झुनी
बृज नारिन सै वनि श्री बृषभा न ऊमारि सभागी । ऐ
लति ही सवि चौ पुर चारि भई नहि बिलखी अनरा
गी । पीछे ते के सब बोलि उहे सनि के चित वात रिआ
नरी जागी । जानित काइ कवै हरि के सर मारगारी
सर सी दया लागी । रागिनी बंगाली सवैया समासम

पिय कालि की सौ हैं । रागिनी बेगाली सवैया
ताल । ३ । वैदी सषीन की सौ भे सभा सबरी के
स नैनन माऊ बसै । बजेत वात वस्याय कहै
मनरी मन केशव दास हसै । बिलनि है इत धे
ल उतै पिय चित्त बिलावति यौ बिलसै । कोई
जानै तही दृग दारि कवै कित कै हरि ओ बिन छै

श. दो.
गी.

चक्रवर्ती श्रीवासुदेव रति केलि कथा समेत मेतं करो
ति जयदेव कविः प्रबंधं २ यदि हरि सरणि सरसं स
नोपदि विलास कलास ऊत्तरहर्ष । मधुर कोमलकांत
पदावली शुभा तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचं पल्ल
व यत्समा पतिथरः संदर्भं सुद्धि गिरौ ॥ जानीते
जय देव एव शरणः आच्छा डरुहडुते = । शृंगा

अथ टोडी रागिनी गीत गोविंद परिच्छेदमाह ता-
ल। ॥ मेधैर्मे इरमंवरं वतभवः श्यामास्तमालदु-
मे नैकं भीरुरयं त्वमेव तदिमे राथे गृहं प्रापय
इत्येतेदति देशतश्चलितयोः प्रत्यथ ऊजदुमे राथामा-
थवयो जयंति यमना कलेररः केलयः १ वाग्देवता
चरित विवित वितसम्यापस्यावती चराणचारणा

रा. हो.
गी.

चक्रगारिषे केशव धृत कक्ष्य रूप जय जगदेशहरे २
वसति दशान शिवरे धरणी तवलया शशिनिकलं
क कले वनि मया केशव धृत मकर रूप जय जग दे
श हरे ३ तव कर कमल वरे नाव अद्भुत भृंगे दलित
हिरण्य कशिपु तनु भृंगे केशव धृत नर हरि रूप
जय जग दीशहरे ॥ ४ ॥ छल यसि विक

रोन्नर मत्तमेय रचने राचार्य गोवर्द्धन स्यङ्गी कोपिनवि
श्रुतः श्रुतिथरो थोयीक विद्वापतिः ॥ अष्टपदी
दीर्घी रागिनी । ताल । । प्रलय प्रयोधिजले ध
तवानसि वेदं विहित विहित चरित्र मविदं केश
व धृतमीन शरीर जयजगदेषाहरे । क्षितिर्नति
विप्रलम्बरे तव तिष्ठति दृष्टे थराणि थराकिरा

रा. टी.
गी.

यं । केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीशहरे ७ व
हसि वषुषि विशादे वसनं जलदामं । हल हतिभी
ति मिलित यमनामं । केशवधृत हलथररूप जय
जगदीशहरे ८ निंदसि यज्ञविधेररुहः श्रुतिजातं ।
सदय हृदय दर्शित पञ्चजातं । केशव धृत वुथ श
रीर जय जगदीशहरे ९ म्लेच्छति दहनि धने ।

मणो वलि मङ्गल वामन पदनाव नीर जनित जनपा
वन केशव धन वामन मन रूप जय जग दीशहर
रे ५ क्षत्रिय रुथिर मये जगदय गत पापे । स्नापय
सि पयसि प्रामित भवतापे । केशव धन भगुपति
रूप जय जगदीशहरे ६ वितरसि दिक्षरणे दि
गति कमनीये । दशम्वार मीलि वलि रमणी

ग.दी. गी. ते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते । स्नेहान्तरर्षय
ते दशा कृति कृते कृष्णाय नमः ॥ ११ ॥ अष्टपदी ॥
श्रित कमला कुच मंडल धृत कुंडल । कलित ललि
त वनमाल जय जय देवहरे १ दिनमणि मंडल
मंडन भव विंदन सति जन मान सहस्र जय जय
देव हरे २ कालिय विषथर गंजन जन रंजन

कलयसि करवाले । भूमकेतुमिव किमपि करालं केशव
भूत कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १ श्रीजयदेव
कवे रिद मदित मदारं । शृणु सखदं सुभटे भवसा
रं । केशव भूत दश विध रूप जय जगदीशहरे ॥
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मदिभ्रते दैत्य दार
यते बलिं हलयते लवलयं ऊर्वते । पौलस्त्यं जय

ग. हो.
गी.

संदर धृत संदर श्रीमत्त चंद्रचकोर । जयजयदेव हरे
७ श्रीजयदेव कवेरिदे करुते सुदे मंगल सज्जलगी
ते । जय जयदेवहरे ८ अष्टपदी । श्लोक । रामो ह्ला
स भरेण विभ्रमभृता साभीरवाम क्रवा मभ्यर्णपरिर
भ्यतिर्भरमरः प्रेमोपयायायया । साधुत्वददने सथास
यमिति व्याहृत्यगीतस्तुति व्याजाड्डवचुवित

य३ ऊल कमल दिनेश । जय जय देव हरे ३ मधुसर
नरक विनाशन गरुडसन । सर ऊलकेलि निदान
जय जय देव हरे ४ अमल कमल दललोचन भव
लोचन । त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव हरे
५ जनक सताकृतभूषण जित दृषण समर शामि
त दशकंद । जयजय देवहरे ६ अभिनवजल थर

रा. दो.
गी.

मूर्तिमानि वसथौ मग्यो हरिः क्रीडति ८ नित्यात्मंग
वराङ्गजंग कवत क्लेशादिवेशावले प्रलेयलवनेक
यान् सरति श्रीवेद शैलानिलः । किंचस्त्रिग्यरसाल
मौलिमज्जलान्यालोक्य हर्षो दया । उत्तमीलति कुहूः
कुहूरिति कला ताना = पिकानागिरः ॥ १॥ अष्टप
दी ॥ चंदन चर्वित नील कलेवर पीत वसन ।

स्मित मनो हारीहरिः पातवः अनेक नारी परिवेभसे
अम स्फुरन्मनो हारिविलास लालसे मगारि रामा दु
पदशी यत्यसौ सखी समते पुनराह रायिका ७ वि
शेषा मनुरंजनेन जनयत्नानंद मिंदीवर श्रीणीश्या
मलकोमलैरुपनयत्नैर्गौरनंगोत्सवं । स्वच्छंदं व्रजसे
दरीभिरभितः प्रत्यंगमालिगितः शृंगारः सखि

श.टी. सरोजं ३ कपि कपोल तले मिलितालपितं किमपि
गी. श्रुति मूले । चारु चंचुव नितंबवती दयितं पु
लकै रत्नकले ४ केलिकला कतकेनच काचि
द मंयमना जलकले । मंजल वंजल कंजगते
विच कर्ष करेण उकले । करतल ताल तरल बल
या बलिकलित कल स्यन वंशी । रास रसे सह

वनमाली । केलि चलत्तणि ऊंडल मंडित मंड युगस्मि
तशाली १ हरिहरमग्य वधुनिकरे । विलासिनि वि
लसति केलिपरे १ पीनपयो थरभारभरेण हरि परि
रभ्यसगगं । गोप वधरन गायति काविडदे चित पेव
म गगं १ कपिविलास विलोचन विलनजनित म
नोजं । ध्यायति मग्य वधरथिके मधु सुदन वदन

रा. हो
गी.
निजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गता न्यतः क्वचिदपि लता कुं
जे गंजन मधुवत मंडली सखर शिखरे लीना दीना
पुवावररु = सखी १० कंसारि रपि संसार वासना वे
थ श्रवलो राधा माथाय हृदये तत्याज वज्र संद
री ॥ इतस्त तस्मा मनः सत्यं थिका मनंग वाण
वज्रवित्त मानसः कृतानता

नृत्य परा हरिणा सुवती प्रश संसे ६ स्त्रियतिकाम
पि चेंवति कामपि रमयति कामपि रामो पश्यति स
स्मित चारु परा मपरा मनु गच्छति वामो ७ श्रीजय
देव भागात मिद मद्भुत केशव केलि रहस्ये । वेंदा
वन विपिने चरितं वितनोत शुभानि यशस्ये । ८ ।
विहरति वनेराथा साधारण प्राणयेहरी विगलित

रा. दो.
गी.

कटिलअकीण भरेण शोण पद्म मित्रो परि भ्रमता
कुले भ्रमणेनता महे हृदिसंगता मनिशं भृशं रमया
मि किं वनेन सरामिता मिह किंवथा विलयामि ४
तत्त्विवित्त मस्यया हृदयन्तवा कलयामि तत्तवे
यि कतो गतासिनते नते नतयामि ५ दृश्यसे पु
रतो गता गत मेव किंविदयामि । किंपरे वश से

यः सकलित्वं नंदनी तदात्त ऊंजे निषसाद माथवः १२

॥ अष्टपदी ॥ सामियं चलित्वा विलोक्य ह्वते वधू

निचयेन । सापराधतया मयानति वारितानि भयेन

१ हरिहरि हता दहतया गतासा ऊपितेव । किं क

रिष्यति किं वदिष्यति साविरे विरहेण किंयनेन जने

न किंसम किंसवेन गृहेण २ चिंतयामि तदानने

रा.टो.
गी.

तस्या एव स्तुती दृष्टो मनसि ज्ञेयवत्कदादासुग ।

श्रीणी जर्जरितं सत्ता गयिमनो नाद्यायि संपुल्लते

१३ हृदि विलाशता हारीनाय भुजंगमना यक=

कुवलय दल श्रीणी कंदेन सागरल युति= मल

यज रजो नेदंभस प्रिया रहिते मयि प्रहरतहर

श्रोत्यानेग कथाकिमथावसि १४ अष्टपदी ।

अमं परिभ्रमं न ददाति । तस्यैव सपरं कदापि न वे
दशं न करोमि । देहि सुंदरि दर्शने मम मत्तयेन
इतीति । वर्णितं जयदेव केन हरेरिदं प्रवणेन किं
उ विल्व समुद्र संभव रोहिणी रमणेन ६ पाणौ
मा कुरु हत सायक ममं साचाप सारोपय कीला
निर्मित विश्व मूर्धित जना ज्ञानेन किंपौरुषं ।

रा.हो.
गी.

वसति विपिन वितानेत्यजति ललित थाम । लढ
ति थरणि शयने वङ्ग विपलति तवनाम ४ भाग
ति कविजयदेवे विरहि विलसितेन । मनसिरभस
विभवे हरि रुदयत सकृतेन ५ श्लोक पूर्वयत्रस
मेत्वयारति यने रासा दिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेवनि
केज मन्मथ मन्त्र तीर्थे पुनर्मायवः । आयेस्त्वाम

वहति मलय समीरे मदन मयनिथाय स्फुटति कुरु
मानिकरे विरहि हृदय दलनाय १ मखि सीदति तव
विरहे वन माली । दहति शिशिर मयवे रमण मन
करोति । यतति मदन विशिखे विलपति विकतरो
ति २ धनति मथय समूहे अवण मयि दधाति । मन
सि वलित विरहे निशि निशि रुजमय याति ३

रा.टो. गी. ग्याहशो विभ्रमास्तद्वज्रौवज्र सौरभं सव स्रथास्यंदी
गिरौ वक्रिमा। साविवाथरमापुरीति विषया संगे
पिचेस्मानसे तस्यालग्न समाधिहेतु विरह व्याधि क
थेवर्तते। साकृतसितमा कुला कुलगलगलमि
ल मलासिते। भ्रुवह्नी कमलीक दर्शितभुजा मूला
ईदृष्टस्तने। गोपीनान्निभृतन्निरीत्यगमिताकाक्ष

निशं जयत्तपितवै वालाय मंत्रावली भूयस्तत्कवर्जं
भ निर्भरपरी रंभासुते वांछति १ विकरति मुद्रः
श्वासा नाशाः पुरो मङ्गरी दत्ते प्रविशति मुद्रः कुंजे
गुंजे गंजन्मङ्गवर्जं ज्ञतास्यति । रचयति मुद्रः शय्या
मर्या कुलङ्गरीदत्ते मदन कदन ल्लान्तःकान्ते प्रिय
स्तववर्तते ११ तानिस्पर्शं सत्वा नितेव तरला स्त्रि ।

रा-दो-
गी-

सहचरी श्रष्टपदी ॥ ललित लवंगलता परिशी
लन कोमल मलय समीरे । मधुकरनिकरकरंवि
त कोकिल कनित कुंजकुटीरे । विहरति हरि रिह
सरस वसंते नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि
जनस्य उरंते । उत्तमदन मनोरथ पथिक वधूज
न जनित विलापे । अलि कुल संकुल कुसुम समू

५३
शिरं चिंतयन्नेतर्मग्य मनो हरोहरतवः क्लेशतवः
केशवः २ यमना तीर वानीर निर्जनेमंदमास्थितं
प्राह प्रेमभरोद्धान्तं माधवं राधिकासावी । वसंते वा
सेती कसम सज्जमारै रवयवै । अमंती कोतारे व
द्ग विहित क्लान्त शरणं । अमंदं केदर्यज्वरजति
तचिंता कुलतया । बलद्वयार्थार्थसरसमिद मूवे

श.टो.
गी.

रुण कृतज्ञासे । विरहिति कृतन कृत सखाकति
केतिकि दंतदिनाशे ५ मायविधा परिसलललि
तेनव मालति यात सुगंधौ । मुनि मनसा मयि ।
मोहन कारणा तरुणा कारणा वंथ ६ स्फुरदति
मुक्त लता परि रंभाण मुकुलित पुलकित चूते
। हंदावन विधिने परि सर परि गत ।

हनिराकुल वकुल कलापे २ मृगमदसौदमरभसव
शंवद नवदल माल तमाले । युवजव हृदयविदा
राग मनसिज नावरुवि किंशुकजाले । मदनमहरी
पति कनक देउरुवि केसर कुसुम विकामिलित ।
शिली मख पाटल पटल कृतस्मर त्राणविलासे
४ विगलितलंजित जगदवलोकन तरुणक

रा. दो.
गी.

११ उत्तरीलक्ष्मणगंधु लव्यमधुपद्याधुत हृतांक
२ क्रीडत्कोकिल काकली कल कलै रुझीण क
र्णज्वराः नीयंते पथिकैः कथं कथ मपि ध्याताव
थानक्षणा प्राप्ता प्राणा समा समगम रसो ह्लासै रमी
वासराः १२ इरा लोकस्त्रोक स्तन कन वकाशो कल
तिका विकाशः कासारो पवन पवनीयं व्यथ ।

यमुना जल पूते । श्रीजयदेवभरिणते सिद्ध सुदयति ह
रि चरण स्मरति सारं । सरस वसंत समय वन वार्ण
न मन्त्रगत सदत विकारं ८ अष्टयदी ॥ दर विद
लित मल्ली बलि चंचल्यगग प्रकटित पट वार्से
वीसयन्काननानि । इह हि दहति चेत = केतकी
गेथवेधु = प्रसरद समवाण प्राण वज्रंथवाह =

श. हो
गी.

अविरत निपतित मदन शरादिव भवद वनाय वि
शालं । स्वहृदय मर्म करोति सजल नलिनी द
लजालं २ कुसुम विशिख शरतल्य मनल्य विला
स कला कमनीयं । व्रत मिव तव परि रेभ सखा
य करोति कुसुम शयनीयं ॥ ३ ॥ वहतिच गलि
त विलाचन जलधर मानन कमल मदारे । विधु

यति अपि आम्बुद्गेगी रणित दमणीयान मुकुल प्रसू
ति श्रुतानां सखि शिखरिणीये सुखयति । अष्टप
दी ॥ निंदति चंदन मिंड करण मनु विंदति विदम
थीरे ॥ व्याल निलय मिलनेन गरल मिव कलय ।
ति मलय समीरे ॥ ११ ॥ साथव साविरहे तवदीनाम
नसिज विशिखभया दिव भावनया त्वयिलीना

श-दो
गी-

वि कल्या भवेत्त मतीव इदं । विलपति हसति
विषीदति रोदति चंचति मंचति तापं ॥ श्रीनयदे
व भणित सिद्ध मथिकं यदि मनसा नदनीयं । हसि
विरहा कुल बलव युवति सखी वचनं पटनीयं ८
अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ आवासे विपिना यते प्रिय सखी
मालापि जालायते ॥ तापोपि असितेन दा

मिव विकट विधुत्तुद दन्त दलन गलिता मृतथावे
४ विलिखति रङ्गसि ऊरंगम देन भवेत्तम समशर
भूते । प्राणमति मकर मथो विनिधाय करेच शारे न
वहते ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति माथव तव
चरणे पतिताहं । त्वयि विम्वि मयि सपदि स्थयानि
थि रपि कुरुते तन्नदाहं ६ ध्यान लयेन पुर= प ।

श दो
गी-

त पवत सनपम परिणामं । मदत दहन मिव दह
ति सदाहं ३ दिशि दिशि किरति सजल कण जाल
॥ नयन नलिन मिव विगलित नाले ४ नयन विष
य मिव किशलयतलं । कलयति विहित ज्ञताश
नकल्पे ५ त्यजति पाणि तलेन कपोलं । बाल
प्राशन मिव सायमलोले ६ हरिरिति हरि रिति

वरुन ज्वाला कलापायते । सापि त्वद्विरहेण हन्त
हरिणी नृपायते हाकथे । केदर्योपि यमायते विर
चयन् शार्दूल विक्रीडिते अष्टपदी ॥ स्तनविनि १
नि हितमपि हारमुदारं सामनते कृशतनु रिवभा
रं रायिका विरहे तव केशव । शरसम ह्मणमपिम
लयज पंकं पश्यति विषमिव वपुषि सशोकं १ असि

रा. टी. गी. स्यते ताम्यति ध्यायत्तुमति प्रसीलति पतत्तया
ति मूर्च्छत्यपि एतावत्पतन ज्वरेवरतनजीवेन्नकिं
तेरसात्त्वर्वेद्य प्रतिमप्रसीदति ततस्त्यक्तीत्यथा इ
स्तकः १६ कंदर्पज्वरसंज्वरा तरतनोराश्चर्यमस्या
श्चिरं । चेतश्चंदन चंद्रमः कमलिनी चित्तासंताप्य
ति । किंतुत्तांति रसेन शीतलतरंत्वामेक मेवप्रियं

जपति सकामं । विरह विहित मरणो वनिकामे ७
श्रीजय देव भणितं मिति गीतं । सुखयत्त केश
व पद मय नीतं ६ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ सरत्तरे
दैवत वैद्य रुच्य त्वदेग संगे मृतमात्र साध्या । वि
मुक्त बाधां कुरुषेन् राधा मयेंद्र वच्चा दपि दारु
णोसि १५ सारीमो वति सीत्करोति विलपत्यत्क

रा हो- स्वच्छंद व्रजसंदरी जनमन लोक प्रदोषश्चिरं। कंस
यी- यंसन धूमकेतुखतत्वादेवकीनंदनः २५ अथता
गंतमशक्रो विरमनरक्रो लतागदहेदृष्टा। तच्चिरि
नेगोविंदेमनसिज संदेसाखी प्राह ३- संगेष्वाभरणं
करोति वज्रशः पत्रेपिसंचारिणि। प्राप्तेत्वाभ्यरिणो
कते वितनते शय्याचिरंथायति। इत्याकल्य वि

ध्यायेन्ती ररुसिस्थिता कथमपि क्षीणान्तं प्राणिति
२० क्षण मपि विररुः पुराण मेहे नयन निमीलि
तविन्नया नयाने । अस्मिन् कथमसौ रसालशाखा
विर विरहेण विलोक्य पुष्पितामो २८ रायाम
रथ मवारवि मयपसेलोक्य मौलस्यली नेय ।
त्यो विन्नतीत्तरत्नमवनी भारा वतारंतकः ॥

श-दो
गी-

त्वदथर मधुर मधुति पिबेत् १ नाथ हरिसीदतिरा
था वासगृहे । त्वदभि शरण रभसेन वल्लेती पतति
पदानि कियंति चलेती २ विद्वित विशद विष कि
शलय वलया । जीवति परमिह तवरति कलया
३ मङ्गर वल्लोकित मंरुन लीला । मधुरिषु रह
मिति भावन शीला ४ त्वरित मयैति न कथ ।

कल्प तल्प रचना संकल्प लीलाशत । व्याशक्तापि
विनात्वया वरतननेष्टा निशानेष्टानि ३१ विपुल पु
लकपालिः स्फूर्ति सौत्कार मंतर्जित जटिमकाकु
व्याकुले व्याहरंती । तव कि तव विधाया मंदके
दर्पचिन्ता रसजल निधि मग्राध्यानलगा मृगाक्षी
३३ ॥ अष्टपदी ॥ पश्यतिदिशि दिशि रहसि भवंते

राद्ये-
गी-

मी रुहे । आनर्यासिन दृष्टि गोचरमित-सानंद नंदा
स्यदम् । राधाया वचनं तदथग मखानंदोति के गो
पते । गोविंदस्य जयंति सायमतिथि-प्राशस्त्य गर्भा
गिर- ३३ अत्रान्तरेच कुटला कुल वर्त्तमाना संजा
त पातक उव स्फुटलां वनश्री- । वंदावनीतरम ।
दीपय देसुनालैर्दिकसंदरी वदन चंदन विंडु रिं

मभिसारं । हरिरिति वदति साखी मन्त्रवारं ५ श्लिष्य
ति चंदति जलथर कल्यं । हरि रुपगत इति तिमि
र मन्त्रल्ये ६ भवति विलंबिनि विगलित लज्जा । वि
लयति रोदति वासक सजा ७ श्रीजय देव वकवेरि
दम्बदितं । रसिक जनननता मयि सुदितं ८ श्लो
क ॥ किंविश्राम्यसि कस भोगि भवने भोलीर भू

रादे
गी

जगत् प्राण विधाय मायवे प्रयोमम प्राण ह्यो भवि
ष्यति ३७ वायो विधेहि मलयानिलपेच वाण प्राणा
न गस्साणन गस्सुनया अयिषे । किंते कृतोत
भविति त्वमया नरेण । रेगाति सिच मम शाम्पत
देहदाहः ३८ । अष्टादी । कथित समयेपि हरि
रह हनययौवने । मम विफल मिद ममल

३३४ प्रसरति शशायर विवे विरहित विलेवेवमा
यवे । विभ्रया विरचित विविध विलापेसा परिता
पंचकाशेचैः ३५ विरह पाण्डु मयारि मवावजय
तिरयनपि वेदनो विभ्रतीवत्तनोति मनोभवः
स्वहृदये हृदये मदन व्यथो ३६ मनो भवानेदनवे
दनातिल प्रसीदरे दतिण मेव वामनो ॥ क्षणो

रादे
गी

पिकासिनी मभिस्तः किंवा कलाकेलिभिर्वहोवेध
भिरन्य कारिणि वनाभ्यर्णी किञ्चुद्राम्यति कोतः ह्ला
तः मना मना गपि पथि प्रस्थात्मे वात्तमः सेके
नी कृत मेज वेज ललता ऊजे पियन्नायातः ४- प्रया
गतो माथवमेतरेण सखी मिये वीत्य विषादमूको
विशेक माना रमिते कयापि जनार्दने दृष्टव देतदा

जयदेव कवि भारती । वसन्त हृदि प्रवति रिव कोम
ल कलावती द । अष्टपदी । श्लोक । ताम प्राप म
यि स्वये वर परो लीरो दतीरो दरे । शंके सेद रि काल
कृत मपि वक्तु को मयानी पतिः । उभे एव कथा
भिर न्य मनसो विक्षिप्य वक्षो चले । राधायास्तन
कोर को परि मिलने शो हरिः पातवः । तत्किं काम

रादे
गी

रित रशान जचन गति लोला ४ दयित विलोकितल
जित हसिता । वद्ध विथ कृजित रतिरस रसिता ५
विषल पुलक पृष्ठवे पृष्ठभेगा । ससित निमीलि
न विक सदनेगा ६ अमजल कणाभर सभगशरी
र । परिपति तोरसि रतिरणाथीरा ७ श्रीजयदेव
भणित हरिरसितम् । कलिकलषे जनयत परिषा

३४१ अष्टपदी । सार समरोचन विरचितवेषा गलि
त कसमदर विललितकेशा १ कापि मधुरिप्रणा
विल सति सुवति शयिक प्रणा । हरि परिरेभणा व
लित विकाश । कुच कलशो परि तरलित हारा २
विचल दल कललिता ननचेद्रा । नदथर पानरभ
सकत तेद्रा ३ चेचल केडल ललित कपोला । सख

रा-दे-
गौ

चने ऊच उग गगने स्था मद रुचि रूषिते । मणीस
रुममले नारक पटले नावपद शशि भूषिते ३ जित
विम शकले मृदु भज अगले करतल नलिनीदले-
मर्कत वलय मथकर निचये वितरति हिम शीत
ले धरति गटह जचने विपल पचने मनसि ज कनका
सने । मणीमय दशने नोरणा हसने विकरति

मिने द अष्टपदी । सोरहा ॥ सखदित मदने रमणी
बदने छेवन चलितार्थरे । मगमद तिलके लिख
नि सफलके मगमिद रजनीकोरे । रसने यमनाप
लिन वने विजय मगारि स्थिता । चवचय रुचिरे र
चयति चिकरे तरलित तरुणानने ऊरुवक ऊरु
मेवला सावमेरति पति मगकानने २ चटयति स

रादे-
गी-

इति कवित्पजयदेवके द। अष्टपदी॥ अनिल
तरु जल यत्ननेन । तपति नसा किसलय
शयनेन १ सखिया रमिता वनमालिका । विक
सित सरसिजललित सखिन । स्फटति न सामन
सिज विशिखित २ अमृतमधुरतरु रुद्र वचनेन ।
ज्वलति न सामलयज पर्वनेन ३ स्थलजल रुद्र

कृतवासने ५ चरण कियलये कमल निलयेन ।
खमणि गण पूजिते । वहिरप वरणे यावक भरणे
जनयति हृदयो जिते ६ रमयति स्वरशे कामणि
स्वरशे खल हलथर सोदरे । किमफल मवसे चि
रमिह विरम म्वद सखि विट पोदरे ७ इह सभगा
ने मधुरिष पदसेवके । कलि अविचिंते नवसत

शदे
गी

इति वशिष्ठस्य मनेन द अष्टपदी । श्लोक ॥ नाया
नः सावि निर्दयो यदि शतस्त्रहति किं हयसे ॥
सच्छेदे वद्ध वलभः सवसने किं न चने हयसे ॥ य
शपाय प्रिय सेगमाय दयितव्या कृष्णमागोयरी ।
रुक्मिणी भगवति वस्तु दिदे चेत्तः स्वयेयास्यति
निभत्त निजेन गदहे गतया विशिष्टसिनिनीय

४२

२९ २५

रुचिकरचरणेन । लहति न साहिसकर किरणेन
४ सजल जलद समदय रुचिरेण । दहति न साह
दि विरह भरेण ५ कनक निकष रुचि शुचि वव
नेन । असितित सा परिजन हसितेन ६ सकलभु
वन जनक नरुणेन । बहति न सा रुज मतिकरु
णेन ७ श्रीजयदेव भणित वचनेन । प्रविशति

रा-दे-
गी-

धाने कृतपरिरेभाण चैवनया परिभ्य कृताथरणे
इ अलसनिमीलितलोचनया अलकावलेललितक
पोले। अमजलशकलकलेवर यावरमदनमदाद
निलोले। कोकिलकलखकृजितया जितमन सि
जतेच विचारे। अथ कसमा कल केतलया नखलि
खित चनलनभारम् ५॥ चरण रणिन मणि

वसन्ते । चकित विलोकित सकल दिशारति रभस व
शेन हसन्ते १ सखिरे केशि मदन मदारे । रमयमया
सर मदन मनोरथ आवितया सविकारे । प्रथम स
मायाम लजितया पदचादयाने रत्नकुले । एत मथ
रसित आवितया शिथिली कृत जवन उकुले २
किसलय शयन निवे शितया विर मरसिममै वश

रादे
गी

सलीले । ८ । अष्टपदी । श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल गोकु
ला वनवशा उहृत् गोवर्द्धने । विश्रुतस्तव सेदरी
भि रायिका नेदाचिरे वं विनः । दर्पेणैव तदपि नाथ
तदी सिंह मद्रो कितो । वाङ्मोपतनो स्तनोत्तमव
तः श्रेयोसिके सहिषः ४३ अथ कथमपि यामिनी वि
नीयस्तर शरज्जरितापि सा प्रभाति । अनुनयवच

नूपुरया परिष्कृतं सूरतं विनाते । सात्वविशेषतः
मेखलया सकचग्रहं चेतनं दानम् ६ इति सात्वसमय
वसालं सया दरं मज्जलितं वदन् मरोजे । निस्सहति
पतितं तच्च लतया मयुस्सदनं मुदितं मनोजे ७ श्री
जयदेव भणितं मिदं मतिं शयं मयु रिष्टं निधुवनं
शीले । सात्वसुक्तेदितराधिकया कथितं वित्तनोत्त

गङ्गा
गी

वन विरचित नीलमयूषे दशानवसन मरुणो नवह
स तनोति ननवरु रूपे २ वप्ररु हयति नवसरसे
गयव रुव खरुत्तरेखे । मरुक्त शकल कलित क
ल यौतलिषेखरति जयलेखे ३ चरण कमल गल
दलक कसित सिद्धे नव हृदय मदारे । दर्शयतीव
वहि मर्दन डम नव किसलय परिवारे । दशनपदे

ने वदेते मये प्रणत मपि प्रिय माह साभ्यस्ये ४४
प्रष्टवती ॥ रजनि जनितं गुरु जागरणं कषायितं
मलसन्निभं । वहति नयनं मनसा मित्रस्य
मदित रसाभिनिवेशे । याहि माथ वयाहि केशव
मावथ कैतववादे । तामन सर सर सीरुह लोचन
यानव हरति विषादे । कजलमलिन विलोचनं

रादे
गी

लघुरिते ७ श्रीजयदेव भणितरतिवेचित खेदित सु
वति विलापे। श्रुत सदासुखे विबुधा विबुधाल
यतोपि। ८। अष्टपदी। श्लोक ॥ नवेदे पश्यन्ताः प्र
सर दनरागवहिरिव। प्रियापादालक दुरित
मरुणा योति हृदये। नमाय प्रख्यात प्रणय भ
रभगेन कितवत्तदालोकः शोका दपि किम

भवदयरागतममजनयतिचेतसि विदे । कथयति
कथमथनापि मया सह तव वपरे नदभेदे ५ वहि
रिव मलिनं तरेतरेतव क्लृप्तमनोपि भविष्यति नृ
ने । कथमथ वेचयसे जन मनयातम समशरज्वर
हने ६ भ्रमति भवानवला कवलाय वनेषु किम
त्र विवित्रे प्रथयति एतति कैवलय वय निर्दयवा

रादे
गी

रित्यवाच । परि हरकृता नेक शोको नया सतते च
न सतव जचनया क्रोते परानवकाशिति विशति
विततो रत्यो यत्यो नकोपि समोतरे प्रणयिनि य
वी रेभारेभे वियेहि वियेयतामद मग्ये वियेहिम
यि निर्देय देन देश दोर्वलि वेथनि विडस्तन पीड
नानि चेडित्तमेव मद मेचय पेचवाण चोडात्तको

पिलजो जनयति ४५ पद्मापयो थरतदी परिरम्भ
लग्नाशमीर मरितमरो मधुसूदनस्य । व्यक्तान्
राया मितविलद नेगाविद स्वदोबुद्ध मन परयत्
प्रियम् ४६ अथान्तरे मस्या गेष वशा मसी म
निः चासनिस्सह मांवी सभावी मपेत्प सचीड
मीलित सावी वदनेदिनाते सानेद गङ्गदपदे हरि

स-दे-
गी-

निशायस्त्रिगुणसुखे प्रयोयसुखस्थितः। अष्टपदी।
वदसि यदि किंचिदपि दत्तकृतिर्कोसदी हरति द
वति मिदमति चोरम्। स्फुरदथरसीथवेतव वद
नचेदमा शेचयति लोचनचकोरे। प्रियेचारुशी
ले मेचयति मानमतिदाने। सपदिमदत्तानलोदह
ति मममानसंदेहिमात्रकमलमथपाने। सत्यमेवा

उदलना दसवः प्रयोत्त ॥ शशि सखितव भाति मे
गुरभयवजन मोह कराल कोल सखी तड दिति
भय भेजनाय सनात्तदथरसीध सखेव सिद्धिमेवः
व्यययति दृष्टामौने तत्त्वप्रपेचय पेचमेतकृणा
मधुरालापे स्नापे विनोदय दृष्टिभिः समसखि
विमाली भावतान्ता वहि मेचन मेचमो स्वय म

श-दे-
गी

ति को कनद रूपे । ऊसम शरवाणा भावेन यदि रेज
यसि कल सिदमेत दन रूपे ४ सुखत ऊच ऊभयो
ह परिमणि मेजरी रेजयत तव हृदय देशे । रसत
दसनापि तवचन जचन मेडले घोषयत मन्मथ
निदेशे ५ स्थल कमल गेज मे मम हृदय रेजनेज
जितरित रेग परभागे । भणमहणा कणि कद

सि यदि सदति मयि कोपिनी देहि त्वर न त्वर शर
चाते । चटय भज वेधने जनय रद त्विदने येन वा
भवति सखजाते २ त्वमसि मम भूषणे त्वमसि
मम जीवने त्वमसि मम जलधि रत्ने । भवतु भव
तीह मपि सतत मन रोपिने तत्र मम हृदयमति
यन्त्रे ३ नीलनलिना भमपि तत्त्वितव लोचने थाप्य

गं दे
गी

ते । श्लोक ॥ वंद्यक कतिवोथवोय मथशः स्ति
मथ मथक क्वविः गोडे चेडिचकास्ति नीलनलिन
श्रीमोचने लोचने । नासान्वेति निल प्रसून पद
वीकेदाभदेति प्रिये प्रायस्सन्नाखसेवया विजयते
विषेसपष्ठाप्रथः ५ । दृशौतवमदालसेवदनमिंडु
संदीपने गतिर्जन मनोरमादिजितरंभमूरुहये

वाणि चरणा द्वये सरस लसद ललककयागे ६ सारग
दल खिडने मम शिरसि मेउने देखि पदपलवमुदा
रे । ज्वलति मयि सराणो मदन कदना नलो हवत
नडपाहित विकारे ७ इति वदल चाट पट चारुस
र वैराणो राधिका मयि बचन जाते । जयति पद्मा
वती रमा जयदेव कवि भावनी भाणन मति शे

रा-दे-
गी-

मात्मा ऊर्ध्वं करोत कवरी भारोपि भारोद्यमे । सो
हेता च दयेव तत्त्वितनते विवाथरोरागवान् सह
तः स्तन मेरुस्त स्तवकथे प्राणैर्मम श्रीरुति ५४
सातिनी मान विधेमदसो जयति सो प्रते । म्हुवे
ए समस्तः श्रीमङ्गोपालकधनिः ५५ तामय
मन्मथ विन्नो रतिरतिरस भिन्नो विषाद सम्य

रतिस्तव कलावती रुचिरचित्ररेवि अवा वरोवि
२५ योवने वरुसितानि दृष्टी गता ५२ भूपलवे य
नर योगातरेगितानि वाणाशुणाः अवण पालि रि
तिस्सरेण । तस्या मनेया जय जगम देवताया म
खाणि निर्जित जगति किमपितानि । ५३ । भूवा
पे निरुता कटाक्ष विषाखो निर्मीत मर्म व्यथेणा

रा-दे-
गी-

संयति वहति मृदु पवने किम परमधिक सखे सखि
भवते । मायवे माऊरु मानिनि मान मये । ताल फ
ला दपि शुक्रमति सरसे । किम विफली कुरुषे क
वकलशे २ कलिल कथित मिद मन्त्र पद मचिरे । सा
परिहरी इय मति शय कचिरे । किमिति विषीदसि
हो दिशि विकला । वहसति शुद्धति सभा नव वि

नो । अनुचितं हरिचरितो कलहान्नरितामवा
चरुः सांख्य ५६ स्त्रिये यत्परुषा सियत्पणामति
स्तथासि यद्यपिणि देवस्यासि यदन्मते विम्व
नो यातासि तस्मिन्त्रिये । तद्यत्ते विपरीतकारिणि
तव श्रीखंड चर्चाविषे शीतो शुक्लपनोहिमे ज्ञत व
हः क्रीडा मदीयातनाः ५७ ॥ अष्टपदी ॥ हरिवभि

श.दे
गी

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कला ५ जनयसि मनसि किमिति यरु विदे । मया
मम वचन मनीहित मेदे ५ हरिरुपयात्र वद्धमथ
दे किमिति करोषि हृदय मति विश्वे ६ सजल न
लिन दल शीतल शयने । हरिमवलोकय सफल
य नयने ७ श्रीजयदेव भाणत मति ललिते । स्वावय
नरसिक जने हरि चरिते ८ ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥

रा-दे-
गी-

नयेत प्रीणा यित्वा स्यादौ गतवति कृतवेषे कश
वे जेज शयो रचित रुचिर भूषो दृष्टिमोषे प्रदोषे क
रति निरवसादो कापि राथोजगाद दसामो द्रव्य
निवर्त्यति प्रियकथो प्रनेग मालिगनै । प्रीति यास्य
निरेष्यते साविस्मयान्मेति विना कुलः । सन्तोषश्च
निवेपते पुलकय त्यानेदति स्त्रियति । प्रत्यङ्गव

इसलक्षणो कसो विचारिणी सोदिता पुनरपि मनो
कसे कामे करीति कसे विधि ५५ श्रीति सस्तनतो
इहि ऊबलया पीडित साहं यो राधापीन ययोयव
सरा कलकेभेन सेभेदवान् । यत्र स्थिति मील
नि लणामय तिते द्विपे तत्तलणान् । केसस्यालम
भूजितमिति व्यामोह कोला इलः ६-सकविमन

रा-दे-
गी-

दन सेशमा दवरतारिभादव शीतयोः । अत्यर्थे गत
योर्धमात्किलितयोः संभाषणोर्जीततो । देवयोवि
ह कोन कोन तमसि व्रीडाविमिश्रोतसः ६४ अ
त्पाति तिपदेजने अवणयो स्तापिक्क शुक्काली ।
मूर्द्धि शणम सरोजदास कुचयोः कस्तूरिकापत्र
कम ॥ शूर्जीतामभि सारसन्तर हृदो विषडुति

निमृष्टेति स्थिरतमः संजे निजेजेप्रियः ६२ त्वदामे
नसमे समय मथना तिरमोच्चरस्तेगामो । गोविंदस्य
मनोरथेन च समं प्राप्तं तसः सादृतो । कोकानो करु
णा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभार्याना । तत्त्वग्येति
फले विलंबनमसौ रम्योभि सारदशाः ६३ प्राप्तेषा
द्व च वचना द्धनलो लेखा द्धनस्वान्तजः प्रोक्षेया

रा.दे.
गी.

केलि शयन मनयाते १ मये मथ मयन मनयातम
नसरयाथिके । चतजचनस्तनभारभरे दरमस्यरव
याविहारे । सावरितमणि मेजरी मयेहि विथेहिम
शालविकारे १ मृगा रमणीय तरेतरुणी जनमोह
नमथरिषावे । कसमशासन शासन वेदिनिपि
कनिकरेभजभावे १ अनिलतवल किसलय निक

ऊंजेसति । धोतनील निचोल चारु सन्धे पत्रेग
मालिगते ६५ काश्यादगौरवपुष्पा मभिसारिकाणा
मावहरेत्त मभितो रुचिमञ्जरीभिः । एतत्तमालद
लनील तमेत मिश्रे तत्तेमहेम निकषो पल्लोत
नोति ६६ अष्टपदी ॥ विरचित चाट वचनरचनेच
रणोरचित प्रणिपते । संप्रति मञ्जलवेज्जलसीमति

रादे-
गी-

समस्तसुभगासखिनसखीसखलेंवकरेणसली
लेंचलवल्यकणितैरखोथयहरिमणिनिजरा
तिशीले० श्रीजयदेवभाणिमधरीकतहारमया
सितवामे। हरिवितितितमनसामयितिएतकेद
तहीमविशमेद॥ अष्टपदी॥ श्लोक॥ सामानद्र
स्यतिवस्यतिप्रियकष्येप्रमेगमालिगनै॥ श्री

रेण करेण लता निजरेवे । प्रेण मित कर भोरु
करेणि गति प्रति मंच विलेवे ४ स्फुरित मने गत
रेण चशा दिव स्फुरित हरि परिरेमे । एक मनो हरहा
द विमल जल थार ममं ऊच ऊये ५ अथिगत म
खिल साखी भिरि देतव वष रपि रति राण सजे । चे
दि वणीत दशना रव दिदिम मयि सरस मलजे ६

रा-दे-
गी

वेनमाली। गोपीपीन धयोथर मर्दन चैवल कश्य
गशाली। नामसमेते कृतसेकेते वादयते मउवेण
वडे मन्वते तवते ननु संगत पवन चलित मपिरेण २
पतति पतत्रे विचलित पत्रे शे कित्त भवड प्रयानम्
रचयति शयने सच कित्त नयने पश्यति तव पेयासे
इमुखर मथीरे त्यजे जीरे रिष सिव कलि सुलोने-

नियामासि वेद्यमि शक्ति समाधानेति चित्ताकृतः
सत्ताः शक्ति वेद्यने प्रलक्षय त्पानेदति स्थिति।
प्रपञ्चति मूर्च्छति स्थिरतमः संजेति संजे प्रियः ६६
अथपदी ॥ रति सत्ता शोरे मत मभिसारे मदन मनो
हृदयेषे । निजकृ निते मि नित्या मन विलेखन मनु
सदने हृदयेषे ॥ यीव समीरे यम नानीरे वसति वने

रा-दे-
गी-

याति विरामे। ऊरु समवचने सत्वरचने स्वरमधुरि
प्रकामे० श्रीजयदेवकृतश्रीसेवेभातिपरमरम
णीये। प्रसदित हृदये हृदिमपि हृदये नमत सकृत
कमनीयेद। अष्टपदी। श्लोक। सभयचकिते वित्तसे
नी-दृशौ निमिरपि प्रतिरुतमुद्र-स्थित मन्द
पदाति वित्तनेनी कथमपिरहः आत्मा मेवैरनेयैत

वल्गुसावि कजे सनि मिरे पेजे श्रीलय नील निचोले

४ उरसि सगरे रुपाहित हारे च नर व नरल वलाके ।

नदि दिव गीतेरति विचरीते राजसि सक्त विपाके ५

विगलित वसने परिहृत रशने छटय जचने मणि

थाने किमलय शयने पेकज नयने निधि सिवर्षे

निथाने ६ हरि अभिमाती रज निरिथानी मिय मणि

गा-दे-
गी-

ये साथ व समीप मिह नव भवद शोकदल शयन सा
रे विलस ऊव कलश नरल हारे २ कसम च यरचि
न अविवास गेहे । विलस ऊसम सुकमार देहे ३
चल मलय वन पवन सरभिशीते । विलस रतिव
लित ललित गीते ४ वितन वड वलित व पलव च
ने । विलस विरमल स पीत जवने ५ मधु सदित

रंगिभिः समीवि सभगः सत्ताम्यः नृपैत्रकनार्य
तो ७ हारावली तरल कोवन कोविदाम मेजीरके
कण मणि फति दीपितस्य हारे तिऊंज निलयस्य
हविं निरीत्य व्रीडावती मथ सखी निजगादरायो
दद ॥ अष्टपदी ॥ मेजतर केजतल केलिसद
ने विलस रति रभ सहसित वदने १ अविश श

श-दे-
गी-

दीवरे । स्वकेदे मकरेद सेदर गालत्तेदा किनी मेउरे
श्रीगोविंद पदार विंदम शुभस्केथाय वेदामहे ६५
अहमिह निवसा मियादिशथा मनुनय महचने
वानयेथाः । इति मथुरिषणा सखीतिशुक्ता स्वय
मिदमेव पुनर्जगादशथो ७- त्वोचितेन चिरे वहे
नय मति श्रोतो भूशेतापित्रः । केदोर्पेण चपान्न

मधुपञ्चकलितरावे विलस मदनरस सरस भा
वे ६ मधुरतरपिक निकरति नदसावे । विलस
दशान रुचिरुचिर शिखरे ० विस्तिपञ्चावनी सव
समाजे । भातिजयदेव कविराजराजे ६ अष्टप
दी ॥ श्लोक ॥ सान्द्रा नंद प्रदरादिदि विषहेदे
रमदादरा दानत्रै मज्जते नील मणिभिः सदृशीते

शदे-
गी-

तयोः । तदानीं राधायाः प्रियतम समा लोकसम
ये । पणान् खेदोव प्रसरयितुं हर्षीकृतिकरः अ
भजेत्यास्तन्योते कृतकपटकशङ्कति विहितः ॥
मित्तयाते गेहाहृदिरवहिताली परिजने । प्रिया
स्वपशेषाः सरस्वती समाकृत सभगे । सलजाया
लजावयामदिवहरेष्टशः ॥ ५४ ॥ अष्टपदी ॥

मिच्छति सथा संवाय विनायरे । अस्मिन्के तदलेकक
तणामिह भूतेषु लक्ष्मीलव । कीर्तेदास उवाच मे
वित्तपदो भोजे कृतः संश्रमः ॥ साससाधससा ने
द गोविंदे लोललोचना सिंजान मेज मेजीरे अवि
वेश निवेशने ॥ अति क्रम्या पादो अवगा पयप
र्यंत गमन प्रवासे नैवाक्षणे स्तरल तरनारम्यति

रादे-
गी

शे २ श्यामलमण्डलकलेवरमेडलमधिगतगौर
उकलेनीलनलितसिवपीतपरागपटलभरवत्
यित्तमूले ३ तरलद्वयचलचलनमनोहरवदन
अतिनयनियोगे। सुटकमलोदरविलितखेजनय
गणिवशरदिनयोगे ४ वदनकमलपरिशीलनमिति
तमिहिरसमकेडलशोभे। सितरुचिकसमसख

याथावदन विलोकन विकसित विविध विकार वि
भेदो । जलनिधि निव विधु मेडल दर्शन तरलित
तेशा तरेयो १ हरि मेकर सेचिर मभिलखित वि ।
ल्लासे । सादर्श शुरु हर्ष वशे वद वदन मनेग विका
से । हारममल तरतार मरसि दधते पविलेय विह
दे । स्फुटतर फेन कदेव करे वित मिव यमना जल

स-दे-
गी-

मणभावे। प्रणमत हृदिविनिधाय हरिं सविंश क
तो दय सारे। द॥ प्रणदी॥ स्त्रोक॥ गतवति सखी
वेदे मेदत्रपाभर निर्भर सार पर वशाकृत स्फीतस्मि
तस्त्रापिता ययाम्। सरस मलसे दृष्टा दृष्टा मज्जन्ते
व पलव प्रसर शयने तित्तिमात्मी मवाव हरिः प्रि
याम्। किशलय शयने तले ऊरु कामिति चरण

लसिताथरपलव कृत रति लोभे ५ साशिकिराण
हुयिते दरजलथर सेदर सकसम केशे तिमिरो
दित विभु मेडल निर्मल मलयज तिलक विवेशे ६
विषल पलक भरदेत रिते रति केलिकला भिरयी
रे। मणिगण किरण समरु समज्जल भूषण सुभरा
शरीरे ७ श्रीजयदेव भणित दिभव दिशणी कृत भू

रा-दे-
गी

इमिवापनयामिपयोधरोयक मरसिउकले ३
प्रियपरिरेभणा रमसवलित मिव पुलकित मनि
उरवापे । मधुरसिऊव कलशे विनिवेशय शोष
यमनसिजनापे ४ अथरसथारस मपनय भासि
तिजीवय मृत मिवदासे । नयिवितिहित मृतसे
विरहानल दग्ध वपुष मविलासे ५ शशिसावि

कमल विनिवेशे । तवपदपल्लववैराग्यभवमिदं
मनभवतस्त्वेवम् । क्षणमथना नाशयणमनरा
तमनसरराधिके । ॐ । करकमलेन करोति चर
णमस्तमागामितासि विहरे । क्षणमप्यक्रुशय
नोपरमासिव नृपमनरातिशूरे २ वदनसुधाति
शियालितमस्तमिव रचय वचनमनकूले । विर

रा.दे.
गी

नोरमरतिरसभावविनोदं द्रष्टव्यम् ॥ श्लोकः ॥
प्रहृष्टः पुलको जरेण निविडा स्नेहे निर्मेषेण च
क्रीडकृतविलोकितेथरसथापाने कथानर्मभिः
आनेदाभिगमने मन्मथकलाबुद्धेऽपि यस्मिन् न भू-
उद्धतः सतयोर्विभूवसरता रेभः प्रिये भावकः
७६ मीलहृष्टिमिलकपोलपलकसीत्कारयागव

सुखस्य मणि रशना यथा मनःशान्तिं केतुनितादम्-
कृतिप्रयत्ने पिकरुत मम शमय विरादवसादे द
मामनि विफल रुषा विफलीकृत मवलोकितद
धनेदे । मीलनिलजित मिवनयने तव विरमवि
स्जयति विदम् ७ श्रीजयदेव कवेरिदमन पदनि
गदित मश्रुतिप्रमोदम् । जनयन्न शक्ति जनेषु

रा-दे-
गी

मयि तस्मि मायत दहो कामस्य वा मायति ७८ वा
गोके रतिकेति संकासराणा रेधानया साहस प्राये
कोतजयाय किंचिउपरि प्रायेभियत्सेभ्रमोतिसेदा
जचनस्य ली शिथिलितो दोर्वलि रुक्केपिते वत्तो
लीलिते मतिपौरुषरसः स्त्रीणां कतः सिध्यति ७९ त
स्याः पादलपाणिजो कित्तमरो तिश्च कषाये दृशो

यादव्यक्ता कलकेलि काकुविक सदेना अथौ ताथरे
यसोत्ताम पयोथरे भृशपरिषेगात् करेगी दृष्टो ।
हर्षोत्कर्ष विमल निःसहस्रनो र्यसोथयत्मानने ७७
दोभ्यो सेयमितः पयोथरभरेणा पीडितः पाणिजै
राविदोदशनैः हताथरपदः शोणी तदे नाहतः हस्ते
नानमितः कचेथर सप्रस्येदेन सेमोहितः कातः का

रादे-
गी

दद्यान्नेदन् गोविन्दे द्रष्टुं प्रह्लादी। ऊरुयुग्मेदन् वे
दन् शिशिर तरेण करेण पयोधरे। स्यादपत्रक
नम्रमन्यो भव मेगलकलशसहोदरे। तिजगादसा
युग्मेदन्ने क्रीडति हृदयानेदन्ने। द्यौर्वेव न लेखितक
अलम्बलये प्रियलोचने अति कुलगजनमजनके
स्ति नायक मोचने नयन करेण तरेण विका मिति

मतिर्हृत्तो यरशोष्मा विल्लित्ता स्वस्तस्वजो मर्ह
जाः कोवीरामदरस्योचलमिति प्रातर्निवाते दशो
देभिः कामशैरस्तदङ्गतमभ्युत्पन्नमनः कीलिते दृष्ट
यकोतेरति श्रुतमपि मेङ्गे वोक्त्या निजगादतिगवा
थायथा स्वाधीन भर्तृका द। इति मनसा विगदेते
स्वरतोते सानितोत वित्रो गीराया जगादसादर मि

रा-दे-
गी

नम रुचिरे विकारे जस मातदमानस जयस चामरे-
वति गालिते ललिते असमा निशि खेदि शिवि डक
जामरे ६ सरस चने जचने ममशेवर दारणा जेदये।
मतिरशाना वसना धराणाति प्रभाशय वास्य सेद
दे ७ श्रीजयदेव वचसि जयदे सदये हृदये जरु मेउने-
हरि चरणामरण दत केत कलिकल वज्र खेदने ८

दसकरे प्रतिमंडले । मनसिज पाश विलासकरे ॥
भवेष्ट निवेशय केदुले ३ भुमर चये रचयेत्तु अपारि
चिरे सचिरे ममसक्तवि । जितकमले विमले परिक
ल्पय नर्मजनकमल केसवि ४ सदा मदरमललि
ने ललिते करुतिलकमलिक रजनीकरे । विहित
कलेक कलेकमलानन विप्रमित प्रमशीकरे ५

गृहे
गी

यत्नयो राथाय राथानने स्वैरं स्वर सखोवजोस्वर ज
रादानेदायनेदात्मजः ८५ पर्येकी कृतनागनाथ
कफणा श्रेणी मणीनोराणे सेकोज प्रति विव सेव
लभया विश्वदिभ प्रक्रियो । पादोभोरुह थारि वारि
यि सता मत्तां दिहत्तः शनैः । कायवृह मिवाचरे
नपविती भूतो हरे पातवः ८६ तिर्यक्ते ह विलो

श्लोक । वचय जचयोः एवे चित्रे ऊरुष कपोल योर्ध्व
दय जचने कोची मेच सजा कवरी भरे । कलय वल
य अणी पाणो पदे ऊरु नूपय विनि निगदितः श्री
तः श्रीतो वरो पितया करोत् दध प्रातर्नील निचोल
मयुज सरः सेतीत पीतो शुके रायाया अकिने विलो
दय इति सिखरे साखी मेरुले । श्रीदावेचल मेचलेन

रा-दे-
गी-

रसे शरीरमिर विहित विलासे । सम्यति मनो मम क
न परिहासे चेष्टकचारु मयूर शिखेडक मेडल व
लयित केशे । प्रचर प्रदेर यनर नरे जित मेडर म
दित सर्वेशे २ गोप कदेव नितेव वनी सात चेवन
लेवित लोभे । वेध जीव मथरा यर पलव मल सि
तस्मित शोभे ३ दिप्रल प्रलक भज पलव वलयि

नमो लितरलोते सस्यवेषो हरे । कीर्तिस्थावकता
वधानललनालनेगा मेलनिताः प्रेम्णा केदलिताः
सुखयमधुरेयाथा सुविदौ सुधा । शारेवो मधुसूद
नश्च ददन्ते मे कदातो मेवः ८७ ॥ अष्टपदी ॥
संचरदथरसुधा मधुरधनिमविरित मोहनवशे-
चलित द्योचल चंचल मौलिकपोल विलोलवसंते-

रा-दे-
गी

विशदकदेव जले मिलिते कलिकलसमये शमये
ने-सामपि किमपि नरेण दनेण दशा मनसा रमये
ने ७ श्रीजयदेव भणित मति सैदर मोहन मधुरि
प्रहये । हरिचरण स्मरणे प्रति सैप्रति प्रणवना
मनरूपम् ॥८॥ श्लोक॥ हस्त खल विलास
वेशमन्त्रज भूवलि महलवी वेदोत्सा ॥

नवलवयवति सहे । करवरणोरसि मणि गणभू
वा किरण विभिन्नत मिसे ४ जलद पदल चल
दिउ विरिंदक वेदन विउललादे । पीन पयो यत्
परि सर मर्दन निर्देय हृदय कषाटे ५ मणि मय
मकर मनोहर ऊंड मेरित गोडु सदादे । पीत वसन
मनगात मनि मनज सरा सर वर परिवारम् ६

सुदे-
गी

धेसः केसरियो व्योहय तवो श्रेयोसि वेशीरवः ६५
यज्ञोथर्व कलास कौशल मन थानेव यदैलवे य
तु म्देगार विवेक तत मपियत्कावेष लीलायिते
तत्सर्वे जयदेव पेडित कवेः कसैकतानात्मनः । सा
मंदाः परिशोथयेत मपियः श्रीगीत गोविदतः
६- साधी साधीक चिन्तान भवति भवतः शर्कैक

विद्योतवीरिते मतिस्वेदरीगेदृष्टाले । मासदी
ह्य विलजितस्मित स्रथा स्रथानने कानने । गो
विदे व्रज संदरी गाणवतं पश्यामि दृष्ट्यामिव दद
अंतर्भोजन मौलि ह्रीन चलन्मेदार विसेसनः
स्रथ्या कर्षणा दृष्टिर्दृष्ट्याममहा मेत्रे ऊदेगी दृष्टो ।
दृष्ट्यामव हयमान दिविष उवीरुः । वापदास ॥

रादे-
गी

चक्रवर्ती श्रीवासदेव रति केलि कथा समेत मेते क
रोति जयदेव कविः प्रबंधे ३ यदि हरि स्मरणे सरसे म
नोपदि विलास कलास ऊत हले । मथुरा कोमल को
त पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचः प
लव यत्नमा पतिथरः संदर्भ अहि गिरो ॥ जानी
ते जयदेव एव शरणः साव्यो डरुड डतेः । श्रेया

अथ राग देवशाख गीत गोविंदपरिच्छेदमाह ॥

ताल। ॥ ^२सै ^३रे ^२म ^२ग ^२म ^२पै ^२य ^२पै ^२ग ^३रे ^२सै ^१नि ^१य ^१नि ^२सै मै चै मै डर मवर वन भवः श्यामास्तमा

^२रे ^२सै ^२म ^२य ^२नि ^३सै ^२रे ^३सै ^२नि ^२य ^२पै ^२म ^१गै ^२म ^२ग ^३रे ^२सै लडु मै नक्त भीरु यत्न मै वत दिमे राये गृह प्रपय

^२सै ^३रे ^२ग ^२म ^२पै ^२य ^२नि ^२य ^२पै ^२म ^२गै ^२मै ^३रे ^२सै ^२मै इत्ये न दति देशत अलितयोः प्रत्यध ऊज डुम राथा

^२य ^२नि ^३सै ^३रे ^३सै ^२नि ^२य ^२पै ^२मै ^२गै ^३रे ^२सै माय वयो जयेति यमना कूलरहः कलयः १ वादे

वता चरित विवित चित सस्या पस्या वती चरण चरण

रादे
गी

चक्रगारिष्टे केशव धनकक्षप रूप जय जगदीशहरे २
वसन्ति दशान शिखरे थरणी नवलया शशिनिकले
क कलेवनि मया केशव धन सुकर रूप जय जग
देशहरे ३ नवकर कमलबरे नाव प्रभुत भेगे दलि
न हिरण्य कशिष नन भेगे केशव धन नर हरि
रूप जय जगदीशहरे ॥४॥ बल यति विक

रोतर मत्स्यमेयरचनै राचार्य गोवर्द्धन सही कोपिन
विश्रुतः प्रकृतिथो योयीक विस्मापतिः ॥ अष्ट
दी रागदेवशाख । ताल । । प्रलय प्रयोधिज
ले धनवानसि वेदे विहित विहित चरित्र मतेदे
केशव धनमीन शरीर जयजगदेशहरे १ तितिर
ति विषलतरे नव तिष्ठति एष्टे धराणि धराणि किण

रा-दे-
गी-

णीये । केशव धृत खपति रूप जय जगदीशहरे ७
वहसि वषषि विशदे वसने जलदाभे । हल हति
भीति मिलित यमनाभे । केशव धृत हलधर रूप
जय जगदीशहरे ८ तिंदसि यज्ञविधेर हर हर शक्तिजा
ने । सदय हृदय दर्शित पञ्चाक्षरे । केशव धृत व
ध शरीर जय जगदीशहरे ९ स्नेहकृति हर निधने

मणो वलि मङ्गल वामन यदन खनीर जतिन जन
पावन केशव धन वामन मन रूप जय जगदीशहर
दे ५ तत्रिय रुथिर मये जगदप गत पापे । स्त्राप
यसि ययसि शमित भवतापे । केशव धन मय
प्रति रुय जय जगदीशहरे ६ विन्नरसि दिन्नर
णो दिपति कमनीये । दशमा ख मौलि नलि रम

रादे
गी

जयते हले कलयते कारुण्यमातन्वते । स्नेहान्तर
र्क्षयते दशा कृति कृते कृत्वायतनभ्येतमः ॥ १२ ॥ अष्ट
पदी ॥ अत्र कमला ऊच मेरुत द्युत ऊरुत । कलि
तललित वनमाल जयजय देवहरे । दिनमणि
मेरुत मेरुत भव विरुत सति जन मात सहस्र जय
जय देवहरे २ कालिद विषथरगे जन जन रे जन

कलयसि करवाले । शुद्ध केतु मित किमपि कराले
केशव धन कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १ श्रीज
यदेव कवे रिदु सदिन महारे । शुभा सखि दे प्रभदे
भव सारे । केशव धन दया विध रूप जय जगदीशह
रे ॥ वेदानुदरने जगन्निवहने भूगोल सदिभने दे
ने दारयने वलि कलयने सत्र नये ऊर्वने । पौलस्त्ये

श-दे-
गी

थर से द्य धत मे द्य श्री सख चंद व कोर । जय जय देव
हरे ० श्री जय देव कवे रि दे करुते स दे मे गत मज्ज
ल गीते । जय जय देव हरे द अष्टपदी । श्लोक । रा सो
लास भरेणा विश्व स भूता मा भीर वा स अवा स भर्गो
परि रभ्यति भैर मरः प्रे मो थ या रा थ या । सा ध न ह द ने स
या मय मि ति व्या ह त्प गी त स्त ति व्या जा ड ड व चे वि त

यड ऊल कमल दिनेश । जय जय देव हरे ३ मधु
सर नरक विनाशन गरुडासन । सर ऊल केति
निदान जय जय देव हरे ४ अमल कमल दल लोच
न भव मोचन । त्रिभुवन भवन तिथान जय जय देव
हरे ५ जनक सताकृत भूषण जित दूषण समर
शमित दशकंद । जय जय देव हरे ६ अभिनव जल

वा-दे
गी

विमूर्तिमानि वमथौ मय्यो हरिः क्रोडति ६ ति नो
स्मेग वराङ्गनग कवल क्लेशादिवेशाचले प्रालेयलव
नेक्यान् सरति प्रोविड शैलानिलः । किंचस्त्रिगुण
मालमौलिसकलामालोक्य हर्षो दया । उन्मीलति कु
हः कुहुरिति कलौ नानाः पिकानो गिरः १५ । अष्ट
पदी ॥ चेदन चर्चित नील कलेवर पीत वसन ।

स्मितमनोशरीरःपातवः अनेकनारी परिरेभसे
भमस्फुरन्मनोशरिविलासलालसे मयारिसमा
दृष्टदर्शयन्पशौ सखी समन्ते पुनराह रायिका
विशेषा मनरेजनेन जवयन्नानेद मिदीवर श्रीणी
स्यामलकोमलैरुपनयन्नेशैरनेगोत्सवे । खच्छेदे
वज्रसंदरीभिरभितः प्रनेगामालिगितः प्रेगारुस

रादे
गी.

के मधु सूदन वदन सरोजे ३ कपिकपोल तले मिलि
नालपिते किमपि श्रुति मूले । चारु बुधेव नितेव
वती दयिते पुलकै रन्ध्रकूले ४ केलिकलाकतकेत
च काचिदमंथमना जलकूले । मंजलवेजलकेज
गते विचकर्षकराण्डकूले । करतलताल तरल
दलया वलिकलित कलस्वनवेशे । एतरो सह

वनमाली । केलिवलन्मणि ऊडल मंडित मेरु
गस्मितशाली । हरिहरमगधवधनिकरे । विलासि
नि विलसति केलिषरे । पीतपयोधरभारभोगा ह
रिपरिरभ्यसरागो । गोपवधरतगायति काचिउदे
वितपेवमरागो २ कपिविलास विलोल विलोच
न विलनजतित मनोजे । ध्यायति मगधवधरयि

रा-दे.
गी

इयौ विगलित निजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतस्यतः
कविदपिलता केजे येजत मधुवत मेडली मात्र
शिखरे लीना दीना सुवाचरहः सखी १० केसारिरपि
सेसाद वासना वेथ श्रेखला यथा मायाय हृदये
तत्पाज व्रज सेदरी ११ इतस्तत्ता मन सत्यरा
थिका सनेरा बाणा व्रजविन्न मानसः कृतान्वता

इत्यपराहृणिणापवर्तोप्रशसेसे ६ स्त्रियनिका
मपिचेवतिकामपिरमयनिकामपिरामोपश्य
निसस्मितचक्रपरापरासद्वगच्छनितामो ७
श्रीजयदेवभाणितमिदमद्वतकेशवकेलिरह
स्ये। हंदावनविपिनेचरितेवितनोत्तप्रभानि
यशस्ये। ८। विहरतिवनेराथासाथारणाप्रणाये

रा'दे'
गी

कुदिल अकोप भरेण शोण पत्र मित्रो परिभ्रमता
कुले भ्रमणोत्तना महे हृदि संगता मतिशे भ्रशे रमया
मि किं वनेन सगमिता मिह किं वथा विलयामि ४
तन्निविन्न मसूयया हृदयन्तवा कलयामि तन्न
वेसि कुतो गता सिनते नते न्वनयामि ५ दृश्यसे प्र
रतो गता गत मेव किं विदथासि । किंपरे वश सं

एः सकलितेदनीतस्यन्तजेजे निषसाद सायवः
१॥ अष्टपदी ॥ सामिये चलित्ता विलोक्य हने वधु
निचयेन । सापरायतया मयानति वारितानि भये
न १ हरिहरिहता दरतया गतासा ऊपितेव । किंक
रिष्यति किं वदिष्यति साविरे विदहेण किंथनेन जने
न किमस किंयतिन गृहेण २ चित्तयामि तदानने

गो० ^{२मो}कुलेवरुः ^{३म}केलयः ^{२३}॥ ^{२४}वाग्देवता चरित
गो० चित्रित चित्त मया। पद्यावती चरण चार
ण चक्रवर्ती। श्री वासुदेव रति केलि क
था समेत। मेतं करोति जयदेव कविः
प्रवेयम्। १। यदिहरि स्मरणे सरसे मनो।
यदि विलास कलास कुतूहले। मथुर

ॐ अथ गीत गोविंद परिविन्द माह । राग ल
लित । नाल । ती न । ३ । मेवै मे उर मस्वर बन
भुवः श्यामा स्तमाल दुमे । नक्तम्भीरु
रये त्वमेव तदिदं राये गृहे प्रापय । इत्ये
नंद निदेश तस्मालि तयोः प्रत्यब्ध ऊज
दुमे । राधा मायव यो जयेति यमुना ।

गी कविष्ठा पतिः । धारमिनी ललित । ताल
गो । प्रलय पयोधि जले धृत वानसि वेदे ।
विहित चरित्र मवेदे । केशव धृत मीन शरी
र जय जग देश हरे ॥ । दिति रति विष्णु
ल तरे तव तिष्ठति श्रेष्ठ यरणि यरण
किण चक्र गारिष्टे । केशव धृत कल्प रु

कोमल कोत पदावली । शृणु तदा जय
देव सरस्वती । ३ । वाचः पल्लव यत्समा प
तिथरः । संदर्भ शुद्धि गिरो । जानीते जय
देव एव शरणः आद्यो उरुह दुते । शृंगा
रोन्नर सत्यमेव रचनै राचार्य गोवर्द्धन ।
स्यही कोपित विष्कतः श्रुति थरो थोयी



गी ॥ जय जग दीश हरे । ५ । क्लृपयसि विक्र
गो ॥ ए बलि मद्भुत वामन । पदनख नीर ज
नितज पावन । केशव धृत वामन रूप ।
जय जगदीश हरे । ५ । क्षत्रिय रुधिर मये
जग पद गत पापे । स्वपयसि शमित भ
वतापे । केशव धृत भृगु पति रूप । जय

प० जय जगदेशहरे । २ । वसति दशान शि
खरे धरणी तवलया । शशिनि कलेक
कलेवनि मया । केशव धत शूकर रूप
जय जग देशहरे । ३ । तव कर कमल
वरे नाव मद्भुत भेगो । दलित हिरण्य क
शिप्र तन भेगो । केशव धत नरहरि रु

गी
गो जय जगदीश हरे । ८ । निंदसि यज्ञ विधेर
हरे श्रुति जाते । सदय हृदय दर्शित पशु
चातम । केशव धृत बुद्धि शरीर । जय जग
दीश हरे । ९ । मेघ निवह निधने कलयसि
करवाले । धृष्ट केतु मिव किमपि कराते ।
केशव धृत कल्कि शरीर । जय जगदीश

जग दीश हरे । ५ । वितरसि दिक्षु रागे दि
पति कमनीये । दशमुख मौलि बलि
रमणीये । केशव धृत रघुपति रूप । ज
य जगदीश हरे । ७ । वरसि वसुधि विशदे
वसने जलदाभे । हल हति भीति मिलि
त यमुनाभे । केशव धृत हलधर रूप ।

गी मात न्वते । स्नेहा न्मूर्ख यते दया कृति कृते
गो कृषाय त्वभ्ये नमः । ५ । रागिनी । ललित ।
ताल । श्रित कमला ऊच मेउल धत ऊ
उल कलित ललित वनमाल । जय जय दे
व हरे । ॥ अ० । दिन मणि मेउल भव विरुन
मुनिजन मानस हेम । जय जय देव हरे । १ ।

हरे। ॥ श्री जय देव कवेरिद मुदित मुदारे।
शृणु सखिदे शुभदे भवसारे। केशव धृत
दशाविद रूप। जय जगदीश हरे। ॥ वेदा
नुद्धरते जगति वहते भूगोल मुद्दिभते ।
दैत्ये दार यते बलिं बलयते लज्जलये कुर्व
ते। पौलस्त्ये जयते हले कलयते कारुण्य

गी क सना कृत भूषण जित हषण समर शमि
गो न दशकंद । जय जय देव हरे । ६ । अभिनव जल
थर सुंदर धत मेदिर श्री सुख चंद्र चकोर । जय
जय देव हरे । ७ । श्री जय देव कवेरिदे ऊरुते सु
दे मेगल मुज्वल गीते । जय जय देव हरे । ८ ।
रासोलास भरेण विश्रम भूता साभीर वाम

कालिय विषयर गोजन जन रंजन यउ
कुल कमल दिनेश । जय जय देव हरे । ३ ।
मथ मुर नरक विनाशन गरुडा मन सर कु
ल केलि निदोन । जय जय देव हरे । ४ । अम
ल कमल दल लोचन भव मोचन त्रिभुवन
भुवन निधान । जय जय देव हरे । ५ । जन



गी नराह राधिका । १० । विशेषा मनरेजनेन जनय
गो ज्ञानेद मिंदीवर । श्रेणी श्यामल कोमलै रूपन
य ज्ञै रनेगोत्सवे । स्वच्छन्दे व्रज सेदरीभिरतः
प्रत्येग मालिगितः । शृंगारः सति मूर्ति मा
निवसथौ मुग्धो हरिः कीरति । ११ । नित्योत्से
गवसद्गुंग कवल लेशादि वेशा चले । प्राले

अवा । मभ्यर्णो परिरभ्य निर्भर सरः प्रमोय
या रायया । साधु त्वदचने सथा मय मिति व्या
हृत्य गीत स्तुति । व्याजाड्डट वेवित स्मित
मनो हारी हरिः पातवः । ५ । अनेक नारी परि
रेभ संभ्रम स्फुरन्मनो हारि विलास लालसे ।
मुगारि माया उप दर्श यन्मसौ सखी समक्षे प्र

गी चलन्मणि ऊंडल मेडित गंड युगस्मित शा
गो ली॥॥ हरि विह मुग्ध बधू निकरे विलासिनि
विलसति केलि पदे॥॥ अ॥ पीन पयो धर
भारभरेण हर्षि परिरभ्य सुयोगे॥ गोप बधू
रनु गायति काचिउदे वित पेचमयोगे॥२॥
कपि विलास विलोल विलोचन विलन

य प्रवने क्षयात् सरति श्रीविदेशैला नि
लः । किंच स्त्रिय रसाल मौलि मुकुला
न्यालोक्य हर्षोदया । उन्मीलेति ऊह ऊह
रिति कलोतानाः पिकानोगिरः । १२ । रा
गिनी ललित । ताल । चेदन चर्वित नी
ल कलेवर पीतवसन वनमाली । केलि

गी विच कर्ष करेण उहूले । ५ । करतल ताल
गो तरल बलया बलि कलित कल स्वन वेशे ।
रामरसे सह नृत्य परा हरिणा युवती प्रश
शेसे । ६ । श्लिष्यति कामपि चेंवति कामपि
रमयति कामपि रामो । पश्यति सस्मित चा
रु परा मपरा मनुगच्छति वाम । ७ । श्री जय

जनित मनोजे । आयाति अग्य वधू रथिके म
धुसूदन वदन सरोजम । ३ । कापि कपोल
तले मिलिताल पित्तकिमपि शुक्ति मूले ।
चारु चुचेवनि तेववती दयिते पुलकै रजक
ले । ४ । केलि कला कुत केनच काचिदमे
यमुना जल कूले । मेजल वेजल कुंज गते

श्री
गो
पुत्राच रहः सांवी । १० केसारी रपिसेसार वास
ना वेथ शेविलो राथामाथाय हृदये तत्पान्न व्रज
हृदयीः । ११ । शतस्तनस्ता मनु सत्य राथिका मा
नेग वाणा व्रज विन्न मानसः । कतानु तापः
सकलिंद नन्दनी तद्यन्न केजे निषसाद माथवः
१२ । रागिनी ललित । ताल । मामिये च

देव भणित सिद्ध मद्रुत केशव केलि रहस्य
म । हेदावन विपिने चरिते वितनोत्त शुभा
नि यशस्यम । २८ । विहरति वनेगाथा साथा
रण प्रणये द्वौ विगलित निजोत्कर्षा दीर्घा
वशेन गतात्यतः क्वचिदपि लता ऊँजे गुंज
नमथवत मेउली सुखर शिखरे लीना दीना

गी शोणपद्म मित्रो यति भ्रमता कुले भ्रमणे
गो न । ३ । तामहे हृदि संगता मनिशो भूशो र
मयासि । किंवनेनु सारा मितामिह किं वृ
था विलयासि । ४ । तन्निविन्न मसूयया ह
दयेतवा कलयासि । तन्न वेधि कुतो गता
सि नतेनतेनुनयासि । ५ । दृश्यसे पुरतो

लिता विलोक्य हन्ते वध निचयेन सा सापराध
तया मयान निवारिता तिभयेन । ॥ हरि हरि
हता दयतया गता सा ऊपितेन । अ० । किं क
रिष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विहरेण । किंथ
नेन जनेन किं मम किं सखेन गृहेण । २ ।
चित्तयामि तदानने कटिल अकोप भरेण ।

गी एणमा ऊरु चत सायक मधु मा चाप मारो प
गो य। क्रीश निर्जित विष मूर्ध्नि जना वातेन
किं पौरुषे। तस्यापव मृगी दृशो मनसि ज
प्रेवल्कटाक्षा शुग। श्रेणी जर्जरिते मना
गपि मनो नाद्यापि संयुज्जते। १३। हृदिविला
शता दारो नाये भुजंगमनायकः ऊवलय

गता गत मेव कश्चिददासि। किमपरे व
शस्रेभ्यमे परिवेभ्यो नददासि। क्षमता
मपरे कदापि तवे दृशे नकरोमि। देहि
संदरि दर्शने सम मन्मथेन उनोमि। वरि
ते जय देव केन हरेरिदं प्रवणेन। किंउ वि
ल्व समुद्र संभव रोहिनी रमणेन। ८। पा

ग्री व विरहे वनमाली । क्र० । दहति शिशिर
ग्री मयूरेव रमण अनु करोति । पतति मदन
विशित्वे विलपति विकल तरोति । २ । धन
ति मयुष समूहे अवण मपि ददाति । मन
सि बलित विरहे निशिरुज मुपयाति । ३ ।
वसति विपिन विताने त्यजति बलित था

दलश्रेणी कंदे न सागरलघुतिः मलयज
रजोनेदं भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरन ह
र श्रोत्रा नेग कथा किमु यावसि । २४ रागि
नी ललित । नाल । वहति मलय समीरे
मदन मुष निधाय । स्फटति कुसुम निकरे
विरहि हृदय दलनाय । ॥ सखि सीदति न

गी नपन्नपि तवैवालाय मंत्रावली । भूयस्तत्क
गो चक्रेभ निर्भरपरी रेभासूते वोक्ताति । १५ । वि
किरति मुद्रः साक्षा नाशाः पुरो मुद्ररी क्ष
ते । प्रवि शानि मुद्रः कुंजे पुंजन्मद्रव
द्रताम्यति । रचयति मुद्रः शय्यामर्या
कुले मुद्ररीक्षते । मदन कदन लान्तः

म । लुटन्ति थराणि शयने बद्ध विलपन्ति तव
नाम । ४ । भणन्ति क विजय देवे विरहि विल
सितेन । मनसिरभस विभवे हरि रुदयन्त
स्रक्तेन । ५ । पूर्वे यत्र समन्वया रन्ति यते
रासा दिताः सिद्धये । तस्मिन्नेव निजंज मन
थमहा तीर्थेषु नर्माथवः । आयेत्वा मनिशं

गी कला कुलगलदम्बिह मुह्यसिते । भूवली
गी कमली कदर्शित भुजा मूलादे दृष्टस्तनम् ।
गोपी नानिभूत विरीक्ष्य गमिता कोक्षस्थि
रे चिन्तय । वृत्तसुगम मनोहरो हरत्नवः क्ले
शत्रवः केशवः । २१ यमुना तीरवा नीर निरु
जे मन्दमास्थितम् । प्राह प्रेम भरोद्भान्त म्मा

कान्ते प्रियस्तव वर्तते । ॥ । तानिस्पर्श स
त्वानि ते च तरला स्निग्धा दृशो विभ्रमा । स्त
दङ्कामुज सौरभेस्तव सथा स्पेदीगिरं वकि
मा । सार्विवा यरमा थरीति विषया संगेपि
चे न्मानसे । तस्यो लय समाधि हेतु विरह
व्याधिः कथं वर्तते । ॥ । साकृत स्मितमा

गी
गो

कोमल मलयस मीरे । मथ कर निकर
करस्वित कोकिल कूजित कुंज कटीरे ।
॥ विहरति हरि रिह सरस वसन्ते लल्यति
युवति जनेन समे सखि विरहि जनस्य उ
देते । अ० । उन्मद मदन मनोरथ पथिक
वध जन जनित विलापे । अलि कुल संकुल

यवे राधिका सखी । १५ । वसन्ते वासन्ती ऊ
सम सकुमारै रवयवै । अमन्ती कोनारे बरे
विहित क्लृप्तानु शरणाम् । अमन्दे केदर्य न
रजनित चिन्ता कल नया । बलहाथो राधा
सुरस मिद मूचे सहचरी । राग ॥ ललित ।
नाल । ललित लवंगलता परि शीलन

गी टल पटल कृतस्मर तृणाविलासे । ४ । विग
गो लित लेजित जगदव लोकन तरुण करु
ण कृतहोसे । विरहिनि केतन ऊँत मुखा
कृति केतकि देतरिताशे । ५ । माधविका
परिमलललितेनव मालति यात सुगंधौ ।
मुनि मनसा मपि मोहन कारणि तरुणा

गी
गो

ए चक्रवर्ती श्रीवास देवति केलि कथा समेत मेते
करोति जयदेव कविः प्रवेधम् । २ । यदिहारी सरणो स
से मनो यदिविलास कलास कुतहले । मथुरको
मल कोत पदावली शुण तदा जयदेव सरस्वती
। ३ । वाचः पल्लव यन्मा पतिथरः सेदर्भ अहिनि
रो जानीते जयदेव पव शरणः श्लाघो उरुह डुतेः श्रे

ॐ प्रथम गीत गोविंद माह रागिनी मधुमाधवी ताल
ॐ मेघैर्मे डुर मस्वर वनधुवः श्यामास्तमाल डुमै
नक्तम्भीरु रये तमेव तदिमे राये गृहे प्रापय श्येने
द निदेश तस्य लि तयोः प्रपद्य ऊँ ज डुमे राधा माध
वयो जयंति यमुना क्लेशहः केलयः ॥ वादेव
ता चरित विवित चित्त सया पयावती चरण चार

गो
मो

गारिऐ केशव धन कच्छप रूप जय जगदेशहरे । १ ।
वसति दशान शिखरे धरणी नवलया शशिनिक
ले ककलेवनि मया केशव धन शूकर रूप जय
जग देशहरे । ३ । नवकर कमल वरे नाव मधुन
भ्रंगे । दलित हिरण्य कशिपु तनु भ्रंगे । केशव धन
नरहरि रूप जय जग दीशहरे । ४ । बलयासि वि

गगरोत्तर सत्यमेव रचनै राचार्य मोवर्द्धन स्याहीको
पिनविश्रुतः श्रुतिधरो धोयी कविस्मा पतिः ४
रागिनी मधुमाधवी ताल । प्रलय पयोपिज
ले धृतवानसि वेदे विहित चरित्र मावेदे केशव
धृत मीन शरीर जयजग देश हरे । । द्विनि रतिवि
पुल नरेत्तव निष्टति दृष्टे थराणि थराणि किरण चक्र

गी
मो

एगीये केशव धन रत्न पति रूप जय जगदीशहरे ।
वहसि वसुधि विशादेवसने जलदामे हल हनि भी
ति मिलित यमुनामे केशव धन हलधर रूप जय
जगदीशहरे । ८ । निंदसि यत्त विधेरद्वह शक्ति जा
ने सदय हृदय दर्शित पशु चान्तम केशव धन
बुद्ध शरीर जय जगदीशहरे ॥ ५ ॥

कमलो बलि मद्भुत वामन पदनख नीर जनित
न पावन केशव भुक्त वामन रूप जय जगदीश
हरे ॥ ५ ॥ क्षत्रिय रुधिर मये जग दय गत पापे
सुपयसि शमित भव नापे केशव भुक्त भयप।
ति रूप जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥ वितरसि दिक्षु
णे दिग्पति कमनीये दशमुख मौलि बलि रम

गी
गो

यते बलि कलयते क्षत्रिये ऊर्वते पौलस्त्ये जय
ते हले कलयते कारुण्य मातन्वते श्रेष्ठान्मूर्ख
यतेदशा कृति कृते कृष्णाय नमो नमः ५ रागि
नी मधुमाधवी ताल । श्रित कमला ऊच मेर
ल शत ऊरल कलित ललित वनमाल जय जय
देव हरे । ॥ अ० । दिनमणि मेरल भव त्वे ।

स्नेह निवह निधने कलयसि करवाले ध्यकेत
मिव किमपि काले केशव द्यत कल्कि शरीर
जय जगदीशहरे । १० । श्री जय देव कवेरिदसु
दित सुदारं मृण सखदे अभदे भवसारं केशव
द्यत दश विद रूप जय जगदीश हरे । ११ । वेदा
चदरते जगन्निवहने भूगोल मुदिअने दैत्य दार

गी १५। जनक सत्ता कृत भूषण जित हृषण समर शमि
मो न दशकेत जय जय देव हरे । ६। अभिनव जलधर सेद
र धन मेदिर श्री सुख चंद्र चकोर जय जय देव हरे
। ७। श्री जयदेव कवेरिदे ऊरुते सुदे मंगल मुज्जल
गीते जय जय देव हरे । ८। रासोलास भरेण विश्व
म मृता माभीरवाम क्रवा मभ्यर्णो परिरभ्य निर्भर सुरः

उन मुनि जन मानस हेस जय जय देव हरे । २ ।
कालिय विषथर गंजन जन रेजन यउ कुल क
मल दिनेश जय जय देव हरे । ३ । मधु सुर नरक
विनाशन गरुडा सन सर कुल केलि निदान ज
य जय देव हरे । ४ । अमल कमल दल लोचन भव
मोचन विभुवन भवन निधान जय जय देव हरे

गी मल कोमलै रूपनयनै रनेगोत्सवे लखन्देवन
गो सेदरी भिरभित्तः प्रमेग मालिगित्तः मृगारः सारि।

मूर्ति मानिव मयौ मुग्धो हरिः कीरति । ॥ । निगो
त्सेग वसहुगंग कवल केशादि वेशाचले प्रालेय
प्रवने कषात्र सरति श्रीवेरशैला निलः किंचित्ति
ग्यरसालमौलि मुकुला नालोक्य हर्षोदयाउत्सीलेति

प्रेमोपया गथया साधुतद्वने सधामय मिति आह
न गीतस्तति आजाउद्दट चुवितस्मित मनो हारी
हरीः पानवः । १५ । अनेक नारी पारि रेभ संश्रम स्वर
नमो हारी विलास लालसे सुगारि मारा उपद
र्श यत्तसौ सगर्वी समक्षे पुनराह गथिका । १६ वि
सेषामनरेजनेन जनयना नेद मिदीवर अणी रणा

गी. गोप वधूश्च गायति काचिउदे चित्त पेचमरागे । २ ।
गो. कपि विलास विलोल विलोचन विलन जनितम
नोजे धायतिशुग्य वधू शयिके मधुसूदन वदन स
रोजम् । ३ । कापि कपोल तले मिलिताल पि
नेकि मपि श्रुति मूले चारु चुंबेवनि तेववन्ती ।
दयिते पुलकै रचकले ॥ ४ ॥ केलि ।

ऊहः ऊहरिति कलोत्तानाः पिकानोमिरः । ९ ।

रागिनी मधुमाधवीताल । चंदन चर्चित नील

कलेवर पीतवसन वनमाली केलि चलन्मणि ऊ

इल मेरित्त गेट युग स्मित शाली ॥ हरे रिह सु

ग्य वध निकरे विलासिनि विलसनि केलि परे ॥

ऊ । पीन पयो धर भार भरेण हरे परि रभ्य सरगो

गी
गी

ति सस्मित चारु परा मपरा मनु गच्छति वामा
म ॥ ७ ॥ श्री जय देव भणित मिद मञ्जुत के
शव केलि रहस्यम् । वृंदावन विधिने चरिते वि
तनोत सुभानि यशस्यम् ॥ १८ ॥ विहरति
वनेशया साधारण प्रणये द्वौ विगलित ।
विजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतान्यतः ।

कला कुत केनच काचिदसं यमुना जल कले
मेजल वेजल कुंज गते विच कर्ष करेण उरु
ले ॥ ५ ॥ करतल ताल तरल बलया बलि क
लित कल खन वेशे । रास रसे सह नम परा
हरिणा युवती प्रशशंसे । ६ । श्रियाति कामपि
वेवति कामपि रमयति कामपि रामोपश्य

गो न्न कंजे निषसाद माथवः ॥ १५ ॥ रागिनी मथ
गो माथवी नाल ॥ मामिये चलित्ता विलोक्य
हृत्ते वथु निचयेन सा पयाथ तया मयान नि
वारित्ता ति भयेन । । हुरि हुरि हत्ता द्य
तया गत्ता सा ऊपितेन ॥ ३५ ॥ किं करि ।
ष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विरहेण किं ।

कवि रपि लता केजे गुं जन्म भुवन मेउली सुख
र शिखरे लीना दीना पुवाच ररुः सखी । १० ।
केसारी रपि संसार वासना बंध सखिलो राधा मा
थाय हृदये नम्राज व्रज संधीः ॥ ११ ॥ इतस्तत
स्तु मनु सत्य राधिका मानेग वाण व्रज विन
मानसः कताउ नापः सकलिंदनन्दनी नदा

गी
मो

तन्त्रवेद्यि कुतो गता सि न तेन तेनुनुयामि ।

५ । दृश्यसे पुरतो गता गत मेव किञ्चिदस्य

सि किमुते वश सेशमे परिरंभणे नददासि

क्षम्यता मयरे कदापि तवे दृशे न करोमि

देहि सन्दरि दर्शने मम मन्मथेन उनोमि व

र्णिते जय देव केन हरेरिदे प्रवणेन किञ्चि वि

धनेन जनेन किं मम किं सखिन गृहेण । २ ।
चिन्तयामि नदानेन कृदिल अकोप भरेण शोण
पद्म मित्रो परि अमता कुले अमणोन ३ । तामहे
हृदि सेयता मनिशं भूषे रमया मि किंवनेत्र
साय मितामिह किं वृथा विलयामि । ४ । त
निखिन्न मसूयया हृदयेतवा कल यामि ।

गी
गो

मनायकः ऊवलय दल श्रेणी कंदेन सा गर
ल युतिः मलयज रजो नेदे भस्म प्रिया रहिते
मयि प्रहरन हर ओन्मा नेग कुथा किमु थाव
सि ॥ १५ ॥ रागिनी मधुमाधवी नाल वह।
ति मलय समीरे मदन सुय निधाय स्फटति
ऊसम निकरे विरहि हृदय दलनाय ॥ १ ॥

ल्व समुद्र संभव रोहिनी समोत्तम । ८ । पाणौमा
कुरु चत सायक मयं मा चाप मागे पय क्रीडा ।
निर्मित विष मूर्ध्नि न जना चातेन किं पौरुषे न
स्यापव मग्नी दृशो मनसि ज प्रेवक्तव्यता अग
श्रेणी नर्जरिते मना गपि मनो नायापि संयत्त
ते ॥ १२ ॥ हृदिविला शता हारो नाये अनेग

मी यरणि शयने बद्ध विलपति तव नाम । ५ । भ
मो णति क विजय देवे विरहि विलसितेन मनसि
रभस विभवे हरि रुदयत सकुनेन । ५ । एवं
यत्र समन्वया रति पते रासा दिनाः सिद्ध
ये तस्मिन्नेव निजंज मन्मथ महा तीर्थे पुनर्मा
यवः थायेस्त्वा मनिशं जपन्तपि तवैवात्मा

सर्वे स्रीदन्ति नव विरहे वनमाली ॥ ५० ॥ दह
न्ति शिशिर मयूरेव रमण अनु करोति पतन्ति मद
न विशिखे विलयन्ति विकल नरोति ॥ १ ॥ धन
न्ति मथप समूहे अवण मपि दहन्ति मनसि व
लित विरहे निशिरुज सुप यान्ति ॥ ३ ॥ वसन्ति
विपिन वित्ताने मजन्ति बलित थाम लुदन्ति ।

गी च तरला स्त्रिया दृशो विश्रमा स्तदक्रामुन सौर
गो भेसव सथा सेदीमिरो वक्रिमा सा विवा थर माथ
धुरीति विषया सेगोपिचेन्मानसे तस्यो लघु समा
धि हेत विरह व्याधिः कथम्वर्तते ।। साकृतस्मि
तमाकुला कुल गलदस्मिल मुलासिते भूवली
कमली कदर्शित भुजा शूलार्द दृष्टननम् गोपी

य मंजा वली श्रयस्तत्कच कुंभ निर्भरपरी रेभाम्
ते वोहति । १५ विकिरति मद्ः चासा नाशः
पुरो मद्दरी क्षते शवि शानि मुद्ः कुंजे गुंजे गुंजे
नन्दर्वदनाम्यति । रचयति मुद्ः शय्याम्यया ।
कुले मुद्दरीक्षते मदन कदन क्लान्तः कान्ते पि
यस्तव वर्तते ॥ १॥ तानिस्पर्श सत्वानि ते

गो
गो

केदर्य ज्वर जनित चिन्ता कुल तथा बलदायो रा
था सरस मिद मूवे सहचरी रागिनी मधुमाधवीता
न ॥ ललित लवेगलता परि शीलन कोम
ल मलयस मीरे ॥ मध कर निकर करस्वित
कोकिल कूजित कुंज कटीरे । ॥ विहरति
हरि विह सरस वसन्ते नृत्य ॥

नानिभूत निरीक्ष्य गमिता कोदक्षिरे चिन्तय च
नर्भुग्य मनो ह्यो ह्यन्तवः केशवः केशवः
२॥ यमुना तीरवा नीर निजंजे मन्दमास्थितम्
प्रादु प्रेम भरोद् आनन्त स्माथवे राधिका सखी ॥
वसन्ते वासन्ती कसम सकुमारै रव यवै भ्रमन्ती
कोनैरे वड् विहित कल्लात शरणाम् प्रमेदे

गो
गो

जाले । मदन महीपति कनक देउ रुचिके सर
ऊसम विकासे । मिलत शिली अल पादल प
दल कनसर नगा विलासे । ५ । विगलित लंजि
न जगदव लोकन तरुण करुण कनसासे वि
रहिनि कंतन ऊत अवाकति केतकि देतवि
नासे । ५ । माथविका परिमलललितेनव ।

नि युवनि जनेन समं सखि विरहि जनस्य उरंते
क्र० ॥ उत्सद मदन मनोरथ पथिक वधु जन ज
नित विलापे । अलि कुल सेकुल असम समूह नि
रा कुल वकुल कलापे ॥ १॥ मृग मदसौरभ रम
स वशंवद नव दल माल तमाले युवजन हृद।
य विदारण मनसिज नाव रुचि किंशुक ।

गी
गो

नु गत मदन विकारे । ८ । द्य विदलित मल्ली व
लि चंचलराग प्रकटित पट वासै वीसयन्काने ।
नानि । इह हि दहति चेतः केतकी गेयवेधुः प्रस
र दसम वाण प्राण वझेयवाहः । ११ । उन्मीलनमथ
गेयलव्य मथय व्याधुनचनोकर कीउत्कोकिलका
कली कल कलै रुझीणी कर्ण जराः नी ।

मालति यात संगेथौ । मुनि मनसा मपि मोहन
कारणि तरुणा कारणा वंथौ । ६ । स्फुरदति मुक्त
लता परिरेभणा मुकुलित पुलकित हूते हेदाव
न विपिने परि सर परि गत यमुना जल हूते ।
श्री जय देव भणिते मिद मुदयति हरि चरण ।
स्सति सारे । सरस वसेत समय वर्णन म ।

मी
मो
यति । ३३ । समीची मधुमाधवी जाल ॥ निंद
ति चेदन मित्र करण मनुविदति खिद मधीरेया
ल निलय मिलनेन गरल मित्र कलयति मलय
समीरे । ॥ साथव सा विरहे तवदीना मनसि ।
न विशिखभयादिव भावनया तयिलीना ।
क्र० । अविरतानि यतिन मदन श ।

येते पथिकैः कथेकथ मपि ध्याना वधान क्षण
प्राप्त प्राण समा समा गम रसोलासै रमी वास
मः । २१ । उर लोक स्लोक स्तव कन वकाशोक
लनिका विकाशः का सारे पवन पवनोये व
ययति अपिआमहेगी रणित रमणीयान मुक्त
ल प्रसूति मृतानो सति शिवरिणीये सख

गी ८ विथन्नद देन दलन गलिता मन्त्रधारे । ५ । वि
मो लिगितन रदसि ऊरेगम देन भवेन्नम सम शार ।
भूने प्राण मति मकर मथो विनि थाय करेच श
रे नव हूने । ५ । प्रति पर मिर मयि निग दनि
माथव नव चरणो पतिताहे । नयि विग्रहे मयि
स यदि सथा निधि रयि ऊरुने ननुदाहम् ६

रादिव भवदव नाय विशाले । स्वरुदय मर्मणि
वर्म करोति सजल नलिनी दल जाले । १ । ऊ
ऊम विशिख शरतल्य मनल्य विलास कलाक
मनीये । व्रत मिव तव परि रेभ सखाय करोति
ऊसम शयनीये । ३ । वहतिव गलित विलोच
न जलथर मानन कमल मुदारे विथ मिव विक

गी
मो

दावदहन जाला कलापायने । सापितदिरहेण
हेत हरीणी रूपायने सकथे केदपेपि यमायने
विरचयन् शार्हल विकीरितो । २४ । रागिनी मधु
माथवी ताल ॥ स्तन विनि हित मपि हार सु
दारे सा मजने कृपा ननु विव भारे राधिका विरहे
नव केशव । अ० । शर सम सृण मपि मल

प्यान लयेनपुरः परिकल्प्य भवेत्त मतीव उद्यापे
विलयति हसति विषीदति चंचति भुञ्चति नापे
७॥ श्री जय देव भणित सिद्ध मथिके यदि मनसा
नटनीये । हरि विरहा ऊल बलव युवति सखी
वचने पटनीये । ८ । आवासो विपिनायने प्रिय
सखी मालापि जालायने । नापोपि ससितेन

गी कल्पे ५ तजति न पाणि तलेन कपोले । बाल
गी शिशान मिव साय मलोले । ६ । ह्री विन्ति ह्री वि
ति जयति सकामम् । विरह विहित मरणे वनि
कामम् ७ श्रीजय देव भणित मिति गीतम् ।
सावयन्त केशव पद मुपनीतम् । ८ । स्मरन्तया
दैवत वैद्य ह्य तदेग सेगा मृत मात्र साध्याम्

यज येके पश्यन्ति विष मिव वपुषि सशोकम्
। २। असित पवन मनुष्यम परिणामहे । सदनद
हन मिव दहन्ति सदाहम् । ३। दिशि दिशि किर
न्ति सजल कण जालम् । नयन नलिन मि
व विगलितनाले । ४। नयन विषय मपि कि
शलयतल्पम् । कलयन्ति विद्वन् इनाशन

मी.
गो.

ज्वर सेज्जरा ज्वरतनो राश्वर्य मस्याश्चिरम् चेत्तस्ये
दन चेदमः कमलिनी चित्तास संताप्यति किन्त
क्षोति रसेन शीतलतरम् त्वामेक मेव प्रियम्
ध्यायेत्ती रदसिस्थिता कथं मयि क्षीणा क्षणे
प्राणिनि । २० । क्षणमपि विरहः पुरानसेहे
नयन निमीलित विन्त्रया नयाने ससि ।

विमुक्त बाधोऽकुरुषेन साथा सुपेन्द्रवज्रा दधि दा
हणोसि । १५ । सादोमो चति सौत्करोति विल
पसक्तम्यते नास्याति ध्यायत्तदुभ्रमति प्रमील
ति पतस्ययाति मूर्च्छयपि पतावत्य ननुजरेव
रतनुजीवेन्न किनोरसान् स्ववैय प्रतिम प्रसी
दसि ततस्त्यक्तो नथा हस्तकः ॥ १६ ॥ केदर्य

गी
गो

गोत्र मशक्तो चिर मत्र रक्तो लज्जा गद्वे दृष्टा न
चरिते गोविंदे मनसिज्ज मेदे सखीश्रद्ध ॥३०॥

श्रेणेषा भरणं करोति बद्धशः पञ्चेषि संचारिणि
प्रप्रेक्षाभ्यारिणो कते वित्तवृत्ते शय्यो चिरं ध्या
यति । शय्या कल्प विकल्प तल्य रचना संकल्प
लीलाशत व्याशक्तापि विना त्वया वर न ।

नि कथमसौ रसाल शाखोचिर विहरेण विलो
क्य प्रथितासौ । १८ । राधा मुग्ध मुत्तार विदम
थय सैलोक्य मौल्यली । नेपथ्यो चित नीर
त्न मवनी भाववत्तारोत्तकः । स्वच्छेद वजसे
दरी जन मन स्लोक प्रदोषस्त्रिरम केस धंसन ध
मकेत रवत त्वादेवकी नंदनः ॥ १९ प्रथिता

गी
गो

धुरमधुरानि पिवेत्तम् । १ । नाथ हरे स्मीदन्ति राधा
वासगृहे । २ । त्वदर्शित शरणं रमसेन वल्लेनी
पन्नन्ति पदानि कियेन्ति वल्लेनी । ३ । विहित ।
विशद विष किशलय वल्लया । जीवन्ति परमिह
नव रन्ति कलया । ४ । सुश्रव लोकिन्त मेडनली
लामथीष रदमिति भवन् शीला । ५ । त्वरि

तु नैषा निशोने घाति । ३१ । विपुल पुल क
पालिः स्फीतसीत कार मेतर्जनि तजिडिम ।
का कर्वाकले याहरेती । तव कि तव विथाया
मेदकेदप चिन्ता रस जल निधि मया ध्यान लया
मगादी । ३२ । गगिनीमधुमाधवी ताल ॥
पश्यति दिशि दिशि रहसि भवेतम तद थर म

गी
गो

किं विष्णुस्यसि ह्यसभोगि भवने भोरीर भूमी
रुहे । आनर्यासिन इष्टि गोचर मितः सानन्दने
दास्यदम् । राधाया वचनन्तद धग भुवान्नेदो
ति के गोपतो गोविंदस्य जयेति सायम तिथि :
प्राशस्त्य गर्भा गिरः ॥ ३ ॥ अजोतरे च कुलरा
कुल वर्त्म पान्त सेजान्त पान्तक इव स्फ ।

न सुपैति न कथं मभि सारं । हवि रिति वदन्ति स
त्वी मनुवारे । ५ । सिष्यति चैवति जलथर कल्पे ।
हवि रूप गत इति तिमिर मनल्ये । ६ । भवन्ति
विलेविति विगलित लज्जा विलपति रोदन्ति
वासक सज्जा । ७ । श्री जयदेव कवेरिद मुदि
ते । रसिक जनैतनु नामपि मुदिनम् ॥ ८ ॥

गी.
गो.

जनोति मनोः भुवः सहृदये हृदये मदन व्यथा
म. ३६। मनो भवा नंदन चंदनानि प्रसीदते दक्षि
ण भुव वामनाम् ॥ क्षणे जगत् प्राण विधा
य माथवे पुरोमम प्राण हरो भविष्यसि ॥
३० ॥ वायो विधेहि मलया निल पंच वा
ण प्राणान् गृहाण नगदह सुनरा ।

दलो लून श्रीः । हंदावनो तर मदीयय देशजा
लैदिक सेंदरी वदन चेदन विंड रिंडः ॥ ३५ ॥ ५
सरति शशथर बिंबे विहित विलंबेच माथवे
विथरा विरचित विविध विलापेसा परितापम
वकारोच्चैः ॥ ३५ ॥ विरह पोंडु सुगारि सुखो व
न युति रयेति रये नपि वेदनाम् विथरतीव ।

गी० नाय निशि गमन मपि शीलिते । तेन मम ह
गो० दय मिद मसम शर कीलिते । २ । मम मरण मे
व वरमति वितथ केतना कि मिह विस हामि
विरहानल मचेतना । ३ । मा मरह विथ रय
ति मथुर मथ यामिनी ॥ कापि हरि मनु भ
वति कृत सकत कामिनी । ४ । अरह ।

अपिषे । किंते कृतान्त भगिनि क्षमया तरे
रेगानि सिंच मम शाम्यत देहदाहः ॥ २८ ॥ रा
गिनी मधुमाधवी जाल ॥ कश्चित्त समयेपि
हरे रहहन ययौ वने मम विफल मिद मम
ल रूप मपि यौवने ॥ ॥ यामि हेक मिह शर
णे सावी जन वचन वंचिता । अ० । यदत्र गम

गी० देव कवि भारती । वसन्त रुदि युवति रिव को
गो० मल कलावती । ८ । त्वामप्राप्य मयि स्वयंवर
परो क्षीरो दत्ती रोदरे शोके सेंदरि काल कूट म
पिवन् मूढो मृशनी पतिः श्यो पूर्व कथाभि
रस्य मनसो विक्षिप्य वक्षो चले राधाया स्तन
कोरको परि मिलनेत्रो हरिः पात्रवः ३५ ।

कलयामि बलयादि मणि भूषणे । हरी विरह
दहन वहनेन बहुहृषणे । ५ । कुसुम सज्जमार
तनु मन्तनु शर लीलया । स्वर्गापि हृदि हेनिमा
मन्ति विषम शीलया ॥ ६ ॥ अह मिह निवसा
मि न गणित वन वेतसा । स्मरन्ति मथुसूदनो
मा मयिन चेतसा । ७ । हरि चरण शरण जय

गी
गो

को विशेष माना समिते कयापि जनार्दने दृष्टव
दे नदाह । ५॥ रागिनी मधुमाधवीताल । स्वर
सम रोचित विरचित वेषा गलित कुसुम दरवि
ल लित केशा । ॥ कापि मधुरिषुणा विलसति
युवति शधिक गुणा । ३० । हरि परि रेभणा वलि
त विकारा कुच कलशो परि तरलित द्वारा २

तत् किं कामपि कामिनी मभिरुतः किंवाक
लाकेलिभिर्वहो बंधुभिरेथ कारिणि वनाभ्यर्णे
किमुदआम्यति कोतः क्वांत मना मना गपि
पथि प्रस्थातमे वात्सल्यः संकेतो कृत मेज वं
जललता ऊंजेपि यनागतः । ४० ॥ अथा गता
माथव मेतरेण सावी मिये वीक्ष्य विषाद मू

गी गो १६। अमजल कण भर समग शरीरा । परि
गो पति तोरसि रति राण थीरा । १७। श्री जय देव भ
लित हरि रसितम् । कलि कलषे जनयन्त परि
शमितम् । १८। रागिनी मधुमाधवी ताल ॥
समुदित मदन रमणी वदने चैवन चलिता थरे
मग मद निलके लिखति सुपलके मृग मिवर

विचल दलक ललिता ननचंद्र । नद थर पान
रभस कृत नेश । ३ । चेचल कुंडल ललितकपो
ला । सुवर्णित रशान जवन गति लोला ॥ ४ ॥
दयति विलोकित लज्जित हसिता । वद्धविथ
कृजित रति रस रसिता । ५ । विपुल पुलक ए
षुवे पशुभंगा । ससित निमीलित विकसदने

गी
गो

भूषिते । ३ । मित विस शकले मृदुभुज युगले
करतल नलिनी दले । मरकत बलये मधुक
र निचये चितरति हिम शीतले । ४ । रति गृह
जचने विपला पचने मनसिज कनकासने म
णिमय रशने तोरण हसने विकरति कृतवा
सने । ५ । चरण विसलये कमला निलये न

जनी करे । ॥ रमते यमुना शलिनवने विजय
सुगारि रथना । ५० । चनचय रुचिरे रचयति चिक
रे तरलित तरुणानने ऊरुवक ऊसमे चापला
सखमे रति पतिमृग कानने । २ । चटयति स
चने ऊच युग गगने मृगमद रुचि रूषिते । म
णिसर समलम तारक पटलम नखपद शिश

गी नृप जय देवके । ८ । रागिनी मधुमायवी जल
गो अनिल तरल कुवलय नयनेन तपतिनसा कि
मलय शयनेन ।। सखिया रमिता वनमा
लिना । ॐ । विकसित सरसि जल लित सु
खेन । स्फुटतिन सा मनसिज विशिखेन २
अमृत मधुर तर मृदु वचनेन ज्वलित न ।

त्वमणि गण सज्जिते । वहिरप वरणे यावक भ
रणे जनयति हृदियोजिते । ९ । रमयति सभ
शे कामपि सृष्टे त्वल हलथर सोदरे किमफल
वमसेचिर मिह विरसे वद सखि विटपो दरे । १०
रहरस भणने कृतहरि गणने मथरिषु पदसेव
के । कलिषुग चरिते नव सत उरितम् कवि

गी रुज मति करुणेन । १० । श्री जयदेवभाणिन व
गे चनेन । प्रविशन्त ह्री रयि हृदय मनेन । ८ । ११ ।
नाथातः सखि निर्हयो यदि शट स्तुहति ।
किं ह्यसे । स्वच्छेद स्वद्रवत्वमः सरमते किं
तत्र ते ह्यसौ । पश्याय प्रिय सेगमाय दयित
स्या कृष्ण माणे गुणै रुक्मेदार्ति भया ।

सा मलयज पवनेन । ३ । स्थल जल रुद्र रुचि
कर चरणेन । लक्ष्मि नम्रा हिमकर किरणेन
४ । सजल जलद समुदय रुचिरेण । दहनिन
सा हृदि विरह भरेण । ५ । कनक निकष रुचि
शुचि वसनेन । ससिनिन सा परिजन हसिनेन
। ६ । सकल भुवन जनवर तरुणेन वहनिन सा

गी
गो

ॐ । प्रथम समा गम लज्जितया पट्ट चाट्ट
शतै रज्ज कूले । मृड मधुरस्मित भाषितया
शिथिली कृत जवन उकूले । २ । किसलय
शयन निवे शितया चिर मुरसि समै वशया
ने कृतपरि रेभणा चेवनया परिरम्प कृताथर
पाने । ३ । अलस निमीलित लोचनया पुलकाव

दिव स्फुट दिदेचेतः स्वये यास्याति । ४२ रागि
नी मथुमाथवीनाल । निभृत निकुंज गृहे
गजया निशि रहसि निलीय वसेते चकिन वि
लोकित सकल दिशारति रभस वशेन हसेते
। ॥ सखि हे केशि मदन सुदारम । रमय मया
सह मदन मनोरथ भावितया सविकारे ।

गो
गो
कच ग्रह चैवन दाने । ५ । रति सख समय रसा
ल सया दर मुकुलित वदन सरोजं निखर निष
तित तचलतया मधुसूदन मुदित मनोजे ० श्री
जयदेव भणित सिद्धमति शाय मधु रिषु निधुवन
शीले । सख मुक्केदित राधिकया कथित वित नोत्त
सलीले ८ दृष्टि व्याकुल गोकुला वनवशा दुहुन्यगो

लि ललित कपोले । अमजल शकल कलेव
र यावर मदन मदादिति लोले । कोकिल कल
रव कूजितयाजित मनसिज तेव विचारे अथ
ऊसमाऊल ऊतलया नरव लिखित चनस्तन
भारे । ५ । चरत रणित मणित् पुरया परि शूरि
त सरत विताने । सुखर विश्वेवल मेखलया स

गी० ये । ४४ रागिनी मधुमाथवीताल । रजनिज
गी० नित गुरु जागर राग कषायित मलसनिमेषेव
हन्ति नयन मञ्जु राग मिवस्फुट मुदित रसाभिनि
वेशो । । । याहि माथव याहि केशव मावदकै त
व वादे ना मञ्जु सर सरसीरुह लोचन या नवह
रति विषादम् । अ० । कञ्जल मलिन ।

वर्द्धने विश्रद्धलव सेदरीभि रथिका नेदाचिरेचे
वित्तः दर्पेणैव तदर्पिता धरतटी सिंह मुद्रो
किन्तो वाङ्मर्गो यत्तनो स्तनो तन्भवतः श्रेयोसि
कंसदिषः ५३ अथ कथमपि यामिनीं विनी
यस्मर शर जर्जरितापि सा प्रभाते । अननय वच
तम्ब देत मये प्राणत मपि प्रिय माह साभ्यस्त

गी. यत्नीव वहि मेदन दुम नव किसलय परि वारे
गो. । ५ । दशान पदेभ दथर गत सम जनयति चे
नसि विदे । कथयति कथ मथ नापि मया सह
नव वपुरेत दमेदे । ५ । वहि विवमलिन तरेत
व क्लृप्त मनोपि भविष्यति नूनम् कथ मथ ।
वेचयसे जनु मनु गतम् सम शरज ।

विलोचन चेतन विरचित नीलिम रूपे । दशन
वसन मरुणो नव कल तनोति तनो रत्नरूपे
२ वष रत्न हरति तवस्मर संगर विरन विरल
त रेवे । मरकत शकल कलित कल धौत ।
लि पेरिव रतिजय लेखे ३ चरण कमल गल
दलक क सिक्त मिदंतव हृदय मुदारे । दर्श

गी
३०

पादालक्त कुरित मरुणा योनि हृदये समाय प्र
त्यात प्राणाय भर भंगेन किञ्चन त्वदा लोकः ।

शोका दपि किमपि लज्जो जनयति । ४५ । पद्मा
प्रयो धर तदी परि रेभ लग्न काश्मीर सुदिन सुरोम
धु सुदनस्य । व्यक्ताचुराग मिव विलद नंगा विदसे
दोबुधर मनु शर यत्त प्रियेवः । ४६ । अज्ञाने मरुणा

चर हनम् ६ अमन्ति भवानवला कवलाय व
नेषु किमत्र विचित्रे । प्रशयन्ति एतनिकै ववध
वध निर्दय बाल चरित्रे ७ श्रीजय देव भणितर
ति वेचिन्त विरित्त युवन्ति विलापे । शृणुमदा
मधुरं विबुधा विबुधालय नोपि उदाये ८ । १५
तवेदे पश्यन्ताः प्रसर दन्तगाम्बहिरिव प्रिया

गी० रंभे विधेहि विधेयताम् । ४८ । सुग्ये विधेहि म
गो० यि निर्दय दत्त देश दोर्वलि वंथ निविडस्तन ।
पीडनानि चेडित्त मेव सुदमेचय पंचवाण चे
शल कोउ दलनादसवः प्रयोत्त । ४९ व्याय
यतिवृष्ठा मोने तन्निप्र पंचय पंचमेत रुणि मथुला
पैरुत्तापे विनोदय दृष्टिभिः सुसुति विमुक्तीभावताव

शेषवशा ममी मनिः खास निस्सह सुखी सम
खी सुपेय सचीउ मीदित सखी वदने दिनाते
सानेद गङ्गद पदे हरि दित्वाच ५० परि हर कृता
तेके शेकान्तया सतते चनस्तन जवनयाका
नो स्वान्ते परानव काशानि विशानि वितनोर
मो ययो नकोपिममोतरे प्राणयिनि परीरेभा

गी नानलोदहति सम मान संदेहि मुख कमल मथया
गो ने ॐ । सत्यमेवासि यदि स्रदति मयि कोपिनी
दहि खर नयन शरचाते । वटय भुज बेथने जन
यरदावेउने येनवा भवति सखजाते २ तमसिम
मभूषणे तमसि समजीवने तमसि समभव जलधि
रत्नमभवत भवतीहमपि सतत मनुगोपिनी तत्र

द्विभुवन भुवनो स्वय मतिशय स्त्रिय भुग्ये
प्रियोय भुवस्थितः ५० रागिनी मधुमाधवी ना
ल वदसि यदि किंचिदपि दत्त रुचि कौमुदी ह्य
नि द्यति मिर मति चोरे । स्फुर द्यर सीधवे न
व वदन चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरे । प्रिये
चारुशीले भुवनमपि मानमनिदाने । सपदि मद

गी० कमल गोजन म्भ म हृदय रेजने जजित शक्ति
गो० गयरभागे । भण मसृण वाणि कर वाणि चर
ण हये सरसलसद लक्तक रागे । ६ । स्मर गर
ल विउने मम शिरसि मेउने देहि पर पलवसु
दारं । जलित मयि दारुणे मदन कदना नलो ह
न तउपाहित विकारं । इति चटुलचाटुचारु मुरवैरिणे

मम हृदय मति यत्ने ३ नीलनलि नाभ मपि न
नितव लोचने थार यति कोक नद रूपे । ऊस
म शरवाण भावेन यदि रेजयसि कल मिदमेत
दत्र रूपे ५ स्फुरत् ऊच ऊभयो रूपरि मणि मेज
री रेजयत् तव हृदय देशे । रसत् रसनापि तवच
न जवन मेउले घोषयत् मन्मथ निदेशे ५ स्थल

गी०
गो०

विश्वेस पुष्पा युथः ५। हृशौ तव मदाल सेवदन मिड
सेदीपने गान्ति जेन मनो रमा विजित रंभ मुरुदये
रति स्रव कलावती रुचिर चित्र लेखि अवा वहे
विबुध यौवने वरुसि तन्नि एषी गता ५। अपल वेधन
रणो गत रेगितानि वाणा गुणः अवण पालि रिनिम
रेण तस्या मनेग जय जेग मदेवताया मस्त्राणि निजित

राधिका मयि वचन जानते । जयति पद्मावती २
मया जय देव कवि भारती भणित मति शान्ते ६
१६ बंधक युति बोधवो यमधरः स्त्रिया मयक
हविः गेते चेष्टित कालि नील नलिन श्री मो
चने लोचने नासान्तेति निल प्रसून पदवी ऊं
दाभ देति प्रिये प्रायस्सन्नाह सेवया विजयते

गी
गो

उवेण ससुद्धनः श्रीमद्गोपालकथनिः ५५ तामस्य
मन्मथविन्नो रतिरस भिन्नो विषाद सम्पन्नो । श्रुति
नित हरि चरितो कलहान्नरिता सुवाच रहः सर्वो
५६ । स्त्रिये यत्परुषा सि यत्पणमनि स्तथासि
यद्वा गिणि देशस्था सि यत्तन्मवे विशावन्नो या
तासि तस्मिन् प्रिये । तद्युक्ते विपरीतकारिणि


जगोति किमर्थितानि । ५३ । भूवापे निहतः क
दात्त विशिखो निर्मातु मर्म व्यथो श्यामात्मा ऊ
दितः करोतु कवरी भारोपि भारोद्यमे । मोहेनाव
द येव तन्नि तनुता त्विवाथरो रागवान् सहनः
स्तन मंडलस्तव कथे प्राणै मर्म क्रीडति ५४ ।
मानिनी मान विद्ये सदत्तो जयति सोप्रते म

गी
गो

ऊरुषे ऊच कलशे । १ । कतिन कथित मिद मत्र
षद सचिरे । मायारि हर हरि मन्नि शय रुचिरे
किमिति विषीदसि रे दिषि विकला । विहसति
युवति सभा तव विकला । ४ । जनयसि मन ।
सि किमिति गुरु विदम् ॥ शृणु मम वचन
मनी हिन मेदम् । ५ । हरि रूपयान्न वद

नव श्री विर चर्वा विषे शीतो सुलयनो हिमेद्रनः
वहः क्रीडा सुदो यातनः ५० ॥ रागिनी मथुमाय ।
वी ताल ॥ हरि रभि सरति वहति मृड पवने
किम पर मथिक सखे सखि भवने ॥ १ ॥ मा
यवी माऊरु मानिनि मानमये । अ० । ताल
फला दपि गुरु मति सरसे । किमु विफली ।

गी मा निलो विष मिव स्यादशिम यस्मिन् उनोति म
गो नो गते । हृदय मदये तस्मिन् नेव पुनर्वलनेव ।
लान् ऊबलय दृशा स्वामः कामो निकाम निरे
कशः । ५८ । गणायति गुणग्रामे आमे अमा द
पिनेहने वहति च परि तोषे दोषे विमुंचति ह्य
तः शुवतिषु वलरक्षो कृक्षो विहारिणि मो



नवम् मधुरे । किमिति करोषि हृदय मति वि
धुरे । ६ । सजल नलिन दल शीतल शयने
हरि मव लोकय सफल्य नयने । ७ । श्री ज
य देव भणित मति सलिते । सख यत्न रसि
क जने हरि चिरिते । ८ । १० । श्रीरायिकाजी
के वचन रिशरिव सखी सखा सोयं सखी वहि

गी रुचि मन नयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षी गतवन्ति क
मो तवेषे केशवे कुंजशय्यां रचित रुचिर भूषो दृष्टि
मोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादो कापि राधोज
गा ॥ ६१ ॥ सा मो दक्षति वक्षति प्रिय कथो य
त्वेग मा लिंगनैः प्रीतिं यास्यति रस्यते सखि
समा गतेति चिन्ता कलाः । सत्तो पश्यति वेपते

विना पुनरपि मनो वामे कामे करोति करोमि
किं ५५ श्रीतिवस्तुत्तु तो हरिः कुवलयया पीडेन
साधे रणे । राधा पीन पयोधर स्मरण कृत
कुमेन सेभेदवान् । यत्र स्थिति मीलति त
ए मथ दिप्रे दिपे तत्त्वणान् । के सस्यालम
भुजित मिति व्या मोह कोलाहलः । ५० । स

गी. रम्योमि सारक्षणाः ६३ आश्लेषा दनु चंबना दनुनलो
गी. लोवादनु स्वान्तज प्रोदोथा दनु से अमा दनुरता रं
भा दनु प्रीतयोः । अन्यान्ते गतयो अमान् मिलि
तयोः संभाषणौज्ञानतो देयनो रिह कोन कोन
तमसि वीश विमिश्रो रसः । ६४ । अक्षणे निदि
पदे जने अवणयो स्नापिबु गुब्बावली मूर्द्धिषण

पुलकयन्ता नन्दति स्विद्यति प्रत्यङ्गच्छति मृ
र्क्षति स्थिरतमः पुञ्जे निर्जुजे प्रियः । ६१ । त्व
द्वाम्ये न समे समय मथुना निगमोश्चरन्ते गतो
गोविन्दस्य मनो रथे नच समे प्राप्ते तमः सो
दतो कोकानो करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा
मदभार्यना तन्मग्ये विफलं विलंबन मसौ

गी त्वेमहेमनिकषो पलतो ननोति । ६६ । रागिनीम
गो युमायवीताल विरचित चाट्ट वचन रचने चरणे र
चित प्रणिपाते संप्रति मेचलसी मनि केलि शय
नमनुयाते । सुगये मधु मयन मनुगत मनु सर राधि
केअ । चन जवन लन भार भरे दर मय्यर चर
ण विहारे । सुखरित माणि मेज्जीर सुपैदि विथेदि

म सरोज दाम ऊचयोः कस्तूरिका पत्रके ।
धूर्तनामभि सार सत्वरहदो विषड्-निकेजे
सविधोत्तनील निचोल चारु सदृशो प्रत्येग
मालिगते । ६५ । काश्मीर गौर वपुषा मभि
सारिकाणो मावद्ध रेख मभितो रुचि मेज
रीभि । पततमाल दल नील तमे तमिश्रेत

गी
गो

सूचित हरि परिरंभे । एव मनोहर हार विमल ज
लधार मसंज्वल जंभे । ५ । अधिगत मखिल सावी
भिरि दंतववपु रपि रति राग सजे । चेदि रागित
रशाना रव डिडिम मभि सर सरस मलजे ६ स्म
रशारसम सुविन सावी ममलेख करेण मलीले ।
चल वलय कणितै रव वोथय हरि मपि निजगतिशी

मराल विकारे । २ । श्याम रमणीय तरंतरुणी
जन मोहन मधुरिषु रावे ऊसम शगसन शास
न वेदिनि पिक निकरे भजभावे । ३ । अनिल
तरल किसलय निकरेण करेण लतानि ऊ
रेवे प्रेरण मिव कर भोरु करोति गति प्रति
मुच विलेवे ४ स्फुरितमनेग तरंग वशा दिव

गी प्रसन्नवृत्ति मूर्च्छति स्थिरतमः सुजे निजंजे प्रियः
गो ॥ ६६ ॥ रागिनी मधुमाधवी ताल । रति सख सा

वेगात् मभि सारे मदन मनो हर वेधे । नज्जु नि
ते विनि गमन विलेखन मनु सरते हृदये शो ।
धीर समीरे यमुना तीरे वसन्ति वने वन माली
गोपी पीन पयोधर मदन चंचल कर युगशीली

ले १०। श्री जय देव भणित मधुरी कृत हारु
दा सितवामे । हरि विनि हित मनसा मधि निष्ट
त कंद तटी मविगामे । ८ । ९ । सामोदक्षति व
क्षति प्रियकथो प्रत्येगमालिगनैः श्रीतिंयास्य
ति रंस्पते सविस्समागतेति चिंताकुलः । स
त्वाय श्यतिवेपते पुलकयत्पानंदति सिद्यति

गी
गो

ति मिर पुंजे शील्य नील निचोले । ४ । उरसि सु
गरे रूपहितहारे चन इव तरल बलाके तरि दिव
पीते रति विपरीते राजसि सकुत विषाके । ५ ।
विगलित वसनं परिहृत रशने चटय जवन स
पि थाने । किसलय शयने पेकज नयने निधि सि
व हर्ष निथाने । ६ । हरि रभि मानी रजनि रिदानी

अ० । नाम समेते कृत संकेते वादयते मृड वे
एते बद्ध मनुते तनुते तनु संगत पवन चलित म
पि रेणो । २ । पतति पतत्रे विचलेत पत्रे शोक्ति
भवउपयाने । रचयति शयने सचक्ति नय
ने पश्यति तव पन्थाने । ३ । सखर मथीरंजमे
जरी रिषु मिव केलि सलोले चलसखि केजे स

गो. त्वन्ती कथं मयि रहः प्राप्ता मेगै नरंग नरंगिभिः

गो. समन्वि सभगाः सत्ताम्यथ त्वयैव कृतार्थता ।

म. १६० । शरावली तरल कोचन कोविदाम मे

जीर केकणा मणि युति दीपि तस्य द्वारे निकृज

निलयस्य हरिं निरीक्ष्य श्रीशरवतीम् मथ स

खी निजगाद शयाम् । ६८ । शशिनी ।

मिय मपियानि विरामे । ऊरु मम वचने सत्तर
रचने श्रव मथ रिषकामे । १० । श्री जय देव हू
त हरि सेवे भणानि परम रमणीये । प्रमुदित
हृदये हरिमपि सदये नमत सकृत् कम नीये
। ८ । ११ । समय चकिने विलस्येन्ती दृशौ निमि
र पथिप्रति रुत मुद्गः स्थित्वा मेद पदानि वित

गी० पवन सरभि शीते । विलस रति वलित ललि
गो० तगीते । ५ । वितन वद्ध वलिनव पल्लवचने ।
विलस चिर मलस पीन जचने । ५ । मथुमुदित
मथुप कुल कलित रावे विलस मदन रससभा
वे । ६ । मथुर तरणिकनिकरनि नद सुखरे । विल
स दशन रुचि रुचिर शिखरे । ७ । विहितपद्मा

मथ माथवी ताल । मेजतर ऊँजतल कलि स
दने विलस रति रम सह सित वदने ।। प्रविश
राथे माथव समीप मिह । ५ । नव भवद शोक
दल शयन सारे । विलस ऊँच कलश तरल
हारे । २ । ऊँसम चय रचित अचि वास गोहे वि
लस ऊँसम ऊँसमार देहे । ३ । चल मलय वन

गो. सामियाहिराथा मनुनय मदचने चा नयेथाः
गो. । इति मथु रिपुणा साखी नियुक्ता स्वय मिद मे
न्य पुन जगादराथो । १०० । त्वोचितेन चिरेवद्वे
यमति आत्तो भूषो तापितः केदर्येणच पात्र
मिच्छति सथा सेवाथ विवा थरे । अस्यो कन्नाद
ले ऊरु द्वाण मिद भूक्षेय लक्ष्मी लवकीते

वती सख समाजे । भणिति जयदेव कवि राज
राजे । ८ । साक्षा नन्दपुरन्दरादिदि विषहृदैरमे
दा दादा दानये मुकुटेन्द्र नील मणिभिः सेद
शितेन्दीवरम् । स्वच्छन्द मकरन्द सेदर गल
न मन्दा किनी मे उरं श्री गोविन्द पदारविन्दम
अम स्केदाय वन्दामहे । ९५ । अह मिह निव

गी० दोबु प्रसर यिव हर्षा अनिकरः । ७३ । भजनन्त्या
गो० लल्ल्यान्ते कृत कपट केरु निविहित स्मिते या
ते गेहा हृदिरव हिताली परिजने । प्रिया संप
शेत्पाः स्मरशर समा कृत सभगे सलज्जाया
लज्जा बागम दिवहरे मृगदृशः । ७४ । रागि
नी मथमाथवीताल । राधा वदन वि ।

दास द्रवोप सेवित पदं भोजे कृतः संश्रमः । ११
साससाध्यस सानंद गोविंदे लोल लेखना सि
ज्ञान मंजु मंजीरं प्रविवेश निवेशनम् । १२ । अति
कम्पा योगे अवगायथ पर्यन्त गमन प्रवासे नै
वाक्षणे स्तरल तर तारम्यति तयोः । तदानीं
राधायाः प्रिय तम समालोक समये पणत स्वे

गी
गो

वित्त मिव यमुना जल धरे । २ । श्यामल मृडल
कलेवर मेडल मथिगत गौर डकले नील न
लिन मिव पीत पराग पटल भर वलरित सु
ले । ३ । तरल दृगंचलचलन मनोहर वदन ज
नित रति रागे । स्फट कमलोदर विलित बिज
न युग मिव शरदित अगम । ४ । वदन क

लोकन विकसित विविध विकार विभेगे । जल
निधिमिव विधु मंडल दर्शन तरलित त्वेग तरेग
॥ हरि मे कर सेचिर मभिल वित्त विलासे सा
द दर्श गुरु हर्ष वशा म्बद वदन मनेग विकामे
॥ अ० ॥ हार ममल तरतार सुरसि दयते परि
लेख्य विहरम् ॥ स्फट तर फेन कदम्ब करे

गी
गो
केलि कला भिरथीरे । मणि गण किरण समूह
समजल भूषण सभग शरीरे । ७ । श्रीजयदेव भ
णित विभव दिगुणी कृत भूषण भारे । प्रण स
न हृदि विनिधाय हरिं सचिरे सकृन्नोदय सारे
। ८ । १ । गतिवति सखी वंदे मेद त्रया भव नि
भर सर पर वशा कृतस्फी तस्मि तस्मापि ।

मल परि शीलन मिलित मिहिर सम ऊँडल ।
शोभे । स्मित रुचि ऊँसम सुसुल सिता थरप ।
लव कृत रति लोभम । ५ । शशि किरण बु
रितो दरजलथर सुंदरस ऊँसम केशो तिमि
रोदित विथु मंडल निर्मल मलयज तिलक
निवेशे । ६ । विपुल पुलक भर देन रिते रति

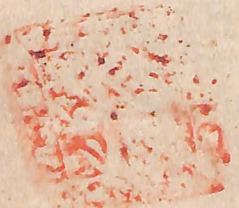
गी गायण मन्त्रगत मन्त्रसर गायिके । अ० । कर कम
गो लेन करोमि चरण महमा गमिता सि विहरेत्
ए सुप ऊरु शयनो परिमा मिव नृपुत्र मन्त्रग
ति शूर । २ । वदन सथानिधि गलित ममृत
मिव रचय वचन मन्त्र कूले । विरह मिवापन
यामि पयोधर रोथक सुरसि उकूले । ३ ।

नाथराम । सरसमलसे दृष्टादृष्टा सुदुर्लभ पल
व प्रसर शयने निद्रिप्राप्ती सुवाच हरिः प्रि
यो । ७५ । रागिनी मधुमायवी ताल ॥ कि
शलय शयन तले ऊरु कामिनि चरण क
मल विनिवेशे । तव पद पल्लव वैरि पराभव
मिदमनु भवत स्रवेशे । १ । क्षण मधुना ना

गी
मो

रशना गुण मनु गुण केदविनादम् । अति गुण
लेपिकरुत मम शमय चिरादव सादम् । ६ । मा
मति विफल रुषा विफली कृत मव लोकित
मथनेदम् । मीलति लज्जित सिवनयने तव वि
मविरज रतिवेदम् । ७ । श्री जय देव कवेरिदम्
नु पद निरा दित मथ रिष मोदम् ॥ जय ।

प्रिय परिवर्भाण रमसवलित मिव पुलकित म
नि उवापम् । मधुरसि कच कलशे विनिवेशय
शोषय मनसि ज तापम् । ५ । अथर सथारसमुप
नय मामिनि जीवय हृतमिव दासम् । त्वयि
विनि हितमनसं विरहा नल दग्ध वपुष म ।
वि लासम् । ५ । शशि अवि सुविरय मणि



गी
गो

न कपोल पुलके मीनकार थारा वशा इवत्ता
कलकेलि काक विकसहेना अथौ नाथरं साक्षी
न क्रम पयोथरं भृशपरि खेगान् करंगीदृशो
दूषोत्त कर्ष विशुक्त निः सहजतो र्थन्यो यय ।
ताननम् ॥ ७७ ॥ दोभ्यो सेयमित्तः पयो थर
भरे एण पीडित्तः पाणिजै राविदोद ।

नत रसिक जनेषु मनोरम वति रसभाव वि
नोदम् । ८ । ११ । प्रसहः पुलको ऊरेणानिविश
स्त्रैर्धैर्नि मेघेण चक्रीश कृत विलोकिने थरस
था पानेकशानर्मभिः । आनेदाभि गमेन म
न्मथकला बुद्धेयि यस्मिन्नथ उद्भूतः सतयोर्व
भूव स्रजः रेभाः प्रियेभावकः ७ मीलहृष्टिमिल

गी.
गो.

लिरुत्कमिने वक्षोन् मीलिने मन्ति पौरुषः रसः
स्त्रीणोक्तः सिध्यति । ५५ । तस्याः पादल पाणिजो
किन्तुरो निद्रा कषायेदृशौ । निर्हेतो यरशोभि
मा विललिता सस्तसजो मूर्धजाः । कोचीदमद
रस्योचल मिति शान्तिवातैर्दृशो रेभिः कामश
रैस्तदुत्तमभूयत्तमनः कीलिने ८० बालोलाः केश

शनैः क्षत्ताथरपुदः ओणी तटे नादतः हस्ते
ना नमितः कचेथर मथु स्पेदेन समोदितः
कान्तः कामपितृभि मायतदहो कामस्य वामा
गतिः ५८ वामोकेरन्तिकेलिसंक्रसरणा रेभनया
साहस प्रायेकान्नजयाय किं उपरि प्रायेभि यन्मे
अमात निस्पेदाजचनस्यत्नी शिथिलिता दोर्व

गौ स्वाधीनभारतका ८१ इति मनसा निगदन्ते सरतो
गो ने सानितोने विजोगी राधा जगाद सादर मिद ।
मानन्देन गोविन्दम् । ८३ । रागिनी मधुमाधवी
ताल ऊरु यउनेदन चेदन शिशिर जरेण करे
ए पयोधरे । मृगमद पत्र कमत्र मनो भव मेग
ल कलश सहोदरे । निज गाद सायउ नन्दने श्री

पाश स्तरलित मलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ ह
ष्टविंशथर श्रीः ऊच कलश रुचा हारिता हार
यष्टिः कोची कोविद्धताशा स्तन जवन पटे पा
णिना व्यायः सद्यः पश्येती सत्रपे मान्नटपि वि
ललित हृग्धरेयत्युनोति । ८१ । अथ कोते रतिश्री
तमपि मेरुन कोत्तयानिज गाढ निरावाधा रथा

गी
गो

वे जित कमले विमले परिकल्प्य नर्मजन कम
लकेश्वरे । ४ । मृग मद रस ललिते ललिते ऊरु
निलक मलिक रजनीकरे । विहित कलेक क
लेक मलानन विश्रुति अमशीकरे । ५ । मम
रुचिरे विकरे ऊरुमानद मानसजयजचामरे । ६
निगलिते ललिते ऊरुमा निशिते निशिते कशमरे

इति हृदया नंदने । ३५० । दथर चंवन लोचिन्नक
जल मुञ्चलय प्रियलोचने अलि कुल गेजने मे
जन के रति नायक मोचने । १ । नयन करंग वि
का सिनि वासकरे अफनि मेउले । मनसिज पा
श विलास करे अभवेश निवेशय केउले । ३ ।
अमर चये रचयेत सुपरि रुचिरे सचिरे ममसेसु

गी
गो

कोची मेचसजा कवरीभरं कलय वलय अणी
पाणोपदे ऊरु नृपरा विनिनि गदितः प्रीतःपी
तो वरोपि तथा करोत । ८५ प्रातर्नील निचोल
मच्युतसुरा सेवीत पीतांशुके राधायाश्चकिने
विलोक्यहसिति स्वरं सखी मेउले व्रीडा चेचल मेव
ले नयनयो राधाय राधानने स्वरं स्मेरसखोवृजोस्त

। ६ । सरसचने मम शोवर दारण वारण के
दरे । मणि रशना वसना भरणानि शुभाशय
वासय सेदरे । ७ । श्री जय देव वचसि जयदे ।
सदये हृदये करुमेउने हरि चरण स्मरण म
त केत कलि कलष जरावेउने । ८ । रचय ऊच
योः पत्रे चित्रे करुष कपोलयो र्घट्य जचने ।

गी
गो

तेसस्य वंशोद्धर कीर्तिस्थान कृता वधान लल
नालदेणा केदलिताः ससुग्य मथुरे राधा मुवे
नौ सथासारेवो मथुसूदनस्य ददत्तदेमे कदादो
मयः । ८७ । ८८ । रागिनी मथुमायवीताल ॥

सेचर दथर सथा मथुरथनि सुविरित मोहनवशे
चलित ह्योचल मौलि कपोल विलोल वसेते ।।

जगदा नंदाय नंदात्मजः । ८५ । पर्येकी कृतमा
गनाय कफण श्रेणी मणीनो गणो संगोत प्र
तिविंब सेवलनया विशदिय प्रक्रियाम् । पा
दंभोरुह थारि वारिधि सत्ता मक्षणे दिहत्तः श
तैः कायव्यूह मिवाचर नृपचिन्ती भूतोहरिः पा
तवः । ८६ । निर्यक केद विलोल मौलि तरलो

गो० विपुल पुलक भुजपल्लव वलयित वल्लव शुवर्तिस
गो० हस्ते । कर्चरणो रसि मणिगण भूषण किरण
विभिन्नत मिसे । ५ । जलद पटल चलदिउवि
निन्दक चेदन विउल्लाटे । पीन पयोधर परिस
र मर्दन निर्दय रुदय कणाटे । ५ । मणिमय मकर
मनोहर ऊँडल मेरित गेउ सुदार । पीत वसन

रासे हरी मिह विहित विलासे । स्मरति मनो
मम कृत परिहासे । ३० । चेदक चारु मयराशि
विदक मंडल बलयितकेशे । प्रचर पुरंदर यत्र
रत्र रंजित मेडर मुदित सुवेशे । ३१ । गोप कदेव
निनेववती सखचंबन लेखित लोभे । वंधजीव
मथरा थर पल्लव मुल सित स्मित शोभम् । ३२ ।

गी० विलास वेशमन्त्र भुवलिमदलवी वंदोत्सा
गो० रि हगोतवीक्षित मति स्वेदादगोदस्थले । मासु
दीक्ष्य विलज्जितस्मित स्रथा सुग्याननेकानने
गोविंदे व्रज सेंदरी गाण ह्वने पश्यामि हृष्या
मिच ८८ येनमोहन मौलिह्वर्णा ननलन मंदारवि
सेसनःस्तथाकर्षण दृष्टि दृष्यण मद्वा मे ।

मनु मनि मनुज सदा सखवर परिवारे । विशद
कदेव तले मिलिते कलि कलष भयेशमयेते
मामपि किमपि तरेग दनेग दृशा मनसा र
मयेते । ७ । श्री जय देव भणित मति सेदरमो
हन मधुरिषु रूपे हरिचरण स्मरणे प्रतिसे प्र
ति पुण्यवता रूपम् ॥ ८ ॥ १५ ॥ हस्त सस्त

गी
गो

दाः परि शोध येन स्रथियः श्रीगीत गोविंदतः

५० । साधी साधीक चित्तान भवति भवतः शर्क

रे कर्करा सि दाने द्योतिकेता ममन मन्तम ।

सि क्षीर नीरे रसस्ते । माकेदे केद कोता थर

णितले गन्ध यच्छेति यावद्भावम श्रेणार सार

स्वत मय जय देवस्य विष्णुवचोसि ॥ ५१ ॥

त्रे करेगीदृशो दृष्यमानव दृयमान दिविष उर्वा
रुतः त्वापहो धंसः कंस रिपो व्यापो दृयतवो श्री
योसि वेशीरवः । ८५ । यज्ञोथर्व कला स कौश
ल मनु ध्यानं च यदैक्षवे यत् शृंगार विवेक त
त्त्व मपियत् काव्येषु लीला यिते । तत्सर्वे ज
यदेव पेरित कवेः क्लृप्तैक ता नात्मनः साने

वि-श
गी

सावनी चरण चरण वक्रवर्ती श्रीवासदेव रति
केलि कथा समेत मेते करोति जयदेव कविः प्रवेष्टे
२। यदि हरि सारण सरसे मनो पति विलास कला
सज्जन हले । मधुर कोमल कोत पदावली शृणु
तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचःपलव यत्समा प
तिथरः सेदर्भ शुद्धि गिरे जानीते जयदेव एव ।

१
अथ गीत गोविंद माह विभास रागाय ताल गीत ॥

२५ २म २ग २रे २ग २म २थ २नि २थ २म २ग २रे २ह
ॐ मे च मे डर मे वर खन भवः षण्मास्त माल ड

२म २थ २नि २ह २रे २ग २रे २ह २नि २थ २म २ग २रे
मे नक्त म्भीरु रये त्वमेव तदिमे राये गृहे प्राप

२ह २थ २म २ग २रे २ग २म २थ २नि २थ २म २ग २रे २ग
य। इत्ये नदति देशत अलितयोः प्रत्यध ऊज

२रे २ह २म २थ २नि २ह २रे २ग २रे २ह २नि २थ २म २ग
डुमे राथा माथ वयो जयेति यमना कलेरहः के

२रे २ह
लयः १ वाग्देवता चरित चित्रित चित सद्मा प

वि-श
गी

रणी धरणी किणी चक्रगारिष्ठे केशव धृत कच्छ
परूप जय जगदेशहरे २ वसति दशत शिखरे
धरणी तवलगना शशिति कलेक कलेवति म
रुना केशव धृत मूकरूप जय जगदेशहरे ३ त
वकर कमलमवरे नाव मद्धत म्पेगे दलित हिर
ण्य कशिपु तन भेगे केशव धृत नरहरीरूप जय

शरणाः श्लाघा उरुह इतः श्रेयावोत्तरसत्यमेव
रत्नै राचार्य गोवर्धन स्याद्दीकोपित विष्कतः
अतिथयो योयीक विद्वामपतिः ४ प्रलय प
योधि जले धृतवानसि वैदे विहित वहिच चरि
त्र मावेदे केशव धृत मीन शरीर जय जगदेश
हरे १ त्तिरिति विपुल नरेनव तिष्ठति स्पष्टे य

विश्व
गी

मत्तमौलि वलिरमणीये केशव धृत खण्डनि
रूप जय जगदीश हरे ७ वहसि वषाषि विशदेव
सने जलदाभे हल हति भीति मिलित यमनाभे
केशव धृत हलधर रूप जय जगदीश हरे ८ नि
दसि यत्त विथेर हह प्रकृतिजाते सदय हृदय द
शित पञ्चाते केशव धृत बृहशरीर जय जग

जगदीशहरे ४ क्लयसि विक्कमणे वलिमद्
त वामन पदनव नीर जतिज पावन केशव
धृत वामन रूप जय जगदीशहरे ५ क्षत्रिय रुधि
र मये जगदप गत पापे स्वयसि शमित भव
तापे केशव धृत भृगुपति रूप जय जगदीश
हरे ६ वितरसि दिक्षु रणे दिगपति कमनीये दश

वि-श
गी-

जयते वलि कलयते लज्जयते ऊर्वते पौलस्त्ये
जयते हले कलयते कारुण्य मातृत्वते स्नेहान्तर
जयते दशा कृतिकृते कल्यायतभ्येतमः ॥ ५ ॥
विभास रागास्य तालः । अतः कमला ऊच मेड
लघुत ऊडल कलित ललित वनमा जय जय देव
हरे ॥ १ ॥ अ- । दिन मणि मेडल मेडन भव विड ।

दीशहरे ५ म्लेच्छ निवह निथने कलयसि करवा
ले । धूमकेतु मित किमपि कया ले केशव धृत क
ल्कि शरीर जय जग दीशहरे १० श्री जय देव कवे
विदमदित मदारै । शृणु साविदे शुभदे भवसा
रे केशव धृत दश विथ रूप जय जग दीशहरे ११
वेदानुदरते जगान्निवहते भूगोलमहिभ्रते दै

वि-शा
गी जनक सुता कृत भूषण जित हृषण समर शमित
दशकंद जय जय देव हरे ६ अभिनव जलधर सेद
र धृत मेदिर श्री साविचेद्र चकोर जय जय देव हरे
७ श्री जय देव कवेरि देऊरुते सुदे मेगल मज्जल
गीते जय जय देव हरे दश सोला सभरेण विभ्रम
भृता सा भीरवान भ्रवा सभर्णे परिरभ्य निर्भर

नमति जनमानसहेस जय जय देवहरे १ कालि
य विषयरगेजन जनरेजन यड कुल कमल दि
नेश जय जय देव हरे ॥ ३ ॥ मधुसूर नरक विना
शान गरुडा सन सर कुल केलि निदान जय जय
देव हरे ॥ ४ ॥ अमल कमल दल लोचन भव मोच
न त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव हरे ॥ ५ ॥

वि-श
गी

णीश्यामल कोमलै रूपत यन्नैरनेगोत्सवेख
छेदे व्रज सेदरी भिरभितः प्रतेग मालिगितः श्रेया
रुसति मूर्ति मानिव मथौ मग्यो हरिः कीदति ॥
निशोत्सग वसहजेग कवल क्लेशादिवेशाचले
प्राले यस्तवने क्यान सरति श्रीविदशैलानिलः
किंचस्त्रिग्य रसाल मौलि मकुला मालीका हर्षोद

सुरः प्रेमोपया रायया साधुत्वददने स्रथामयमि
ति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजा उद्भट चेवितस्मित
मनो हारी हरिः पातवः ५ अनेक नारी परिवेभसे
भ्रमत्कारमनो हारि विलास लालसे मयारिमाया
उपदर्शयत्यसौ साखी समक्षे पुनराहराधिका १-
विशेषा मनोरंजनेन जनयन् नानेदमिदीवर अ

वि-श
गी

गोप वधू रत्न गायति काचिउदे चित पेचम रागाम् २
कपि विलास विलोल विलोचन विलन जनितम
नोजे थायति मग्य वधू रायिके मधुसूदन वदनस
रोजम ३ कापि कपोल नले मिलिताल पितेकि
मपि श्रुति मूले वारु बुबुवति नेव वती दयिते
पुलकै रत्नकुले ४ केलिकला ऊतके नच का।

या उन्नीलेति ऊरू रितिकलो तानाऽपिकावांगि
रः १२ विभासरागस्य तालः । वेदन चर्चित नी
ल कलेवर पीत वसन वनमाली । केलि चलन्म
गि ऊडल मेरित गोड युगसित शाली । हरि रिद्ध
मय वधुतिकरे विलासिनि विलसति केलिपरे
॥ ३५ ॥ पीत पयोधरभारभोगा हरि परि रम्य सरागे

वि-ग
गी

भणित मिदमद्भुत केशव केलि रहस्ये । वेदाव
न विधिने चरिते वित नोत्त सुभाति यशस्यम् द
विहरति वनेगथा सा थारणा प्रणये द्वौ विगालि
त निजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतामृतः । क्वचिदपि
लता केजे येजन्म भवत मेडली सखर शिखरे ली
ना दीना अवाच रहः सांवी १-केशविरपि सेसार

8

चिदमे यमना जल कले मेजल वेजल केजग
ते विच कर्ष करेण इह कले ५ करतल ताल तरल
वलया वलि कलित कल खन वेशे । शस रसे स
ह न्तप परा हरिणा सुवती प्रशशेसे ६ स्निष
तिका मपि रमयति कामपि रामो पश्यति सस्मि
न चारु परा मपरा मन गच्छति वामो ७ श्रीजयदेव

वि-श
गी

नातिभयेन १ हरिहरि हता दयतया गतासा ऊर्षिते
व। अ० । किं करिष्यति किं वदिष्यति सा विरे विरहे
ए किं यनेन जनेन किं मम किं सखित गद्रेण २
चित्तयामि तदा तने ऊर्दिल ऊकोप भरेण शोसा प
शमिवो परिश्रमता ऊले श्रमणेन ३ तामहे हृदि से
गता मतिशो भृशो रमयामि किं वनेन सदा मि

वासना वेधं श्वेतलो रायामा थाय हृदये तस्या जव
ज संदरीः ११ इतस्ततस्तु मनस्तथाधिकामाने
य वाणा व्रज विन्त मानसः कृतान्न तापः सकलि
दनेदनी तदन्त ऊजे निष साद मायवः १२ वि
भास रागासनाल १ मासिधे चलित विलो
क्य हते वधूतिवयेन सापराय तया मयान निवारि

वि.श.
गी

जय देव केत हरे रिदे प्रवर्णन किंउ विल्व समद्र
संभव रोहिणी रमणीत १८ ॥ पाणी मा ऊरु चूत सा
यक समे साचाप माये पय कीडा निर्जित विश्व
मूर्च्छित जना चातेन किं पौरुषे तस्याएव मृगी
दृशो मनसिज प्रेवत्कटाक्षा शुभा श्रेणी जर्जरि
ते मना गपि मनो नायापि संयुज्जते १९ हृदिवि

तामिह किं वृथा विलयामि ५ तन्निविन्नमस्तु
यथा हृदयेतवा कलयामि तन्न वेदमि कुतो गतामि
नते नते ननु यामि ५ दृश्यमेष श्रुतो गता गतमे
व किं विदयामि किंपुरे वश संभ्रमे परिरेभणान
दयामि क्षमता मपरं कदा पितवै दृशे न करोमि
देहि संदरि दर्शने मम मन्मथेन कुतोमि वर्णिते

वि-श
गी सीदति तव विरहे वनमाली। १५५ । दहति शिशि
र मयूरेवर मण प्रव करोति पतति मदन विशि
खे विलपति विकल तरोति। १६५ । धनति मधुपस
मूरे अवण मपि दधाति मनसि वलित विरहेति
शिरुज मय याति ३ वसति विपिन विताने न्य
जति वलित थामल दति थरणि शयने वद्ध वि

ला शाना शो नाये भजे गमनायकः कुवलय द
ल प्रेणी केटेन सागरल कतिः मलजय रजोने
दे भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहरत ह्य भोत्या नेया
कथा किमथावसि १४ विभास रागस्य ताल
वरति मलय समीरे मदनस्य निधाय स्फटति
कसम निकरे विरहि हृदय दल नाय १ सखि

वि-श
गी-
भरपरी रेभा सते वोक्कति ॥५॥ विकिरति मङ्ग-
सासा नाशाः पुरो मङ्गरी क्षते प्रविशति मङ्ग-
ऊजे येजे येजन्मङ्गर्वङ्गनाम्पति । रचयति म-
ङ्ग- शय्या मय्या ऊले मङ्गरी क्षते मदन कद-
न क्लान्तः कान्ते प्रियस्तव वर्तते ॥॥ ता-
निस्पृशी स्वावानि तेव तयला स्त्रिया दृशो ।

लपति तव नाम ४ भणतिक विजय देवे विरहि
विलसितेन मनसि रभस विभवे हरि रुदयन
सुकतेन ५ पूर्वयत्र समन्त्रया रतिपते रासा दि
ताः सिद्धये तस्मिन्नेव निजंज मन्मथ मन्त्रा ती
र्थे पुनर्माथवः ध्यायेत्वा मतिशे जपन्नपि
तवै बालाप मेरा वली भूयस्त्वत्कच केभति

विश
गी

स्य गमिता कोतश्चिरे चित्तयन्नन्तर्मयः मनो ह
रो हरत्तवः केशन्नवः केशवः २ यमना तीरवा
नीर निजंजै मन्दमास्थितम् । प्राह प्रेम भरोद्
आन्तमायवे रायिका सखी १५ वसन्ते वास
नी कसम सज्जगारै रवयै वै भूमन्ती कोतारे
वज्र विहित कृष्णान् शरणं प्रसेदे केदर्पज्ज

विभ्रमास्तदङ्गोवजसौरभे सचस्रथास्येदी गिर्ये
वक्रिमासाविवाथरमाधुरीति विषया संरोपिते
न्मानसे तस्यो लय समाधिहेतु विरह व्याधिः क
थं वर्तते १ साकृतस्मितमाकुलाकुल गलद
स्मिलमलासिते भ्रूवली कमलीक दर्शित भ
जा मूलार्ध दृष्टस्तनम् गोपीनान्नि भूतन्निरी

विश-
गी

नोरथ पथिक वधूजन जतिन विलापे । अलि
जल सेजल ऊसम समरु तिगजल वजल क
लापे । २१ मरु मरु सौरभ रभस वशे वदनव द
ल माल तमाले शुवजन हृदय विदारण मनसिज
नख रुचि किंशक जाले । मदन मरी पतिकनक
देउ रुचिके सर ऊसम विकासे । मिलत शिली

रजतित चिंता कुलतया बलदायां राधा सरस
मिद मूचे सहचरी । ललित लवेगलता परिशी
लनकोमल मलय समीरे । मथुकर निकर क
रम्बित कोकिल कुजित कुंज कुटीरे । विहरति
हरि विह सरस वसन्ते नृत्यति युवति जनेन समे
साति विरहि जनस्य उद्यते । ॐ । उन्मद मदन म

वि.श.
गी

सुकलता परिरेभाण सुकलित पुलकित चूने हे
दावत विणिने परिसर परिगत यमुना जल ए
ते श्रीजयदेव भणिते सिद्धमदयति हरिचरण
मदति सारे । सरस वसेत समय वर्णन मन गत
मदन विकारे । द । दर विदलित मली वलि चे
चत्प राग प्रकटित पट वासै वीस यन्का नना ।

मात्र पाटल पटल कृतस्मरन्त्या विलासे १४।
विरालित लेजित जगद्व लोकन तरुणा करु
णा कृतहासे विरहिनि कृतन केत मात्राकृति
केत किंदे तरिताशे ५ माथव का परिमलललि
ते नव मालति यात सरोथौ । मति मनसा मणि
मोहन कारणा तरुणा कारणा वेथौ ६ स्फुरदति

वि-श
गी उरा लोकलोकस्तव कतवकाशोकलनिका
विकाशः कासारो पवन पवनेभ्ये व्यथयति श्रीप
भाङ्गेगी शणितरमणीयानमुज्ज्वल प्रसूति श्रुता
नो सखि शिखरिणीये सखयति । २३ । निदति च
दन मिड करण मन विदति विदमथीरे व्यालति
लय मिलनेन गरल मिव कलयति मलय समीरे ।

ति । इह हि दहति वेतः केतकी गेय वेधः प्रसरद
समवाण प्राण वहेय वाहः २१ उन्मीलनमधुगे
थलव्य मधुप व्याधत चूतोऊर । क्रीडत्को कि
लका कली कल कलै रुझीणी कणी ज्वरः नीये
ते पथिकैः कथं कथमपि ध्याना वधान नृणा
ग्राम प्राण समा समा गम रसोलासै रमी वासरः २२

विश
गी

करोति ऊसम शयनीये ३ वहति च गलित वि
लोचन जलथर मानन कमल सदा रे विधुमिव
विकट विधु तद देत दलन गलिता स्तन थारे ४
विलिखित रदसि ऊरेण म देत भवेत म सम श
र भूते प्राणमति मकर मथो विनिधाय करे च
शरे नवचूते ५ प्रतिपद मिदमपि तिगदति माथ

माथवसा विरहे तवदीना मनसिज विशिखभ
या दिव भावनया नयिलीना । अ- । अतिरतनिप
तित मदन शयदिव भवदव नाय विशाले । स्वह
दय मर्मणि वर्म करोति सजल नलिनी दलजा
ले २ ऊसम विशिख शरतल्य मनल्य विलास
कला कमनीये । व्रत मिव तव परिरेभ साखाय

वि-श
गी

।द। आवा सो विपिनायने प्रिय साखी माला पि
जालायने । तापोपि अक्षितेन दावदहन जाला
कलापायने । सापित दिग्देहा देन हरिणी रु
पायने हा कथे के दर्पोपि यमायने विरचयन्
शाहल विक्रीडितो । २५ । स्तन विनि स्तित मपि
हार मदारेसा मनने कुशतन खिभाये रायिका

व नव चरणो पतिताहे । नयि विमले मयि स यदि
सुधा निधि रपि करुते तनदाहे ६ ध्यान लयेन प्र
रूपरि कल्प भवेत मतीव उद्योगे विलपति हसति
विषीदति चेचति मेचति तापे १० । श्रीजयदेव भ
णित मिद मयिके यदि मनसा नटनीयम् । हरि
विरहा कुल बलभ प्रवति साखी वचने पटनीये

विष्णु-
गी

कलयति विहितज्ञानाशनकले । ५ । तजति न
पाणि तलेन कपोले । बाल शिशुन मिव सायम
लोले द हरिरिति हरिरिति जपति सकामे । विर
ह विहितमरणो वनिकामे ० श्रीजयदेव भाणि
मिति गीतम् । सख यत्न केशव पद मयनीत
म् । ६ । सखा त्वरा देवत वैद्य ह्य त्वदेशे संगाम्य

विरहे तव केशव । ॐ । शर समस्या मणि मलय
ज पेके पशति विषमिव वषषि सशेके २ स्वसित
पवन मन्वपम परिणारे । मदन दहन मिव दह
ति सदाहम् ३ दिशि दिशि किरति मजल कणा जा
लम् । नयन नलित मिव विगलित नालम् ।
॥ ४ ॥ नयन विषय मणि किशलय नल्पम् ॥

वि-श
गी-

रसेज्वरा तरतनो राश्रये मस्याश्चिरेवेत अदन
चेद्रमः कमलिनी वितासु सेताप्यति किंत
दोतिरसेन शीतलतरे त्वामेक मेव प्रिये ध्याये
रुद्रसिस्थिता कथमपि क्षीणान्तणे प्राणिनि ॥
२० ॥ क्षणमपि विरहः प्रयत सेहे नयन निमी
लित विन्नया नयाते अस्ति कथमसौ रसा

तमात्रसाध्यो । विमक्तवाथो ऊरुषेन राथा सपैद
वज्रा दपि दारुणोसि । २५ । २५ । सारोमोचति श्री
त्करोति विलपत्यत्कम्यते तामति ध्यायत्युद्धम
प्रमोलति एतत्प्रयाति मूर्च्छत्यपि एतावन्त न नञ्
रे वरतन जीवेन्न किंतेरसात् सर्वेय प्रतिमप्रसी
दसि ततस्तुको न्यथा हस्तकः । २६ । २६ । केदप्येज्ज

वि-श
गी-

न रक्तो लता गृहे दृष्टा तच्चरिते गोविन्दे मनसि ज
मेदेसखी प्राह ॥ १४॥ १५॥ ॥ अग्रेषा भरणे कयेति व
दुशः पत्रेपि सेवारिणि प्राप्तेनाम्परि शेकते वि
तनते शय्यो विरे ध्यायति । इत्या कल्प विक
ल्प तल्प रचना संकल्प लीला शत व्याशक्ता
पि विना त्वया वर तन नैषा निशा नैषा ।

तु शाखोचिर विरहेण विलोक्य प्रसिद्धागो १२।
२२। राधा मय्य माखार विंद मथ्य हैलोक्य मौल
स्थली । नेपथ्यो चितनी रत्न मवनी भाग्य वता
गतकः । स्वकंद व्रज सेदरी जन मनसोक प्रदे
षश्चिरं केश धेसन धूम केतु रवत त्वोदेवकी
नेदनः ॥ १३ ॥ १२५ ॥ अथतो गत म शाक्तो चिर म


विश
गी

ॐ । त्वदीभि शरणं भवेत्तु वलेत्तु प
दाति कियेति चलेत्तु । २ । विहित विशद विष
किशलय वलया । जीवति पर मिह तव रति
कलया । ३ । मङ्गल लोकिन मेडल लीला मथ
विष रत्न मिति भन्वत शीला । ४ । त्वरित मयै
ति नकथ मभि सारे । हरि रिति वदति साखी

नि॥१५॥३॥ विपुल पुल कपालिः स्फीत सीतका
र मेतर्जनित जिडिमका कर्वाकले व्याहरेती तव
कि तव विथाया मेद के दर्प चित्ता रसजल निधि
मरता थ्यात लगता मरगादी ॥६॥३२॥ पश्यति
दिशि दिशि रहसि भवेतम त्वदथर मथुर मथ
नि पिवेतम् ॥१॥ नाथहरे सीदति यथा वासगदहे

वि-स
गी

न हृष्टि गोचर मितः सानन्द नन्दा स्पदम् राधा
या वचननन्द धरा माखान्नेदोतिके गोपतो गो
विंदस्य जयेति सायम तिथिः प्राशस्त्य गर्भाः
गिरः ३ अशोतेरेव कुलदा कुल वर्त्त पात सेजा
त पातक इव स्फुटलो वनश्रीः । हेदा वर्त्त त
१ मदीपयदे अजालै दिक् सेदरी वदन चंदन



मनवारे ५ स्मिष्यति चेवति जलथर कल्पे । हरि
रूप गत इति तिमिर मनस्ये । ६ । भवति विले
विति विगलित लजा । विलपति रोदति वास
क सजा । ७ । श्रीजयदेव कवेरिद मदिने । रसिक
जनेन ननामपि मदिने । ८ । किं विश्राम्यसि क
स भोगि भवने भोडीर भूमी रुहे । भ्रातर्यासि

विश-
गी

ए मेव वामताम् । तर्णजगत् प्राण विथाय माथ
दे प्रयेमम प्राण ह्यो भविष्यति ३० वाथो विथेहि
मलया तिल पेचवाणा प्राणात् गृह्णाण नगद्रे
पुनरात्र पिषे । किंते कृतांत भगिति क्षमया
तरेयो रेणाति सिंच मम शाम्पत् देह दाहः ।
॥ ३६ ॥ कथित समये पिहिरि रूहन् यथै व

विंङ् विंङ् ३४ प्रसरति शशथर विवे विहित विले
वेच माथवे विथरा विरचित विविध विलापेसा
परितापम् चकारोच्चैः ३५ विरह षोड् सरारि स
खावृज फति रयेति रयेनपि वेदना । विथर नीव
त नोति मनोभवः सहृदये हृदये मदन व्यथाम्
॥ ३६ ॥ मनोभवानेदन चेदनाति प्रसीदरे दत्ति

वि-श
गी

हरिमन्भवति कृतसुकृतकामिनी । ४ । अह
ह कलयामि वलयादिमणिभूषणे । हरिविर
ह दहनवहनेन वज्रदूषणे ५ ऊसमसुकमार
तनमतनशरलीलया । सगपि हृदि हेतिमा म
तिविषमशीलया ६ अह मिह निवसामिनग
णितवनवेतसा । स्मरतिमधुहृदनामामपिन

नेमम विफल सिद्धममल रूपमपि यौवने १ या
मिहेक मिह शरणे सखी जन वचन वेचिता ।
अ॥ यद्वन गमनाय निशि गमन मपि शील
तम् २ मम मरणा मेव वरमति वितथ केतना
कि मिह विसहामि विरहानल मचेतना । ३ ।
मामहह विधुरयति मधुर मधुया मिनी कापि

विश
गी

हरिः पातवः ३५ तत्किं कामपि कामिनी सभिस्त
तः किंवा कला कैलिभिर्वहो वेधुभिरेथ कारिणि
वनाभ्यर्णो किमुद्रास्यति । कोतः कोत मनामना
गपि पथि प्रस्थातमेवातमः संकेतो हतमेज वे
जललता ऊँजेपियन्नागतः ४० अथा गतो माय
व मेतरेण साखी मिये वीक्ष्य विषाद मूकाम्

चेतसा १०१ हरिवरणा शरणा जयदेव कविभार
ती १ वसत हृदि सुवति रिव कोमल कलावती
द १ त्वाम प्राण मयि खयेवर परोक्षीरो दतीरो
दे शंके सेदरि काल कट मपिवन मूढो म
शनी पति इत्ये ह्वे कथा भिरत्य मनसो विति
पवतो चले शया यास्तन कोरको परिमिलनेत्रो

वि-श
गी

विचल दलक ललिता ननवेद १ तदथर पानर
भस कृत तेद ३ चेचल ऊंडल ललित कपोला-
मलारित रशन जचन गति लोला ४ । दयति वि
लोकित लज्जित हसिता । वज्र विथ कूजित
रति रस रसिता ५ । विपुल पुलक पृथक्वे
पृथक्भेगा । स्वसित निमीलित विकसद न

विशोकमानारमिते कयायिजनार्हने दृष्टवदेतद्य
३।४१। विभासरागस्यनाल। १ स्वर समरो
चित्त विरचित वेषा गलितकसम दर विल लित
केशा।५। कापि मथरिषणा विलसति युवति
रथिकशणा।३०॥ हरिपरिरेभणा वलित वि
कार। ऊच कलशो परितरलित हारा ॥२॥

विश
गी

रमते यस्य नाशुलिनवने विजय मयारि रथ
ना । अ । चतचय रुचिरे रचयति चिजरे तद
लित नरुणानने ऊरुवक ऊसमेचपला स
विमे रति पति म्या कानने २ चटयति सचने
ऊच युग गगने म्या मद रुचि रूषिते । मणि
सद ममलम् नारक पटलम् नखपद शिशा

गो ॥ ६ ॥ अमजलकणा भरसभगा शरीरा ॥ परि
पति तोरसि रति रणा थीरा ॥ १० ॥ श्री जय देव
भणित हरि रमितम् ॥ कलिकलषे जनयत्
परिशमितम् ॥ ८ ॥ सम दित मदेने रमणी
वदने बुवन चलिता थरे म्हा मद तिलके
लिखितिस पुलके म्हा मिव रजनी करे ॥ ११ ॥

विशा
गी-

गि गगण एजिते । वहिर्य वरणे यावक भरणे ज
नयति हृदियोजिते । ६ । रमयति स्रभ्ये काम
पि स्रभ्ये खल हलथर सोदरे । किमफलमवसे
चिर मिह विरसे वदसति विदणे दरे । ७ । इह
रस भणाने कृतहरि शणाने मथरिष पदसेवके
कलिप्रग चरितम् नवसत उरितम् क ॥

भूषिते । ३ । जित विस शकले मृदुभुज युगले
करतल नलिनी दले । मरकत वलये मधुकर
निचये वितरति हिम शीतले । ४ । रति मृदु
जघने विपला पचने मनसिज कनकासने म
णिमय रशने तोरण हसने विकरति कृत वास
ने । ५ । चरण विसर्लो कमला निलये नावम

विश
गी

पवनेन । ३ । स्थलजल रुद्र रुचि कर चरणेन ।
लहति नसा हिमकर किरणेन । ४ । सजल
जलद समदय रुचिरेण । दहति नसा हृदि
विरह भरेण । ५ । कनकनि कष रुचि शुचि
वसनेन । अक्षिति नसा परि जन हसितेन
॥ ६ ॥ सकल भवन जन वर तरुणेन वह

विलम्ब जय देवके । ८ । विभास रागाण ता-
अनिल तरल कुवलय नयनेन नयनित सा कि
मलय शयनेन । ११ । सखिया रमितावन मालि
ना । १२ । विकसित सरसि जल लित मुखेन ।
सुदृढ तिन सा मनसिज विशिखित । १३ । अमृत
मधुर तर मृदु वचनेन ज्वलित नसा मलयज

विशा
गी

स्फुटदिदेवेतश्चये यास्यति ॥ ४२ ॥ विभासरा
यास्य नाल। ॥ निभस्त निजंज गृहे यातया
निशि रश्मि निलीय वसेते चकित विलोकि
त सकल दिशारति रभस वशेन हसतम् ॥
॥ २ ॥ सखिहे केशि मदन मदारम् ॥ रमय
मया सरमदन मनोरथ भावितया सविका

नित साकज मति करुणो न । १० । श्रीजयदेव भ
णित वचनेन । प्रविशत हरि रणि हृदय मनेन
८ । १३ । नायातः सखि निर्हयो यदि शठस्त्वह
ति किं ह्यसे । स्वच्छेदस्वद्व वल्लभः सख मने
किंतवने हृषणे । पश्याय प्रियसेगमाय दयि
त स्याकृष माणे शुणे रुक्कंठार्ति भय दित

विश
गी

ललित कपोले । अमजल शकल कलेवर याव
र मदन मदादिति लोले । कोकिल कलरव कू
जित याजित मनसि जतेत्र विचारे श्रय क्रममा
कल केतलया नरव लिखित चनस्तनभारे । ५
चरत रणित मणिन् प्रया परि हरित विता
नम् ॥ मावरावि श्रेवल मेवलया सक

१॥ अ॥ प्रथम समागम लज्जितया पट्टचाटु श
ते रत्नकुले । मृदु मधुरस्मित भाषितया शिथि
ली कृतजवन उकुले । २॥ किमलय शयन
निवे शितया विरमसि ममै वशयाने । कृत
परि रेभण चैवनया परिदभ्य कृता थरणे ।
॥ ३॥ अलस निमीलित लोचनया अलकावलि

विश
गी

ने विशुद्धलव सेदरीभि रयिका नेदाचिरेवेवितः
दोषोव नदर्पिता थरतदी सिधु र मये कितो वा
दुर्गो पतनो स्तनो त भवतः अयो सिके सहिषः ४३
अथ कथ मपि यामिनी वितीय स्मर शरजर्ज
रित्तापि सा प्रभाते । अत नय वचनम् वदे
त मये प्रणत मपि प्रिय माह साभ्य ह ।

चग्रहचैवनदाने। ६। रति साव समयरसाल सया
दर मज्जलित वदन सरोजे निस्सह निपतित नवल
तया मधुसूदनमदित मनोजे ७ श्रीजय देवभाणि
त मिदमति शय मधु विष निधुवन शीले सावसु
त्केदित राधिकया कथित वित्त नो तसलीले ।
८। दृष्टि व्याकुल गोकुला वनवशा उद्दृत्य गोवर्ध

वि-श
गी

बुवन विरचित नीलिम रूपे । दशान वसन म
रूपे तव कल तनोति तनो रन रूपम् ॥२॥
वप्र रन हरति तवस्मर सगर खवन खरत्न
रेखम् । मरकत शकल कलित कलयौत
लि पेरिव रति जयलेखे ॥३॥ चरण कमल
गल दलकक सिक्त सिंदे तव हृदय सदा

यम। ४४। विभास रागास्य ताल। । रजनिज
नित्यं गुरु जागर रागा कषा यित मलसनि मेघे । व
इति नयत मन रागा मिव स्फुट मरित रसाभिति
वेषे ॥ १॥ याहि माथव याहि केशव मावदकै त
व बादेता मन सर सर सीरुह लोचन यातव हर
ति विषादम् ॥ ३५ ॥ कजल मलिन विलोचन

वि-श
गी

हृते । ६ । भ्रमति भवानवला कवलाय वनेषु कि
मत्र विचित्रे । प्रशयति एतत्तिकै ववधू वय नि
देय वाल चरित्रे । १० । श्री जय देव भणित रतिवे
चित्त विदित्त प्रवति विलापे । श्ला सदा मथुरे
विबुधा विबुधालय तोपि दुःखपम । ८ । १५ ॥
नवेदे पश्येत्पाः प्रसरद्वरागस्वहि रिव प्रिया

३५

३५

वे। दर्शयती ववहि मेदन्तुम नव किसलय प
रिवारे ॥४॥ दशान पदेभ दधरगतस्मम जनय
तिचेतसि विदे। कथयति कथ मथ नापिमया
सह नव वपुते दभेदे ॥५॥ वहि रिव मलिनत
वेतव कस मनोपि भविष्यति नूनम् ॥ कथ
मथ वेचयसे जन मन गतम सम शरज चव

विश
गी

ष वशा ममी मतिः स्यात् निस्सह मांवी समवी
मयेन सवीड मीत्ति सवी वदने दिनेति सानेद
गहद पदे हरि विस्र वाच ४० परि हर कृता ते
के शैकान्त्या सतते चनस्तन जचनया क्रान्ते
खान्ते पयानव काशिति विशति वितनो र।
न्यो थन्यो नकोपि ममोतरे प्रणयिति परी

पादालक कुरित मरुणा योति हृदये ममाय प्रख्या
त प्रणयभरभेगेन कितव न्वदा लोकः शोका दपि
किमपि लज्जा जनयति । ४५ । पश्चा पयो थरत
टी परिरेभलग्न काश्मीरमद्रितमद्रितमरो म
भ्रमरदस्य वक्तानराग मिव विलदनेगविद विदो
व पूर मन पूरयत प्रियेवः ४६ अत्रोतरे मरुणा रो

वि-शु-
गी

हिमेचन मेवमो खय मतिशय स्त्रिय मयेषि
योय मपस्थितः ॥ ५० ॥ विभासरागय नाल ।
वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमदी इति
दति मिम मतिचोरे । स्फुरदथरसीथवे नव वद
न चेद्रमा शेचयति लोचन चकोरे । प्रिये चारु
शीले मेवमपि मानमतिदाने । सपदि मद नाद

रेभा रेभे विथेहि विथेयत्तो ४८ सुगये विथेहिम
यि निर्देय दन्त देश दोर्वलि वेथ निविउस्ततपीउ
नावि चेडित्तमेव सदमेवय पेचवाणा चेडाल कोउ
दलना दसवः प्रयोत्त ४९ व्यययति वृथा मौने
तन्विप्र पेचय पेचमे तरुणि मधु लापै स्तापम्
विनोदय टहिभिः समन्वि विमन्वी भावेत्ताव

विश
गी

मम हृदय मति यन्त्रे ३ नील नलिनाभ मपि तन्नि
तव लोचने धारयति कोक नद रूपे । कसम शर
वाणा भावेन यदि रेजयसि कसमिद मेतदवच
ये ४ स्मरत कच केभयोरु परिमणि मेजरी रेज
यत तव हृदय देशे । रसत रसनापि तव चन ज
वन मेडले घोषयत मन्मथ निदेशे ५ स्थलक

लोदहति मममान सदेहि सख कमल मधुपाने
। अ० । सत्यमेवासि यदिति मयि कोपिनी द
हि खर नयन शरचाते । वटय भज वेधने जनय
रद विदने येनवा भवति सखजाते २ त्वमसि मम
भूषणे त्वमसि मम जीवने त्वमसि मम भव जलधि
रन्ते भवत भवतीह मपि सतत मन रोपिनी तत्र

वि. रा.
गी

रायिका मयि वचन जाने । जयति पद्मावती रमणा
जय देव कवि भारती भाणित मतिशान्ते । ८ । १६ ॥
बेधक अति बोधवोय मधुर स्त्रिया मधुक कविः
गोटे चेष्टि कोस्ति नील नलिनश्री मोचने लोच
ने नासान्वेति निलप्रसून पदवी केदाभ देति
प्रिये प्रायस्त्वन्नाह सेवया विजयते विष्णुस श

मलगेजनेभम हृदयेजने जजितरति रेगपरभा
गे । भणमस्यावाणि करवाणि चरणा द्वये सर
मल सदलक्तकशगे ६ स्वर यरल खिउनेममशि
रसि मेउनेदेहिपद पल्लव मदारे । ज्वलि मयि
दारुणो मदने कदना नलो ह्यत तडणा हित
विकारे ७ इति चहुल चाट पटवारु सर वैरिनो

वि-रा
गी

नि निजित जयति किमपि ताति ५३ भूचापे निर
तः कदाच विधातो निर्मात मर्म व्यथो श्यामात्मा
कुटिलः करोत कवरी भारोपि मायेयमे । मोहे
तावदयेच तन्नि तन्ना म्बिवाथो रागवानसह
तः स्तनमेडलस्तव कथे शोमिम कीडति ५४ मा
निनीमान विधेः दत्तो जयति सोप्रते । म्दवेण स

व्यासः ५१ दृष्टोत्तम मदात्त सेवदन मित्र सेदीप
ने गतिर्जन मनो रमा विजित रेभ मरु हये रति
स्तव कलावती रुचिर चित्रलेख अवावहो विव
थ यौवने वरुणि नलि एष्वी गता ५२ भूपल्लवे
थ नर योगत रेगितानि वाणा गुणाः प्रवणा पानि
रिति स्तरेणा तस्या मनेग जय जेगम देवताया मस्त्रा

विश-
गी

श्री वेद चर्चा विषे शीतो सुस्नयनो हि मेङ्गलवहः
क्रीडा मदे यातनः ॥ ५० ॥ विभास गगण ताल
हवि रश्मि सरति वहति मृदु पवने किम पर
मधिक सखि सखि भवने ॥ १ ॥ मायवी माऊ
रु मानिति मानमये ॥ अ- ॥ ताल फला
दपि शुरु मति सरसम् ॥ किम विफल्यी

४१

सङ्गतः श्रीमङ्गोपालक भवतिः ५५ तामय मन्त्राय
विन्नो रतिरस भिन्नो विषाद सम्पन्नो । अन्वर्चिन्ति
तद्गति चरितो कलशान्तरिता मवाच रहः सांवी
५६ स्त्रिये यत्परुषासि यत्प्राणमति स्तथासि य
द्वागिणि देवस्थासि यदन्तरे विमलता याता
सि तस्मिन्प्रिये । तद्युक्ते विपरीत कारिणि तव

विश
गी
किमिति करोषि हृदय मति विश्रुतम् ॥ ६ ॥ स
जल नलिन दल शीतल शयने हरि मव लो
कय सफल्य नयने ॥ ७ ॥ श्री जय देव भणि
त मति सलितम् ॥ सख यत्न रसिक जने हरि
चिरितम् ॥ ८ ॥ १० ॥ श्री राधिका जीके वच
न विप्र विव साखी सखा सोये साखी वहिमा

ऊरुषे ऊच कलशे २ कतिन कथि मिद मन पद
मचिरे । मापरि हर हरि मतिशाय रुचिरे किसि
ति विषीदसि रोदिषि विकला । विहसति प्रव
ति सभा तव विकला ४ जनयसि मनसि कि
मिति गुरुवेदम् । शृणु मम वचन मनी हित
भेदम् ॥ ५ ॥ हरिरुप यात्र वदत वद मथरे

विश
मी वरु मधुरे । किमिति कयेषि हृदयमति विशुरे
॥६॥ सजल नलिन दल शीतल शयने हरिम
वलोकय सफल्य नयने ७ श्री जय देव भणित
मति सलितम् । स्वावयत्त रसिक जने हरी चि
रितम् ॥८॥ १० ॥ श्री शायिका जीके वचन
विषु दिव साखी सम्रा सोये साखी वहिमा

निलो विष मिव स्यादपि यस्मिन् उच्यते स
नोयते । हृदय भद्रे नस्मिन् नेव पुनर्वलते व
लात् ऊवलय दृशास्वासः कामो निकाम निरे
कृशः । ५८ । गायति गुणगमे आमे भ्रमाद
पिने हते वहतिव परि तोषे दोषे विमेचति ह्य
तः श्रवतिष्ठ नलत्सो ह्यसो विहारिणि मन्त्र

वि-रा
गी

नयेन श्रीणयित्वा मरगादी गतवति कृतवेषके
शवे ऊजशयो रचित रुचिर भूषो दृष्टिमोषे प्रदे
षे स्फुरति निरवसादे कापि शयो जगाम ६१
सामो दृष्टयति वक्षति प्रिय कथो पत्नेयामा त्ति
गनैः श्रीति यास्यति रेणते सति समा गत्ये
ति चित्ता कुलाः ॥ सन्नाम् पश्यति वेपते

विना पुनरपि मनोवामे कामे करोति करोमि किं
५५ श्रीति वस्तुन नो हरिः कुवलयौ पीडेन सांई
रणे । यथा पीत पयोधरस्तरण कृत कुंभेन से
भेदवान् । यत्र स्थिति मीलति क्षण मय क्षि
मे द्विषे तत्क्षणात् । केसस्या लस भूजिते जित
मिति व्या मोहकोलाहलाः ॥ ६० ॥ सरुचि मन

विश
गी

६३ ॥ आश्लेषाः दन्तवैवता दन्तनखो ह्येवास्त्र
स्वान्तज श्रेष्ठोया दन्तसंभ्रमा दन्तरता रेभादन्त
प्रीतयोः ॥ अत्यार्ते गतयोर्भ्रमान् मिलितयोः
संभाषणौ जीततो देपत्यो विह कोन कोन न
मसि व्रीडा विमिश्रोतः ६४ अक्षणे निर्दिष्ट
दे जने अवगायो स्नापिच्छुक्तावली मूर्द्धिण्या

प्रलकयन्ता नेदति स्विद्यति प्रत्यङ्गच्छति मृच्छति
स्थिरतमः प्रजे निज्जे प्रियः । ६२ । त्वद्वामेन स
मे समग्र मथना तिग्मोश्चरन्ते यतो गोविन्दस्य स
नोरथे नवसमे प्राप्ते तमः सो शतो । कोकानो
करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना । तन
मुग्र्ये विफले विलेवन मसौ दम्पोभि सारद्वणः

विश
गी

पलतो ननोति ॥६६॥ विभासरागस्य ताल ।
विर चित चाट वचन रचने चरणे रचित प्रणिपाते
मेषति मेजलसी मतिकेलि शयन मनयाते ।
मग्ये मथ मयन मनयाते मन सर राधिके । अ-
वव जवन स्तन भार भरे दर मय्यर चरण विहा
रम् ॥ मखरित मणि मेजीर मयैहि विधेहि

म सरोज दाम ऊचयोः कस्तूरिकापत्रके । धूर्तीना
मभि सार सत्वर हृदो विषड् निऊंजे सीव । धो
तन्नील निचोल चारु सदृशो प्रत्येग मा लिंगा
ते । ६५ । काश्मीर गौर वपुषा मभि सारिकाणां
मावह शैव मभितो रुचि मेजरीभि । एतन्मा
ल दल नीलत मेत मिश्रे तत्त्वम हेम निकषो

विशा
गी

विरेमे । एक मनोहर शर विमल जल धारममे
ऊच ऊंचे ५ अथिगत मणिल साखी भिरिदेत
ववप्र शपिरतिरण सजे । चेदिरणिन रशानारव
दिरिम माभि सर सरस मलजे ६ सरशार सभ स
खिन साखी मवलेव्य करेण सलीले । चल चल
य कणिनै रव बोध य शरि मणि निज गति शो

मशाल विकारे । २ । मृण्मय मणीय तरे तरुणीज
न मोहन मधुरिष रावे । ऊसम शगसन शास
न वेदिति पिक निकारे भज भावे । ३ । अनिल
तरल किसलय विकारेण करेण लताति ऊरेवे-
प्रेरण मिव कर भोरु करोति गति प्रति मुच विले
वे । ४ । स्फुरित मनेग वशा दिव स्रवित हरि प

विशा
गी

कति मर्कति स्थिरतमः प्रजे निजजे प्रियः ॥ ५॥

६६॥ विभास गायण तालः ॥ रति सख सारे

गत मभि सारे मदन मनोहर वेधे । न करु निते वि

निगमन विलेवन मन सरते हृदये शो ॥ १॥ थीर

समीरे यमना तीरे वसति वने वन माली गोपी

पीन पयोधर मदन चंचल कर युग शीली ॥

ले १०। श्रीजयदेव भणित मधुरी कृतद्वारमुदा
सितवामे । इति विनि हित मनसा मयि तिष्ठत
केट नदी मवियामे । ६। १६। सामो इत्यति वदप
ति प्रियकथो प्रत्येग मालिगनैः श्रीतिपायतिरे
स्यते सखि समा गत्येति चिन्ता कुलः । सन्ताप्य
शयति वेपते पुलकयन्ता नेदति खियति प्रत्यङ्ग

विश
गी

शीलय नील निचोलम् ४ उरसि मयारे रूपस्ति
हारे चन इव तयल वलाके । तदि दिव पीते रति
विषयीते राजसि सकृत् विषाके ५ विशा स्ति
वसने परिहृत रशने चटय जवन मपिथानम् ।
किसलय शयने पेकज नयने निधि मिव र्श
निथानम् ६ ॥ इति रभि मानी रजनि रिसनी

ॐ-१ नाम समेतं कृतं संकेतं वादयते स्मृतेषां । व
ऊ मन्वते तन्वते तन्व संगत पवन चलित मपिरेण
२। पतति पतत्रे विचलेत पत्रे शेकित भवउपया
ने । रत्नयति शयने सचकित नयने पश्यति तव
पस्याने ३ सखि मथीरे न्यज मेजरी विषु मिव
केलि सलोके । चलसखि ऊजे सति मिर सुजे

वि-श
गी

कथं मणि रत्नं प्राप्ता मेरी नरेण नरेणिभिः स
मन्त्रि सभयः सन्नाम्यश्वत्थपैत्र कृतार्थ्यतो ।
६० हाशवली तरल कोचन कोचिदम मेजीर
केकणा मणि फति दीपितस्य हारे निकुंज
निलयस्य हरे निरीक्ष्य व्रीडा वनीम् सथ
सावी निजगाद रायाम् ॥ ६८ ॥ विभासरागस्य

मिथ मपि याति विरामे । ऊरु मम वचने सत्तर
चने एव मथुरिकामे ॥ १० ॥ श्री जयदेव कृत
रि सेवे भणति परम रमणीये । प्रसदिन हृदये
हरि मपि सदये नमत सक्त कमनीये ॥ ८ ॥
समय चकिते विमर्शेनी दृशो निमिर घथि
प्रति कृत मद्दः स्थितामेद पदाति वितन्वतीम्

विश-
गी

रभि शीते । विलस रति वलित ललित गीते ।

४। वितन वद्ध वलितव पलव चने विलस वि

र मलस पीन जचने । ५। मथु मद्दिन मथुप

ऊल कलित शवे विलस मदन रस सरस भावे

॥ ६ ॥ मथुर तरपिक निकरति नदमखरे । वि

लस दशान रुचि रुचिर शिखरे ० विहित पञ्चा

नाल । १ मेजतर ऊँजतलकलि सदने विलस
रति रभ सह सित वदने । २ । प्रविशराथे माथव
समीप मिह । ३ । नव भवद शोकदल शय
न सोरे । विलस ऊँच कलश तरलहारे । ४ । ऊँ
सम चय रचित अवि वासगेहे । विलस ऊँसम
सुऊमार देहे ॥ ५ ॥ चलमलय बने पवन स

वि.श.
गी.

याहि राधा सननय सहचने चानयेथाः । इति स
धुविप्रणा सावीनियुक्ता स्वय मिद मेतु पुनर्जया
दयाधाम ५० त्वाचितेन विरे वहन्नय मति ओ
तो भृशं तापितः कंदोर्षणाव पात मिच्छति सथा
संवाथ विवापरे ५१ अस्या कला दलम ऊरु
दणा मिह भूक्षेप लक्ष्मी लव श्रीने

वती सख समाजे । भगिनि जयदेवकवि राजरा
जे । द । सोदा नेद प्रन्दरा दिदि विषट् वृन्दैरमे
दा दय । दानमे मङ्कटैद्र नील मणिभिः सेद
शितेन्दीवरम् । स्वच्छन्दम् मकरन्दसन्दर गलन
भन्दा किनीमेउरे । श्रीगोविन्द पदार्थविन्द मस्य
भस्केदाय वन्दामहे । ६५ । ग्रह मिह निवसा मि

विश
गी

प्रसर यिव हर्षो श्रुतिकरः ॥ १३ ॥ भजनन्यास्तः ।
ल्यान्तम् कृत कण्टकैर्दृति विहित स्मितेया
ते गोहा दहिरव हिताली परिजने ॥ प्रिया
स्य पश्यन्त्याः स्मर शर सम्य कृत सभगम् स
लजाया लज्जा व्यगम दिवहरम् मृगादृशः
विभास रागास्य नालः ॥ ॥ शथा वदन वि

दास द्रव्येण सेवित पदं भोजे कृतः सेवमः ७१
सास साधस सा नेद गोविंदे लोल लवता सि
जान मेज मेजीरे प्रविवेश निवेशने ७२ प्रति क्र
म्या योगे अवगा पथ पर्यन्त गमन प्रवासे नैवा
क्षणे स्तरल तरतारम्यति तयोः । तदा नीराथा
याः प्रिय तम समालोक समये पणत खेदोत्र

विश
गी
मिव यमना जल हरम । २ । श्यामल मंडल
कलेवर मंडल मथिगत गौर डकुले । नील
नतिल मिवपीत पद्म पटल भर वल यि
तमले । ३ । तरल द्योवल चलत मनोहर वदन
जनित रतिरागे । स्फटकमलोदर विलित वि
जन श्या मिव शरदि तडागम । ४ । वदनक

लोकत विकसित विविध विकार विभेदो । ज
लनिधि मित विधु मेडल दर्शन तरलित तेगत
रेयो ॥१॥ हरिमे करसेविर मभिलखित विलासे
साद दर्श शुरुहर्ष वशम्वद वदन मनेग विकारसे
श्रु । हार ममल तरतार मरसि दयते परिले
व विहरम ॥ स्फुट तर फेन कट्ख करवित

विश
गी-

कलाभिरधीरे । मणिगणा किरणा समूह सम
ज्वल भूषण सभरा शरीरे । १० । श्री जय देव भ
णित विभव दिशणी कृत भूषण भारे । प्रणम
न हृदि विनिधाय हरि सचिरे सकृतो दयसारे
१६ । २१ ॥ गतिवति सखी हृदे मेद त्रयाभर
निर्भर सर परवशा कृतस्फी तस्मि तस्त्रापि

मलपरिशीलनमिलितमिहिरसमकेडलशो
मे । स्मितरुचिकसमसमलसिताथरपलव
कतरति लोभम् १५ । शशि किरणक्षुरितो

दरजलथरसंदरसकसमकेशेतिमिशेदित
विश्वमेडलनिर्मलमलयजतिलकनिवेश
म् १६ । विपुलपलकभरदेवदितेरतिकेलि

वि-श
गी

न मनस्ये राधिके । ५५ । कर कमलेन करोमि
चरण महमा गमितमि विद्वे नणामप क
रु शयनो परिमा मिव नृपे मन गति श्रुम
॥ २॥ वदन मया विधि गलित ममृत मिव र
चय वचन मनकूलम् ॥ विरह मिवापन
यामि पयोधर शयक मरसि उकूलम् ॥ ३ ॥

नाथरास । सरसमलसे दृष्टा दृष्टा मङ्गलव पल्लव
प्रसर शयने नितिमादी मवात हरिः प्रियाम
७५॥ विभासरागस्य तालः । । किशलयश
यशयन तले ऊरु कामिनिचरण कमल विति
वेशे । तव पदपल्लव वैरि पराभव मिद मनभ
वत सवेशे । १ । तणा मथना नाशयणा मनरा

विश
गी

शुभा मनशुभा केह विनादे । अतिशुभ लेपि
करुत मम शमय चिरादव सादे । ६ । मामति
विफल रुषा विफली कृत मव लोकित मथने
दम् । मीलति लजित मिव नयने तव विरम
विरज रति विदम् । ७ । श्री जयदेव कवेरिद
मनपद निग दित मथ रिष मोदम् ॥ जय

प्रियपारिरेभाण रभस वलित मिव पुलकित म
नि उरवापम । मधुरसि ऊचकलशे विति वेश
य शोषय मन सिजतापे ४ अथरसुथार सम
पनय भासिति जीवय स्तनमिव दासे । नयिवि
नि स्तित मनसे विरहा नल दाय वषुष मविला
सम् १५१ प्राशि मवि मखरय मणि रशना

वि'रा'
गी

पोल पुलके सीत्कारथाश वशा द्यत्ता कुलके
लि काऊ विकसदेता अथोत्ताथरे आसोत्क
म पयोथरे मशपारि वेगात् ऊरेगी दृशो हर्षो
तर्कषे विमक्त निस्सरत्तनो र्यन्यो थयत्पान
नम ॥ ७७ ॥ दोर्भ्यो संयमितः पयो थरभ
रे एण पीडितः पाणिजै शविहो दशनैः

नत रसिक जनैष मनोरम रतिरसभाव विनोदे
॥६॥२२॥ प्रत्यहः पुलको ऊरेण निविद्य श्लेष
नि मेघेणाव क्रीडा कृत विलोकिते यरस पाने
कथा नर्मभिः । आनेदाभि गमेन मन्त्रय क
ला प्रहेपि यस्मिन्नम् उद्धतः सतयोर्वभूवस
रतः रेभाः प्रियेभावकः ७ मीलहृष्टि मिलतक

विश
गी

केपिते वदोत्तीलिते मन्ति पौरुषः वसस्त्रीणां
ऊनः सिध्यति ७५ तस्याः पादल पाणिजो कित्तु
ये निद्रा कषायेदृशौ । निर्दूतो यदशोणिमा वि
ल्लित्ता सस्तसजो मूर्धजाः । कोचीदमदरस
यो चलमिति प्रातर्निवातेदृशौ रेभिः कामशारे
स्तद्वत्त मभूत्यस्यैतन्कीलिते द व्यालोलाके

शनैः क्षताथरपदः शोणी तटे नाहतः हस्तेनात
मितः कचेथर मथ स्पन्देन समोदितः कान्तः का
मपि तस्मि मापत दहो कामस्य वामा गतिः ॥
वामोके रति केति सेऊसरणा रेभतया साहस
प्रायेकोत जयाय किंचिदपरि प्रारेभि यत्सेधमा
न तिस्पेदा जवनस्थली शिथिलिता दीर्घलिरु

वि-श
गी

स्वाधीन भार्त्तिका ८२ इति मतसा निगदेते सुरनो
ते सातितात विन्नागी यथा जगाद सादरमिद
मानेदेन गोविंदे ८३ विभास रायस्य ताल १
ऊरु यड नेदन वेदन शिशिर तरेण करेण पयो
थरे । मद्या मद पत्र कमत्र मनो भव मे गाल कल
श सरोदरे १ निज गादसा यड नेदने क्रीड

शषाशस्तखलित मलकैः खेदलो लौकपोलौ
दृष्टा विवाथर श्रीः ऊच कलश रुचा शारिताहा
रयष्टिः कोची कोविदता शास्तन जवन पटेपा
गिना । कायः सयः पश्येती स्वपे मोतदपि वि
खलित सयरेयन्यनोति ८१ अथ कोतेरतिष्टो
त मपि मेडन चोदया निजगाद निगवाथा राथा

विश-
गी

कमले विमले परिकल्पय नर्मज्जनकमल
के मखे ४ म्या मद रस ललिते ऊरु तिलक
मलिक रजनी करे । विहित कलेक कलेक
मला नन विप्रमित अमशी करे ५ ममरुचि
देवि ऊरे ऊरुमातद मातसज धजवामरे । रतिग
लिते ललिते ऊरुमाति शिवेदि शिवेइक डामरे

इति हृदया नेदने । ५५ । द्युष्ये वन लोवित क
जल मज्जलय प्रियलोचने अलिजल गोजन
मे जनके रति नायक मोचने । ५६ । नयन ऊरेगा वि
कासिनि वासकरे प्रकृति मेडले । मनसिज पाश
विलासकरे शुभवेष्ट निवेशय ऊडले ३ भमरच
ये रत्नयेंत सुपरि रुचिरे सुचिरे समसन्नादि जित

विश
गी वसुजा कवरीभरे कलय वलय अणी पाणी
पदे ऊरु नृपरा वितिति गदितः पीतः पीतो वरो
पितथा करोत् ८४ प्रातर्नील विचो लम च्युत
मरा सेवीत पीतो शुके राथाया अकिते विलो
क्य हसिति खेरे साखी मेडले व्रीडा वेचल मेचले
नयनयो राथाय राथानने खेरे सोर साखी वज्रोक्त

६। सर सचने जचने मम शोवर दारणा वारणा के
दरे। मणि रशना वसना भरणाति अभाशाय
वासय सेदरे। ७। श्री जय देव वचसि जय दे सर
ये हृदये ऊरु मेउने हरि चरण सरणा मृत केत
कलि कलष ज्वर विउने। ८। रचय ऊचयोः प
त्रे चित्रे ऊरुष कपोलयो र्चटय जचने कोची मे

विश
गी

सस्य वेशोदर जीतिस्थान कृता वधान ललना
ललेणा केदलिताः सुसुग्य मथुरे राया सुविदे
सुया सावेवो मथुरदनस्य ददनले मे कटाक्षो
मयः ८०। दद। विभासराग्य नाल । संचर
दथर सुया मथुरधनि सावरित मोहन वशेव
लिन दगोवल मौलि कपोल विलोल वसेते ॥

जगदा नेदाय नेदात्मजः ॥ २५ ॥ पर्यकी कृतता
ग नायकफणा श्रेणी मणीतो गणो संयोतप्र
ति विवसेवलनया विश्रदिभ प्रक्रियो । पादेभो
रुह थारिवारिधि सता मदणो दिट्टः शतैः का
यसूह मिवाचरन्तु पविती भूतो शीः पात्रवः
॥ २६ ॥ तिर्यककंद विलोत्तमौलितरलो ते

विश
मी

लपलकभजपलववलयितवलवयवनि स
इसे । करचरणो रसिमणिगण भूषण किर
ण विभिन्नतमिसे ४ जलदपदल चलदिंड वि
तिदकचेदन विंडललाटे । पीतपयोधरपरिस
रमर्दन निर्दय हृदय कपाटे ५ मणिमय मकर
मनोहरकेडल मेडित गेडमदारे । पीत वसन

रासे हरि मिह विहित विलासे । स्मरति मनो म
म कृत परिहासे । ५५ । चेद्रकचारु मयूर शिखि
उक मेडल वलयित केशे । प्रवर पुण्डरीक यनुर
नरेजित मेडल मरित सुवेषे २ गोप कंदेव निते
व वती सख चेवन लेखित लोभे । वेधुजीव मधु
राथर पल्लव मल्ल सित सित शोभे ॥ ३ ॥ विप्र

वि-रा-
मी

वेशमन्त्रज भ्रूवलि महलवी वेदोत्सारिद्वयगत
वीक्षित मति खेदाद्वगोदस्थले । मासदीप्यवि
लङ्घितस्मित स्रया मय्याननेकानने गोविंदेव
जसंदरी गणा वृते पश्यामि हृष्यामि च । ८८ । अ
तमोहन मौलिहृणी ननलन मेदार विसं स
नः स्रवा कर्षणा दृष्टि हर्षणा मद्भा मेत्रे कवे

मन मनि मनज सरा सरवर परिवारे । विशाद
कदेव तले मिलिते कलि कलष भये शमयेने ।
सामपि किमपि तरेग दनेग दशा मनसा रसये
ते ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभाणत मनि सेदर मोहन म
अरिष रूपे हरिचरण सरणे प्रतिसे प्रति प्राण
वता मनरूपम ॥ ८ ॥ २४ ॥ हस्त हस्त विलास

विश
गी

परि शोधयेत् सधियः श्रीगीतगोविन्दः ५-
साधी साधीक चित्तानभवति भवतः शर्करे
कर्करा सिद्धाक्षे द्रव्येति केत्वा समस्त स्तनमसि
दीवनीरसस्ये । माकेदे हेद कोता थरणीत
लेगच्छे नियावद्भावे म्पेगार सार स्वत म
य जय देवस्य विषयवर्चसि ॥ ५१ ॥

गीहृणो हृष्यहानव हृयमान दिविष उर्वार
उःखापहो धेसः केसरिणो व्यपो हृयतवो अ
योसि वेशीरवः । ८५ । यज्ञो यव कला सकौ
शालमन य्यानेव यदैसवे यत् शृगार विवेक
तत्त्वमपियत् कायेषु लीलायिते । तत्सर्वज
यदेव पेडित कवेः कसैकता नात्मनः सानेदाः

विंश
गी

भज देहो मरजितः ॥ ६३ ॥ इति श्री वि
भास रागाय गीतगोविंदसमापते ॥

श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी सत श्री ज
य देवकस्य । पादा शरादि प्रियवर्ग केदे श्री ।
गीत गोविंद कवि तमस्तु । १२ जय श्री विनय
स्तेर्महित इव मेदार ऊसमैः स्वये सिंहरेण
दिपिरण मुदा मुदित इव । भुजा पीउ क्रीडा ह
त ऊवलया पीउक रिणः प्रकीर्ण सुखिंदु

गीर्जयति भुजदेसो सुरजितः । १३ इति श्री गीत ।
गोविंदे समाप्तम् ॥ सुभमस्तु ॥

मादेवीसुत श्रीजय देवकस्य पराशरादिप्रियवर्गकेदे
श्रीगीतगोविंदकविनमस्त ५ इति शशिनी खेभाव
नी गीतगोविंदपरिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥

श. खे.
मी.

५६

श्री भोजदेव प्रभवस्य रामा देवी सत श्री जयदे
वकस्य । पद्म शशादि प्रिय वर्ग केदे श्री गीत
गोविंद कवित्तमस्तु १२ जय श्री विद्यसैमिहि
त श्व मेदय ऊसमैः स्वये सिद्ध्येण दिपिरणा
मदा सुदित श्व । भजा पीड क्रीडा हत कव ।
लया पीड करिणः प्रकीर्णा हृद्विदुर्जयति

श-गे-
गी-

पश्चादती चरण चरण चक्रवर्ती ॥ श्रीवासदे
वरति केलि कथा समेत ॥ मेते करोति जय
देव कविः प्रवेयम् ॥ २ ॥ यदि हरि सरणे स
रसे मनोपदि विलास कलास कुत हलम
मधुर कोमल कोत पद वली शृणु तदा
जय देव सरस्वती ॥ ३ ॥ ॥ ॥ वाचः

अथ राग गंधार गीत गोविंथ परिच्छेदः ज्ञातः ॥ ४

^{२म}मे ^{२ग}मे ^{२म}मे ^{२पि}मे ^{२य}मे ^{२पि}मे ^{२म}मे ^{२ग}मे ^{२रे}मे ^{२सि}मे ^{२म}मे ^{२ग}मे ^{२रे}मे ^{२सि}मे ^{२म}मे ^{२य}मे

^{२नि}भी ^{२सि}रु ^{२रे}रये ^{२सि}त्वमेव ^{२नि}तदिमे ^{२य}राये ^{२पि}गदरे ^{२म}प्रापय । ^{२ग}इत्ये

^{२रे}ने ^{२म}दति ^{२पि}देश ^{२य}तस्मिन् ^{२पि}लितयोः ^{२म}प्रत्यय ^{२ग}कज ^{२रे}इमम

^{२म}राया ^{२य}मायवयो ^{२नि}जयति ^{२सि}यमना ^{२रे}कले ^{२सि}रहः ^{२नि}के

^{२सि}लयः ॥ १ ॥ वाग्देवता चरित विवित चित्त सभा

रा गो
गी

हित विहित चरित्र मतिदे केशव धन मोन शा
रीर जय जग देश हरे ॥ १ ॥ तिति रति विपल
नरे तव तिष्ठति पृष्ठे यथाणि यथा किण्वक
गदिष्टे केशव धन कल्प रूप जय जग देश
हरे ॥ २ ॥ वसति दशन शिखरे यथाणी तव
लग्ना शशितिकलेक वलेवति मया +

पल्लव यत्प्रसा पतिथरुः सेदर्भं अदि गिरो ॥
जानीते जयदेव एव शरणाः स्नाचो डरुह
डनेः । श्रेयाशोत्तर मत्प्रमेय रत्नै राचार्य गोव
ईन एही कोपिन विष्कतः कतिथरो थोयी
क विल्सा पतिः ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ताल
॥ ४ ॥ प्रलय पयोधि जले धृत वानसि वेदे वि

रा. गो.
गी.

जय जगदीशहरे ॥ ५ ॥ क्षत्रिय रुधिर मये ज
यदप्यगत पापम् ॥ स्नापयसि पयसि शसि
न भव नापम् ॥ केशव धन भूय पति रु
प जय जगदीशहरे ॥ ६ ॥ विनयसि दिव्य
योग दियति कमनीयम् ॥ दश माव मौ
लि वलि रमणीयम् । केशव धन रघु प

केशव धन शूकररूप जय जगदीशहरे ॥ ३ ॥
नवकर कमल वरे नाव प्रभुत भेंगे दलित
हिरण्य कशिपु ननु भेंगे केशव धन नरहरि
रूप जय जगदीशहरे ॥ ४ ॥ कृत यसि विक्र
मणे वलि महुत वामन पद नाव नीर जनि
तजन पावन केशव धन वामन मन रूप

रा'गे'
गी

म्लेच्छति दहति धने कल यसि करवाले । धूम
केत मित किमपि करा ले ॥ केशव धृत क
ल्कि शरीर जय जगदीश हरे १० श्री जय देव
कवे रिद मुदित मुदारे । शृणु सखदे शुभदे भ
वसारे ॥ केशव धृत दश विध रूप जय जग
देश हरे ॥ ११ ॥ राग गेथार ताल ॥ ४ ॥ श्लोक ।

तिरुपजयजगदीशहरे ॥ ७ ॥ वहसि वषाषि वि
शादे वसने जलदाभे ॥ हल इति भीति मिलि
त यमनाभे ॥ केशव इत हलथर रूप जय
जगदीशहरे ॥ ८ ॥ तिदसि वत्त विथे रह
श्रुति जाते ॥ सदय हृदय दर्शित पशु चाते
केशव इत वय शरीर जयजगदीशहरे ॥ ९ ॥

श. गो.
गी

कंदल । कलित ललित वनमाल जय जय दे
व हरे ॥ १ ॥ दिनमणि मेडल मेडन भव
खेडन मति जन मानस हेम ॥ जय जय
देव हरे ॥ २ ॥ कालिय विषथर गोजन ज
न रेजन यड कुल कमल दिनेश ॥ जय ज
य देव हरे ॥ ३ ॥ मधुमदन कवि नाशन

वेदा नदरते जगन्नि वहते भूगोल मदिभते
दैते दारयते वलि बलयते दारदये कर्वते-
पौलस्त्ये जयते इले कलयते कारुण्यमा
तन्वते ॥ स्नेह्यात्मर्ह्ये यते दशा कृति कृते
कृत्वाय तभ्यंनमः ॥ ५ राग गेथारताल ॥
अष्टपदी ॥ श्रित कमला कुच मेडल धन

श'शो'
गी'

दर श्रीमत्तवेदचकोर ॥ जय जय देव हरे ॥ ७
श्रीजय देव कवेरिदे ऊरुते मंदे मेयाल मज्ज
लगीते ॥ जय जय देव हरे ॥ ८ ॥ शशांगेयार
ताल ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ शशो ह्यास भरेण विभु
मभना माभीर वामक्रवा मभ्यर्णे परिदध्यति
भर सरः प्रेमोथया शयया ॥ साध त्वददने

गरुडासन । सरजलकेलिनिदान जयजय
देवहरे ॥ ४ ॥ प्रमल कमल दललोचन भवमो
चन । विभवत भवन निधान । जयजय देव
हरे ॥ ५ ॥ जनकसुताकृत भूषण जित ह
षण समर शमित दशकंद ॥ जयजय दे
वहरे ॥ ६ ॥ अभिनवजलधरसंदरष्टत मे

रा. गो.
गो.

श्रीणी प्रणामलकोमलै रूपनयनैरौ रनेगोत्स
वे ॥ स्वकंदे वज्रसंदरी भिरभितः प्रत्येगमालि
वितः मंगारुसखि मूर्तिमाति वमथो म
थो हरिःकीडति । ५ । तित्योन्नेग वराद्भजे
रा कवल क्लेशादिवेशाचले प्रालेय स्रव
ने क्षयात्र मरति श्री खेड शैलानिलः किंच

सुधासय मिति व्याहत्य गीतस्तुति व्याजाज
द्रुत वेवित स्मित मनो हारी हरिः पातवः
अनेक नारी परिरेभ संभ्रम स्फुरत्तनो हारि
विलास लालसे मरादिशया उपदर्श यत्पसो
साखी समसे अनराह राधिका ॥ ७ ॥ विष्णु
षा मन रंजनेन जनयन्नानेद मिन्दो वद

श-शे
गी

सग्य वधू निकरे । विलासिनि विल सति के
लि परे ॥ १ ॥ पीन पयो यर भार भरेण हरि
परि रभ्य सग्यगे ॥ गोप वधू रत्न गायति
काचि उदे चित्त पेचमशगम ॥ २ ॥ कपि वि
लास विलोल विलोचन विलन जतिन
मतोजम ॥ आरति सग्य वधू रथिके म ।

स्त्रियरसात् मौलि मञ्जला न्यालोक्य इषोद
या उन्मीलन्ति कङ्कः कङ्करिति कलोज्ञानाः
पिकालो गिरः ॥ २ ॥ अष्टपदी । राग गंधार ॥
नाल ॥ ४ ॥ चेदन चर्चित नील कलेवर पीत
वसन वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल
मेदित गेड अगस्मित शाली ॥ १ ॥ हरिहर

श-शे-
गी-

करतल ताल तयल वलया वलिकलितक
ल स्वतवेशे ॥ शसयसे सह नृत्य पशहदि ।
एण युवती प्रश सेसे ॥६॥ स्त्रियति कामपि
वेवति कामपि रमयति कामपि शमो पश्य
ति सस्मित चारु पश मपश मन्वगच्छति वा
माम् ॥ ७ ॥ श्री जयदेव भणित मिद म

अ सुदन वदन सरोजे ॥३॥ कपि कपोल न
ले मिलि तालपिते किमपि श्रुति मूले ॥
चारु बुधेवति तेव वती दयिते पुलकै रनक
ले ॥४॥ केलि कला कृत केनच काचिद
मे यमना जल कूले ॥ मंजल वेजल
कंज गाते विच कर्ष करेण उकूले ॥ ५ ॥

रा. गे.
गी.

ता प्रवाच रहः सखी ॥१॥ के सारि रपि संसार
वासना बंध श्रेष्ठलो राधा माथाय हृदये त
त्याज ब्रज सेंदरी ॥१॥ इतस्त तत्ता मनस्य
राधिका मनेग वाणा ब्रज विन्न मानसः ह
तान तापः सकलित नेदनी तदन्त केजेति
ष साद माथवः ॥१२॥ राग गेथार ताल ॥४॥

द्रुतकेशव केलि रहस्यम् ॥ वेदावन विणिने
चरिते वितनोत्त सुभानि यशस्यम् ॥ ८ ॥ अष्टा
दी राग गंधार ताल ॥ ४ ॥ विहरति वनेयथा
साधारण प्रणये ह्ये विगलित निजोत्कर्षी
दीर्घी वशेन गतात्मनः ॥ क्विदपि लता ऊँजे
येन नमधुवत मेडली मात्र शिखरे लीनादी

रागो
गो

तदयननम कदिलककोप भरेण शोण पय
सितो पदिसमता कले भुमणोन तामहे ह
दि सेयता मनिशे भूशे रमयामि किंवने
न सय मिता मिह किंवथा विलयामि ॥
४॥ तन्निविन्न मसूयया हृदयन् तवाक
लयामि तन्नवेमि कनो गता सि नते

प्रष्टादी शशमेथारताल।४॥ मामिये चलित
विलोक्य हते वष्ट निचयेन। सापरायतनया मया
न निवारिताति भयेन।५॥ हरि हरि हता दयत
यागता सा कृषितेव ॥ किं करिष्यति किं व
दिष्यति सा चिरं विरहेण किंथनेन जनेन
किं मम किं सखिन गदहेण ॥२॥ चिंतयामि

रा'गे'
गी'

एणी रसोपन ॥६॥ पाएँ साकुरु चत साय
क ममे सा चाप माये पय कीडा निर्जित वि
ष मूर्च्छित जना चातेव किं पौरुषे ॥ नर्याए
व मृगी दृशो मनसिज पैखल्कटादा शुग
अणी जर्जरिते मना गपि मनो नायापि संध
क्षते ॥१३॥ हृदिविलाशताहरो नये भजेग

नते बुद्धयामि ॥ ५ ॥ दृश्यसे प्रतीयाता गत
मेव किं विदयामि ॥ किं पुरे वश सेधमे परि
रेमणोन ददामि ॥ नम्यता मपरे कदापितवे
दृशेन करोमि ॥ देहि सेदरि दर्शने मम म
न्येन उनोमि ॥ वार्णिने जयदेव केन हरे
रिदे प्रवणोन किं उ विल्व ममद्र सेभव रोहि

मनायकः जवलय दल श्रीणी केहेत साया
रल युतिः मलयज रजो नेदे भस्म प्रिया रहि
ते मयि प्रहृत हर सोन्या नेया कथा किमु
थावसि ॥ १४ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ता
ल ॥ ४ ॥ बरति मलय समीरे मदन मय
निधाय झटति कसम निकरे विरहि हृद

रा-गो-
मी-

मन्मथ मन्मथ नीर्ये पुनर्मीथवः । आयेस्त्वामिति
शे जपन्तपि तवैवा लाप मेशावली भूयस्त्वत्क
च केभ तिर्भरणी रेभा मते बोद्धति । १५ । वि
किरति मङ्ग-शासा नाशाः प्रये मङ्गरीक्षते
प्रवि शानि मङ्गः केजे शेजे शेजन्मङ्गर्वङ्ग
ताप्यति । रवयति मङ्ग-शय्या मर्या कले

जति ललित याम ॥ लुटति थरणि शायने
वज्र विपलति तव नाम ॥ ४॥ भणति कवि
जयदेवे विरहि विलसितेन । मनसि रभस
विभवे हरी रुदयत्न सहजतेन ॥ ५॥ शयने
धारताल ॥ ४॥ श्लोक ॥ एवं यत्र समन्तवार
निपते शशादिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेव निक्तेज

शो-
गी-

साकृतस्मितमा कलाकलगतद्वेमिलमला
सितेभ्रुवलीकमलीक दर्शित भजा मलाई
दृष्टस्तनम् ॥ गोपी तान्निभ्यन्निरीक्ष्य गा
मिता कोत्तश्चिरेचिन्तयन् नन्तर्मथ म
नो ह्यो हरत्तवः क्लेशन्तवः केशवः ॥ २ ॥
यस्य नातीरवातीर निजंजे मेदमास्थितम्

अरीक्षते मदन कदन ज्ञानः कान्ते प्रियस्त
व वर्तते ॥९॥ तानिस्पर्श सखानितेच तरला
स्त्रिया दृशो विभ्रमा स्तदक्रोवज सौरभेसव
सथा खेदी गिरो वक्रिमा ॥ सा विवा यरमा
धरीति विषया संगेपिचेन्मानसे तस्योल
यत समाधि हेतु विरह व्याधि कथे वर्तते ॥१॥

शुभो-
गी-

लवेया लता परिशीलन कोमलमलय समीरे
मथकर निकर करेवित कोकिल कुजित के
ज कुटीरे ॥ १ ॥ विहरति हरिहर सरस वसेते
नृत्यति श्रवति जनेन समे सखि विरहि जन
स्य उरेते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक व
धजन जनित विलापे । अलिजल सेजल

प्राह प्रेम भरो ज्ञानसाधने राधिका साखी ।
वसेने वासेनी कसमस कसौरे ख ये वैधम
नी कान्तारे वड विहित कसानु शरणे अ
मेदे केदरे ज्वर जलित विता कुल नया व
लदाथो राथो सरस मिद मूवे सह चरी ॥
राग गंधार ताल ॥ ४ ॥ अष्टपदी ॥ ललित

शुभो
गी

नृणां विलासे ॥ ४ ॥ विद्यालित लेजित जगद व
लोकन नरुणा करुणा कृत हासे ॥ विरहित
कृतन कृत मत्वा कृतिकेतकि देवविनाशे
॥ ५ ॥ मायविद्या परिसल ललितेनव मा
नति यात सुमेधौ ॥ सति मनसा मयि
मोहन कारिणी नरुणा कारणा बेध ॥ ६ ॥

कसम समरुह निग कुल वकुल कलापे ॥२
मया मद सौरभ रभस वशंवद नव दलमाल
तमाले ॥ अथ जव हृदय विदारण मन सिज
वावरुवि किंअक जाले । मदन मही पति
कनक देड रुवि केसर कसम विका मि
लि त शिली मख पाटल पटल हुत सर

रा.गो.
गी.

दर विदलित मल्ली वलि वेचनराग प्रकटित प
ट वासै वीसयन्कातनाति । इहहि दहति चेतः
केतकी गंधवेधः प्रसरद सम वाण प्राण व
हेयवाहः ॥११॥ उन्मीलनमधगंधलव्य मधुप
व्याधत चूले कर की उन्को किल का कली क
ल कलै रुझीण कर्ण ज्वर नीयेते पथिकैः

स्फुरदतिमत्कलता परि यमभा मज्जलित
पुलकित हृते ॥ हेदावन विपिने परिसर
परिगत यमना जल एते ॥ श्री जयदेव भण्ण
ते मिदमदयति हरि वराणा स्मृति साधे ॥ स
रस वसेत समय वन वणीत मन्वगत मद
न विकारे ॥ ८ ॥ गुण गेयान्ताल ॥ श्लोक

रा.गे.
गी.

राग गंधारताल ॥ ४ ॥ अष्टपदी ॥ निंदति चेद
न मित्रं करणं मन विंदति खेदमर्थीरे व्याल
निलय मिलनेन गरल मित्र कलयति मलय
समीरे १ मायव सा विरहे तव दीना ॥ मन
सिज विषाख भया दिव भावनया त्वयिली
ना ॥ अविदत्त निपतित मदन शयदिव भव

कथे कथ मयि ध्यानावधानतत्तत्ता ज्ञान प्रज्ञास
स सम शम रसोत्तासै रमी वासराः ॥ २२ ॥ इति
लोकलोकस्तव कनवका शोक लतिका । वि
काशः काशो पवन पवनो ये व्यथयति । अयि
आमहेङ्गी रागात् रमणी यान मङ्गल । प्रसू
ति भूतानो मयि शिवरिणी ये सखयति २३

रा. गो.
गी

व विकट विधेत्तद दन्त दलन गलिता मृतथा
रम् ॥ ४ ॥ विलोत्वति रूढि करेयम देन भवे
तम सस शरभूते प्राण मति मकर मथो वि
निथाय करेच शोरेन वचते ५ प्रति पद मिदम
पि निगदति माथव तव चरणे पतिता हे । त्व
यि विमद्वि मयि सपदि सथानिधि यि कुरुते

देवनाथ विशाले । सहृदय मर्मणि वर्म क
रोति सजल नलिनी दलजाले । २ । क्रसम वि
शित शयनल्य मनल्य विलास कला कमनी
ये । व्रत मिव तव परिश्रम सखाय करोति
क्रसम शयनीये । ३ । वरति च गलित विलो
चन जलधर मानन कमल मदारम् विधुमि

रा'गे'
गी'

आवासो विपिना यते प्रिय सखी मालापिजा
लायते । तापेपि ससितेन दावरहन ज्वाला
कलापा यते । सापि नदिरहेण हन्त हरिणी
रुणायते हाकथे केदर्थेपि यमायते विरत
यन् शार्हल विक्रीडिते ॥ राग गेथारताल
॥४॥ अष्टपदी ॥ सन विनिहित मपि सार

ननुदाहे ६ ध्यान लयेन प्रः परिकल्प्य भवेत्
सजीव उद्योगे । विलयति हसति विषी दति ये
दति चंचति मेचति तापे १० । श्री जयदेव भण्ण
त सिद्ध अधिके यदि मनसा नट नीये । इति
विरहा कुल वल्लव युवति सखी वचने पठ
नीयम् ॥ ६ ॥ शशशेखर तान् ॥ ४ ॥ श्लोक ।

शुभो
धी

मिव विगलितनाले। ४। नयन विषय मिव
किशलय नले। कलयति विहित कुनाश
नकले। ५। नजतिन पाणि नलेन कपोले
बाल शशिन मिव साय मलोले। ६। हरि रि
ति हरि रिनि जयति सकामे। विरह विहि
त मरणे वति कामे ७ श्रीजय देव भणित

दारे सा मन्त्रे कृशा नन विवभारे राधिका विर
हे नवकेशव । शार सम दृशा मयि मलयज
पेके वृष्यति विष मिव वृष्यति सशकम् ॥२॥
असिक्त एव न मनपम परिणाहम् ॥ सदन
दहन मिव दहति सदाहम् ॥३॥ दिशि दि
शि किरति सजल कणा जाले ॥ नयन नलिन

रा. रा.
गी

प्रसीलति एतत्प्रयाति मूर्च्छन्त्यपि एतावन्त
न ज्वरे वरतन्नीवेन्न किन्तेरसा त्सर्वेय प्रति
म प्रसीदसि तत्प्रको तस्या इत्यकः २६ ॥
देदप्य ज्वर संज्ञा त्वरतनो राश्वर्य मस्याश्चिरे
चेत अंदन चंद्रमः कमलिनी चिता स से
नाम्यति किन्त सोति रसेन शीतल तरे त्वा

मिति गीते ॥ सख्यतृकेशव पदमपनीते
राग मंगार नाल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ सरत्तरैदे
वत वैद्य ह्य त्वदेया संगी रत्न मात्र साध्यास
विमल वाथो करुषेन राधा सर्वेद्र वज्रा दधि
दरुणोसि ॥ २५ ॥ सा रो मो चति सीत्करोति
विलपत्यत्कम्यते नाम्यति ध्यायत्यद्भुमति

रा. गो.
गी.

नेपथ्यो चित नीलरत्न मवती भारवतारोत
न ॥ लखेद वज्र खंदरी जन मन लोक प्रदोष
धिर केश येन भूम केत रत्न त्रिदेवकीने
दनः ॥ २५ ॥ अथ तो ~~पञ्चन~~ जातो चिरमन्त्र
रक्तो लता गृहे दृष्टा ॥ तच्चिरिते गोविंदे मन
सिज मन्दे साखी शर ॥ ३॥ अंगोष्ठा भरणे क

मेक मेव प्रिये ध्यायेती रहस्यिना कथ मणि
लीला नरो प्राणिनि ॥ २७ ॥ नरा मणि विर
रुद्रान मेहे नयन निमीलित विन्नया न
पादे । ध्याति कथमसौ रसाल शाखो विर
दिदेहा दिलोक्य प्रथितामो ॥ २८ ॥ यथा
मय मखार विर मथ पसे लोक मौलस्यली

शुभो-
गी

ऊलेव्या हरेती । तव कि तव विथाया मन्दकेद
पे चित्तमस जल निधि मया थान लया म
गान्ती ॥ ३३ ॥ रागा रोथार ताल ॥ ४ ॥ अष्ट
पदी ॥ पश्यन्ति दिशि दिशि रहसि भवेते
त्वद थर मथुर मथुनि पिवन्तम् ॥ १ ॥
नाथ हरि सीदति राधावासगृहे ॥ त्वद

येति वदशः पञ्चेपि सेवारीणि प्राप्तेत्वा मरि
शेकने दिवन्ते शय्योचिरे थायति ॥ ३३ ॥
कल्प विकल्प तल्लयन सेकल्प लीलाश
न । व्याशालापि विना त्वया वरतन नैषा
निशान्तेयति ॥ ३४ ॥ विषल पुलकपालिः
स्तीत स्तीकार मलर्जनितज रिभका ऊर्वा

रा'गे'
गो'

सखी मनवारम् ॥ ५ ॥ स्निष्यति चेतति जल
ययकल्पम् ॥ हरिरूपगत शति तिमिर मन
लो ६ भवति विलेविति विगलित लज्जा । वि
लपति रोदति वासक सज्जा ॥ ७ ॥ श्रीजय दे
व कवेरिदमदितम् ॥ रसिक जनननवता
मपि मदिते ॥ ८ ॥ रागगोथारनाल ॥ ४ ॥ श्लोक

भि शायण रभसेन वलेती पतति पदति कि
येति वलेती ॥ २ ॥ विहित विशद विष किशाल
य वलया । जीवति परमिह नव रति कलया
॥ ३ ॥ मन्दर वलोकित मन्दन लीला मयुरि
षु रहति भावन शीला ॥ ४ ॥ त्वरित मयै
ति न कथ मभिसारम् ॥ इति रिति वदति

रा'गो'
गो'

श्व स्फट लोचन श्रीः ॥ वंद्या वनोतर मदीपय
देश जालै दिक् सेंदरी वदन चंदन विंड रिडः
॥३४॥ प्रसरति शशायर विवे विहित विले
वेच माथवे ॥ विधुरा विरचित विविध विला
पे सा परिता पेच कारेचैः ॥३५॥ विरह पा
ए मरारि मरारि मखोबुज युतिरयेतपिवेद

किं विप्राम्यसि क्लृप्त भोयि भवने भौडी रभूमी
रुहे । भ्रातर्यासिन दृष्टि गोचर मितः सानेदने
दास्यदम् ॥ राधाया वचने तदधरा मखान्ने
नेदोति के गोपतो गोविंदस्य जयेति सायम
निधिः प्राशस्य राभी गिरः ॥ ३३ ॥ अशान्त
रे व कटला कल वर्त्तपाता सेजात पातक

रागो
गी

मृतया अयिषे । किंते कृतोत भगिति तम
या तरेगै रेगाति सिच मम शाम्यत देह दा
हः ॥ राग गंधारताल ॥ ४ ॥ अष्टपदी ॥
कथित समये पिरिरहहन ययौवने मम
विफल मिद ममल रूप मपि यौवने ॥ १ ॥
यामिहेक मिह शरणे साखी जन वचन ।

नो विभ्रतीव जनोति मनो भवः सहृदये हृद
ये मदन् वायाम् ॥ ३६ ॥ मनो भवा नेदन् चेद
ना तिल प्रसीदरे दक्षिणा मेव वासनाम् ॥ न
लेजगत् प्राणा विधाय मथवे प्रो मम प्राणा
हो भविष्यति ॥ ३७ ॥ वायो वियेहि मल
या तिल पेच वाणा प्राणात् गृह्णाण नगदह

रा-गो-
गी

कृतकामिनी ॥ ४ ॥ अहह कलयासि वलया
दिमणि भूषणे ॥ हरी विरह दहन वह नेन
वह दूषणे ॥ ५ ॥ कसम सकसार तनमतज
शर लीलया ॥ स्वगणि हृदि हलिया मति
विघ्न शीलया ॥ ६ ॥ अह मिह निवसा
मिन गणित वनवेतसा ॥ स्मरति मथु

वेचिना । यद्वन्न गमनाय निशियामन मपि
शीलिते । तेन मम हृदय मिद ममम शरीरकी
लितम् ॥ २ ॥ मम मया मेव वर मति वि
तथ केतना किमिह विस हामि विरहा नल
मवेतना ॥ ३ ॥ मा मरुह विथर यति मथरम
प्रयामिनी । कापि हरि मन भवति कृत सु

रा-गो
गी

अये सर्व कथा भिरत्य मनसो वित्तिष्य वत्तोचले
राधाया स्तन कोरको यदि मिलनेत्रो हरिः पा
तवः तत्किं का मापि कामिनी मभिस्तनः
किं वा कला केलिभिर्वन्द्यो वेषभिरत्य का
रिणि वना भार्गो किमद्भ्यस्यति कोतः
कोत मन्त्र मन्त्र मापि पथि प्रस्था

सुदनो मा मणि नवेतसा ॥१॥ हरि चरण शर
ण नृदेव कवि भारती ॥ वसन्त हृदि प्रव
ति विव कोमल कलावती ॥२॥ रागा गेथा
र नाल ॥४॥ श्लोक ॥ त्वाम प्राण मयि
स्वयेवर परो लीयेदे नीरो दये । शोके सन्दरि
काल कूट मणिवन मूढो मयानी पतिः

रा'गो'
गी'

चित्तवेषा गलित ऊसम द्य विललित केशा । १ ।
कापि मथुरि प्रणा विलसति सुवति रथिकयु
णा ॥ हरि परिरेभणा वलित विकारा । कुच
कलशो परि तरलित हाश । २ । विचल दल
क ललिता नन चेश । तदधर पानरभसक
त तेदा । ३ । चंचल कादल ललित कपो

नमो वात्सल्यः संकेती कृत मेज वंजललता
ऊँजेपि यन्त्रागतः ॥४०॥ अथागतो माथ
व मन्तरेण साखी मिमे वीक्ष्य विषादमूको
विशोक माना रमिते कथापि जनार्दने दृष्ट
व देतदाह ॥४१॥ राग गंधार गीत गोविंद
नाल ॥४॥ अष्टपदी ॥ स्मर सम येवत विर

रागो.
गी.

श्री जयदेव भाणत हरि शमितम् ॥ कलिकल
वे जनयन्त परिशमिते ॥ ८ ॥ राग गंधार ताल
॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ सोरठा ॥ समुदित मदने रम
णी वदने सुवन चलितार्थरे । मृगमद तिलके
लिखति सफलके मृगमिव रजनीकरे । १ ॥
रमते यमना पुलिन वने विजयमगारि रथ

ला । साविरित रशत जचन गति लोला ॥ ४ ॥
दयित विलोकिता लज्जित हसिता ॥ वडवि
थ कृजित रति रस रसिता ॥ ५ ॥ विषल पुल
क पृथ्वे पृथ्वे भगा । ससित विमीलित वि
क सदनेया ॥ ६ ॥ प्रमजल कणा भर सभगा
शरीरा । परिपति तोरसि रति रणा थीरा ॥ ७ ॥

रा'गो-
गी-

ले करतल नलिनी दले । सकीत वलय म्मथ
कर निचये वितरति हिम शीतले ॥ ४॥ रतिर
ह जचने विपुल पचने मनसिज कनकासने
मणिमय रशने तोरण हसने विकरति
कृत वासने ॥ ५॥ चरण किसलये कम
ला तिलयेन एव मणि गण पूजिते ॥

ना। चनचय रुचिरे रचयति विकरे तरलित त
रुणा नने ऊरुवक ऊसमे चपला स्वावमे र
ति एति म्या कानने ॥२॥ चटयति स्वचने क
ह प्रया यागने म्या मद रुचि रुषिते। मणि
सर ममले नारक पटले नखपट शशि भू
षिते ॥३॥ जित विस शकले मड भज प्रया

शुभो-
गी

वदे॥६॥ शरा शैथारनाल॥३॥ अष्टपदी॥
अतिस तल कुवलय नयनेन तपतिनसा
किमलय शयनेन॥१॥ सखिया रमिताव
न मासिना॥ विकसित सरसि जललित
मुखेन॥ स्फटतिन सामन सिज विषाखे
न॥२॥ अस्त मथर तरस्तु वचनेन॥ ज्व

वसिष्ठ वरुणे सावक भरणे जनयति हृदि
योजिते ॥६॥ रमयति स्वभूषे कामणि सह
शे खिल हलथर सोदरे ॥ किम फल मव से
विर मित्र विरस स्वद सखि विट पोदरे ॥७॥
इह रस भणाने मधुरिष एव सेवके ॥ कलि
युग विविने नव सत्त उरिते कविन्दप जयदे

श-गो-
गी-

न जनवर तरुणो न वरुति न सारुज मति करु
णो न ॥ ७ ॥ श्री जय देव भाणि न वचने न प्रति
शान्ति हरि रपि हृदय मनेन ॥ ८ ॥ शया गोथार
नाल ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ नायातः सखि निर्दयो
यदि शठ स्त्वन्हूति किं हयसे । स्वच्छेदम्वज्र
वह्मभः सर मते किन्नात्र ते दृष्टो ॥ पश्या

सति नसा मलयजपवनेन ॥ ३ ॥ स्थलजलरु
ह रुचि कर चरणेन ॥ लहति नसा हिमक
र किशोरेन ॥ ४ ॥ सजल जलद समदय रुचि
रेण ॥ दहति नसा हृदि विरह भरेण ॥ ५ ॥ क
नक निकष रुचि शुचि ववनेन ॥ ससि नि
न सा परिजन हसितेन ॥ ६ ॥ सकल भव

रा.गो.
गी.

हे केशि मदन मदारे ॥ रमय मया सर मदन म
नोरथ भावि नया स विकारे ॥ प्रथम समा गम
लजितया पट चाट शनै रन कले म्भु मथ र
स्मित भाषितया शिथिली कृत जघन उ
कलम् ॥ २॥ किमलय प्रायन निवेशि
नया चिर मरसि समै वशयाने कृत परि

यप्रिय संगमाय दयितस्या कृष्णमार्गे यौगुरु
केंदार्ति भयादिव स्फुट दिदे चेत्तः स्वये यास्य
ति ॥ ४२ ॥ रागो यार नाल ॥ अष्टपदी ॥
निभत्त निकेज गदहे गतया निशि रहसिति
लीय वसन्ते चकित विलोकित सकल दि
शा रति रभस वशेन हसतम् ॥ १ ॥ सखि

रागो
गी

वनस्तन भारे ॥५॥ चरणरणीत मणि नूपुरया
परि श्रुति स्वरत विज्ञातम् ॥ सावरवि श्रेष्ठ
ल मेखलया सकव ग्रह चैवन दानम् ॥६॥
रति साव समय रसाल मया दर सकलि
त वदन सरोजम् ॥ निस्सर निपतित तन
ल नया मधुसूदन मदिन मनोजे ॥ ७ ॥ श्री

रेभणाचेवनया परिरभ्य कृताथरणे ॥ ३ ॥ अल
स निमीलित लोचनया पुलकावले ललित
कपोलस ॥ अमजल शकल कले वरयावर
मदन मदादति लोले ॥ कोकिल कल रव
कृजितया जित मन सिज तेव विचारे ॥ स
य कसमा कल केतलया नाव लिखित

रा.गो.
गी.

ये ऐव तद्विना यत्तदी सिद्धं सद्यो कितो वाङ्
गी एतन्नो स्तन्नो तन्नतः श्रेयोसिद्धेः सहिषः ॥
॥ ४३ ॥ अथ कथं मयि यामिनीं दिनीयम्
र एव जर्जरितापि सा प्रभाते ॥ अन्नं नय व
चनं खदन्ते मये प्रणतं मयि प्रियं माह
साभ्यं ह्ययम् ॥ ४४ ॥ रागा गेथारत्नात् ॥

जय देवभाषित मिदमतिशय मधु रिषतिथ
वन शीलम् ॥ सखसत्केहित राधिकया क
षिते वित नोत्त सलीले ॥ ८ अष्टपदी ॥ राग
मंथावताल ॥ ॥ श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल
मोक्कला दनदशा उहृत्य गोवर्हने विश्रुत
लव संदयीभिः राधिका नेदा चिरेवेवितः द

श्री
श्री

न विलोचनं चैव न विरचितं नील मरुपे दश
न वसनं मरुपां नव कस ननोति नव रत्न
रूपम् ॥२॥ वष रत्न हरति नव सार संगे र
त्न रत्न वरत्न रत्ने ॥ मयकत शकल क
लित कल थौन लिपे रिव रति जयलेख
म् ॥३॥ वरणा कमल गल दलक क सिक्त

तात् ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ रजति जतिन शुरु जाग
रसाय कषायित मलस निमेषे वहति नय
न ननराग सिवसुखद मदित रसा भित्तिवे
शे ॥ १५ ॥ याहि सपथव याहि केशव सावदकै
नदकादम् ॥ तामन सर सर सीरुह लो
चद यातव हरति विषादम् । कजल मलि

रा. गो.
गी.

कथं मथ वेत्तयसे जन मन गानम सम शरज्ज
र हनम ॥ ६ ॥ अमति भवान वला कवला
य वनेष किमत्र विचित्रं प्रथ यति पूतति
कै वदय वय निर्दय बाल चरित्रम ॥ ७ ॥
श्री जय देव भाणित रति वेचित्र खेडि
न सुवति विलापम ॥ शृणुत सदा

सिंदे तव हृदय सुदारे ॥ दर्शयतीव वहि मर्दन
हुम नव किसलय परिवारम् ॥ ४ ॥ दशान
पदेभव स्थिर गतस्मिन् जनयति चेतसि लि
दम् ॥ कथयति कथ मय नापि मया सह
तव वपुरेन दमेदम् ॥ ५ ॥ वहि विव स
लिन तरेतव क्लृप्त मनोपि भविष्यति नूनं

रागो
गी

पद्मा पयोधर तटी परि रश्मि लय कपशीर
मदित मरो मथसूदनस्य ॥ वक्ता नरा
ग मिव खिलद नेग खिद स्वदास्य पूर मन
पूर यत्न प्रियम् ॥ ४६ ॥ अत्रान्तरे मरु
ण रोष वशा मसी मनिः श्वास निस्स
ह मांवी समाली मपेत्त सखीदमी ।

मधुदेविबुधा विबुधालय नोपि ॥८॥ अष्टपदी
राग गंधार ताल ॥३॥ श्लोक ॥ तवेदं पश्येत्माः
प्रसर दन्तराग म्वहिरित प्रिया पादा ललककु
रित मरुणा योति हृदयस्मसाय प्रख्यात
प्रणय भर भंगेन कित वल्लदा लोकः
शोका दपि किमपि लज्जो जनयति ॥४५॥

रा. गो.
गी.

येहि मयि निर्देय देत देश दोर्वलि वेथनि
विड सलन पीडनाति चेहि त्वमेव मद मेव
य पेचवाणा चोडाल कोड दलना दसवः
प्रयोज ॥५॥ शाशि मति तव भाति भेय
रभर्षव जन मोह काल कोल सणी ॥
तड दिति भय भेजनाय सुनो त्वद थरसी

द्वितीया साखी बहने दिनीते सानेद गद्गद पदे
श्री दिखवाच ॥ ७ ॥ परि हर कता नेक शो
को तया सतते जन जन जचनया कोते प
सुनव काशिन विपति वितनी रमो यन्यो
नकोपि समंतरे प्रण यिनि पही रम्भा
रम्भे विथेहि विथेयनाम् ॥ ८ ॥ मय्ये वि

शुद्धो-
गी-

सि यदि किं चिदपि दत्त रुचि कौमदी हरति
दरति मिय मति चोरम् ॥ स्फुर द्युत लोचने
नव वदने चेद्भा रोचयति लोचन चकोरे
॥ प्रिये कान्त शीले मेव मयि स्मनमनिदाने
सपदि मद नानलो दहति मम मान मेदेहि
खलु कमल मय पात्रे । सत्यमेवासि यदि

यस्यैव सिद्धि मेवः ५- व्यययति ह्यमोने
तन्निष्ठ पेचय पेच संतर्हण मधुरा लापे स्ना
पे विनोदय दृष्टिभिः समीपे विमर्षी भा
वन्तावहि मेवम मेवमो ह्यय मति शय स्त्रि
म्य मय्ये प्रयोय मय स्थितः ॥ यगमेथा
द लाल ॥ ३ ॥ गीत गोविंद ॥ अष्टादी ॥ वद

श'यो'
गी

नीलनलि नाभ मपि तत्त्वितव लोचने थारयति
कोक नद रूपे ॥ कसम शर बाण भावेन
यदि रेजयसि कल मिद मेत दन रूपम् ।
४ ॥ सुदत्त कच केभयो रूपरि मणि मे
जरी रेजयत्त नव हृदय देशे ॥ रसत्त र
सनापि नव चन जचन मण्डले घोषय ।

सदति माय कोपिनी देहि खर नखर शरचा
तम । चटय भुज वेधने जनय दद विरुनेमे
नवा भवति मरुजने ॥२॥ त्वमसि समभ
ष्टो त्वमसि सम जीवने त्वमसि समजल
यित्तम ॥ भवत भवतीह मणि मजत मन
शोपिने तत्र सम हृदय मति यतनम् ॥३॥

रागो
गी

कदना नलो हरत नइयाहित विकारे॥२॥३
ति चंदल चाइ एइ चारु सर वैरिणो रायिका
माय वचन जाते ॥ जयति पद्मावती रमणी
जयदेव कवि भावती भाणिन मनि शातम
रागो योथार गीत गोविंद ताल॥३॥ श्लोक।
बेहूक युति बोध बोध बोध मधुरा स्त्रिय मध

रा.गो.
मी

वर्तते रुचिर चित्र लेखे अवा वस्ते विवय यौ
वर्ते वस्त्रसितानि दृष्ट्वा गता ॥५२॥ भूषत
दे यन्त्रययोगान् वेगितानि वाणाशनाः अ
वणा पालि रिति स्मरेणा ॥ तस्या मनेग जस्य
जंगम देवताया मस्याणि निर्जित जगति
किमपितानि ॥५३॥ मुखापे निरुताः कटाक्ष

कच्चविः गेडे चेडिचकास्ति नीलनलिन श्री
मोचने लोचने । नासान्वेति तिल प्रसून पद
वी कुंदाभ दंति प्रिये प्रायस्त्वन्मात्र सेदया
दिन्यते विश्वेश प्रष्ठा पुत्रः ॥५१॥ दृशौ तत्र
मदाल से वदन मित्र सेदीपने गतिर्जन न
नो रमा विजित रेभ मूरुदये रत्नवकला

विशालो निर्मातु मर्मवायो श्यामात्मा ऊर्द्विलः
करोतु कवये भारोपि भारोयमे । मोहे तावदये
च तत्त्वितवते विनाथो रागादान् सहनः स्त
न मेदल्लसव कये प्राणैर्मम क्रीडति ॥ ५॥
मानिनी माव विधे सदसो जयति सोपते ॥
मृद्वेणुः समहृतः श्रीमद्गोपालकथकिः १५५

श-गो-
गो-

फली ऊरुषे ऊच कलेशे ॥२॥ कतिन कथि
न सिद मच पद मचिरे ॥ मापरि हरि हर मति
प्राय रुचिरे ॥ किमिति विषीद सियो दिषि
विकला ॥ वहसति उवाति सभा तव विकला
॥ जनयसि मनसि किमिति शुरु विदम ॥
शृणु मम वचन मनीहित भेदे ॥५॥ हरि

उ चर्चा विषे शीतोष्ण क्लृप्तो हि मेकत वहः
क्रोश सदो यातनाः ॥ ५० ॥ यथा गेयार शु
ष्टपदी ताल ॥ ३ ॥ हरि रमि सवति वरति
मृदु पवते किम परमधिक सखि सखि म
दते ॥ १ ॥ माथवे माकुरु मानि निमान मये ॥
ताल फला दपि गुरु मति सरसे ॥ किम वि

रा-गे-
गी-

वचन रिष रिद सावी सेवा सोये सावी वहिमा
निलो विष मिद सथा शिषि र्यसिन् इतोति
मनो गते ॥ हृदय मदये तस्मिन्नेव प्रसवे
लते दलान् कवलये दशा स्वामः कामो
विकाम निरेकशः ॥ ५६ ॥ गता यति शृणा
ग्रामे भामे भ्रमा दपि नेहते वहति चप ॥

त मन्त्राय निदेशे ॥ ५ ॥ स्थल कमल गोजये
मम हृदय येनने जगि नरित रेवा परभायम
भगा मस्या वाणि करवाणि चरणा हयै
सयस लसद लक्तक शयाम ॥ ६ ॥ स्वर गाय
ल खेडने मम शिरसि मेडने देहि पद प
लव मदारै ॥ ज्वलति सयि शरणा मदन

रा.गे.
गी

दिमे दिगे तत्तण्णत्के सप्पालस भूजित मि
ति व्या मोह कोलाहलः ॥६॥ सरुवि मनन
येन प्रीणयित्वा मगादी गत वति कृतवेषे
कषावे कंज शय्यो रचित रुचिर भूषो दृष्टि
मोषे प्रदोषे स्वरति निरव मादो कापिरा
थो जगाद ॥६॥ ॥ सामो द्रव्यति वक्ष्य

विनोषे दोषे विमंजति ह्यतः ॥ सुवतिषु बलत
लो क्लृप्तो विहारिणा मोविना पुनरपि मनो
यामे कामे करोति कयोमि किं ॥ ५५ ॥ श्रीति
म्वस्तनतो हरिः कुवलयया पीडेन सादे रणे
रथा पीन एयोथर सारणा क्लृप्तमेन मेमे
हवान् ॥ यत्र स्थिति मीलति तन्नामथ

श. गं.
गी

मनो रथेन च समे शाने तमः सो दत्तो को कानो
करुणा स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्पना न
समये विफले विले विले नमसौ रम्योभि
सारत्नः ॥ ६३ ॥ आशेषा दन्त वेदना दन्त
नालो लोला दन्त स्वात्तज प्रोदोथा दन्त से
धुमा दन्तता रेभा दन्त प्रीतयोः प्रत्यार्त्य

ति प्रियकथो प्रत्येग मास्तिगाने श्रीति यास्य
ति रेस्यते साविस्मा गत्येति विनाकुलः ॥
सत्त्वो पश्यति वेपते प्रसक्तय त्यानेदति स्वि
यति प्रत्यङ्गति मूर्च्छति स्थिर तमः पुंजे
निकेजे प्रियः ॥६२॥ त्वदाम्येन समं सम
प्र मथना निरमोश्च रस्तेगानो गोविंदस्य

रा.के.
गी.

धोतनील निचोल चारु सहशे प्रयोग मालि
ने ॥६५॥ काश्मीर गौर वषा मभि सारिका
ए ॥ मावदशेव मभिनो रुचि मेजगीभिः ॥
एतत् तमाल दलनील तमेतमिष्टे तस्येव
मिष्टे निकषो पलनान्ननोति ॥६६॥ राग
गंधार ताल ॥३॥ अष्टपदी ॥ विर चित्त वा

अतयो अंताविलितयोः संभाव्यौ जीवनो
इत्यो विह कोन कोन तमसि व्रीडाविमि
योदसः ॥६४॥ अदो निर्दिप संजने अदो
यो सापिच्छ यदावली मूर्द्धिषाम सवोजस
स ऊचयोः कलरिका एवकम । धर्मी नाम
मि सार सत्वर हृदो विषड् निजंजे सावि

रा-गे
गी

आए रमणीय तरे तरुणी जन मोहन मधुरि
प्र रावे ॥ कसम शरासन शासन वेदिनिधि
क निकरे भज भावे ॥ ३ ॥ अतिल तरल कि
सत्य निकरेण करेण लता निकरेवे ॥ प्र
ण दिव कर मोरु करेति गति प्रति मेच वि
लेख ॥ ४ ॥ सुदिन मन्त्रे तरे वशा दिव

ॐ वचन रचने चरणो रचित प्रणि पातम ॥ सप्र
ति मंजल वेजलसी मति केलि शयन मन
यातम ॥ १॥ मय्ये मथ मयन मन्गल मन
सर रायिके ॥ चन जचन स्तन भार भरे दर
मन्यर चरण विहार ॥ सखरित मणि मेज
री मयैहि विथेहि मयल विकारम ॥ २॥

श'गे'
शी'

लय कण्ठानै रव बोधय हरि मपि निज गति
शोलम् ॥७॥ श्री जयदेव भणित मयरी क
न हार सुदासित वामम् ॥ हरि विनिश्चित म
नमा मयि तिष्ठत केद तदी मविरामम् ॥ द।
शरा गंधार जाल ॥४॥ श्लोक ॥ सामान्द्रस्य
ति वक्षति प्रियकथो प्रत्येग मा लिखने श्री

सुखिन् इति परिदेये ॥ एह मनो हर हर विम
ले जल धारे ममे कच कंभस ॥ ५ ॥ अथिगतम
खिल साखी भिदि देतव वष रपियति राग स
जम् ॥ चेदि राणित रशाना रव दिंडिम मभि
सर सम लजम् ॥ ६ ॥ सर शर सभग मवेन
साखी मवलेव करेण सलीलम् ॥ चल व

रा'गो'
गो'

रासन विलंबन मन सरते हृदयेषे ॥५॥ थीरस
मीरे यमना तीरे वसति वने वन माली ॥ गोपी
पीत पयोधर मर्दन चंचल कर श्रग शाली ॥
नाम समेते कृत संकेते वादयते मृदवेणु ।
वद्ध मन्वते तन्वते तन संगत पवन चलि
त मपिरेणुम ॥२॥ पतति पत्रे विचलित पत्रे

ति या स्याति वे स्याति सीत् समा या न्येति चित्ता क
लः ॥ सत्त्वा स्य स्याति वे पते पुलकय त्या नन्द
ति स्थियति प्रत्यङ्गकति मूर्च्छति स्थिरतमः
पुजे निकेजे प्रियः ॥ ६६ ॥ रागा रोथाय ताल
॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ रति सत्त्वा स्ये गत मभि सा
रे मदन मनो ह्य वेषम ॥ नक्र निने विनि

रा-गे
गी

परीते राजसिख कृत विष्णुके ॥५॥ विगलित
वसनं परिहृत दशानं चटय जघने मणिताने
किसलय शायने पंकज नयने तिथि मिवहर्ष
तिथाने । ६ । हरि रमि मानी रजति दिदानी मि
य मणियाति विदामम ॥ ऊरु मम वचने स
त्वर रचने हरय मय रिषकामे । ७ ॥ श्री जयदे

शेकित भवउपयानम् ॥ रचयति शायने सच
कित नयने पश्यति तव पस्यानम् ॥ ३ ॥ म
त्वरमथीरे त्यज मेजीरे दिष्ट मिव केलि सुलोले
चल सखि केंजे सति मिर पुंजे शील य नील
निचोलम् ॥ ४ ॥ अस्मि सगरे रूप स्थित हारे च
न श्व नरल वलाके ॥ तरि दिव पीतेरति वि

रा'गे'
गी

समर्पित सभगाः सत्वायुष्यन्त्रैषेव कृतार्थता
म॥७॥ हाय वली तरल कांचन कांचिदयम
मेजीर कंकण मणि कृति दीपितस्य ॥ हारे
निजेजतिलयस्य हरीं निरीक्ष्य व्रीडा वतीम्
य सखी निजगाढ रायाम् ॥ ६८॥ रा'गे'
थाद नाल ॥ ३॥ अष्टपदी ॥ ॥ मेज तर

वैष्णव हरि सेवे भगति परमाणीयम् ॥ प्रस
दित हृदये हरि मपि सदये नमन सकल क
मनीयम् ॥ ६ ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ श्लोक
समय चकिरे विसृजेती दृशेति मिर पथि
प्रति कृतं मङ्गलः स्थित्वा मन्द पदानि वितन्वे ।
नी कथमपि इहः प्राप्ता मेरी रनेगी नरेगिभिः

शुभं
गी

लसति वलितललित गीते । ४ । वितत वद्ध व
लि नव पल्लव चने । विलस विर मल सपीन
जचने । ५ । मथु सदित मथुप कुल कलित रा
दे । विलस सदत रस सरस भावे ॥ ६ ॥ मथु
नर पिक तिकरति नद सावरे । विलस दश
न रुचि रुचिर शिखरे ॥ ७ ॥ विहित पद्मा ।

कंजजल केलि सदने विलस रति रभ सहसित
वदने ॥१॥ प्रविश राधे माधव समीप मिह न
व भवद शोक दल सायन सोरे । विलस कच
कलशा तदल सोरे ॥२॥ कसम चय रचित सु
वि वास मोहे ॥ विलस कसम सकुमार देहे
॥३॥ चल मलय वन पवन हरभि शीते वि

रा-गो-
मी-

य वेदा महे । ६४ ॥ अहमिह निवसामि याहि
राया अननय सद्वचने चानयेयाः ॥ इति म
युविषणा सावीतिशक्ता स्वय मिद मेत्य अ
मर्जगाद वायम । ७० । त्वाचितेन चिरे बहेन
य सति श्रोतो भटशेतापितः केदर्येणचण
न मिच्छति सथा सम्वाथ विवा यवम ॥ अ

वती साव समाजे ॥ भणति जयदेव कविगज
राजे ॥ ६ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ सात्वा नंद प्रेदरा दिदि विषहृदै रमेदा
दरा दानमै रंजरेद नील माणिभिः सदाशीतेदी
वरम ॥ खलेदमकरेद सदागलनात्दा कि
नी मेडरे श्री गोविंद पदार विंद मशुभस्कंदा

शुभो
गी

नर नारयति नयोः ॥ तदानीं राधायाः प्रिय
नमः समालोक समये यथात खेदात्तु प्रस
र यिव हर्षात् नित्यः ॥ १३ ॥ भजेत्या स्तुत्या
ने कृत कण्ट कथा इति विहितः मिते याने
गोहा हर्षिव हिताही परिजने ॥ प्रियाये
यशेणाः स्वर शर समा कृत सुभगम्

सो कंत दले करुतण मिह भूतेप लक्ष्मी लव
क्रीते दास श्वोष सेवित पदो भोजे कृतः संभ
सः ॥ ७१ ॥ सास साधससा नेद गोविंदे लो
ल लोचन सिंजान मंज मंज मंजीरे प्रविवे
श निवेशतम ॥ ७२ ॥ अति क्रम्या णोरो प्रव
ण पथ पर्यंत गमन प्रवासे नैवात्तणो सत्तल

रागा
गी

इषे वषे वद वदन मनेग विकारं ॥ हारममल
तरतार सरसि दथते परिलेख्य विहरम् ॥
स्फुट तर फेन कदम्ब करेवित मिव यमना
जल हरम् ॥ २॥ श्यामल मडल कलेवर मे
डल मथि गत गौर डहलम् ॥ नीलतलि
न मिव पीत पद्म पटल भरवल यित म्

सलजाया लजा वगम दिव हरे स्मृताः ॥ १४ ॥
याया मेथार नाल ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ राधावद
न विलोकन विकसित विविध विकार वि
भंगम् । जल निधि मिव विश्व मेडल दर्शन
तरलित नेगा तरेगम् ॥ १५ ॥ हरि मेकर स
विर ममि ललित विलासम् ॥ सादृशं यरु

रा-गे-
गी-

किरणा छुरितो दरजल थर सेंदर सकसमके
शे निमिरो दित विथ मेडल निर्मल मलयज
निलक निवेशे । ६ । विपुल पुलक भरदेतारि
ते रति केलिकला भिरथीरे । मणि गणकिर
ण समूह समज्वल भूषण स्वभरा शरीरम
७ ॥ श्रीजयदेव भणित विभव दिशणी ह

ले॥३॥ तयल द्येवल चलन मनोहर वदनम
नित रति रागम । स्फुट कमलोदर खिलित
विजत युग मिव शरदित रागम ॥४॥ वदन
कमल परिशीलन मिलित मिश्रि सम केद
ल शोभम ॥ स्मित रुचि कसम समलसि
ताथर पलव कृत रति लोभम ॥५॥ शशि ।

रा'गो'
गी'

सर्वोच्च हरिः प्रियाम् ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥ अष्ट
पदी ॥ किशलय शयने तले करु कामिनि च
रण कमल विनिवेशे ॥ तव पद पल्लव वैरण
राभव मिद मन भवत ह वैशाम् ॥ १ ॥ क्षणमथ
ना नाययान् मन्त्रयान् मन्त्रयान् रायिके ॥ अद-
कर कमले च करोति चरण मन्त्रयान् मिता ।

न भूषण भारे ॥ प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं
सर्विरे सकृतो दयसारे ॥ ६ ॥ प्रष्टुपदी ॥ राग
गंधारताल ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ गतवति सखी हे
दे मेदत्रया भरतिर्भर स्मर पर वशाकृतस्फी
तस्मिन् स्नायिता ययाम ॥ सरस मलसे दृष्टा
दृष्टा मूर्धन्येव पलव प्रसर शयने निनिभादी

श.शे.
मी.

शो विनिवेशय शोषय मनसिज नायम् ॥४॥
मथर स्यात्स मपनय भासिति जीवय स्त
त मिव दासम् ॥ त्वयि विनि हित मनसे विर
हानल दय वपुष मविलासम् ॥५॥ शशिस
ति मावय मणि रशनायण मन युगा कंद
तिनादम् ॥ अति युगले पिक रुत मम श

सि विहरे ॥ तणा मुप कुरु शयनो यदि मासिव
नृपुंर मनगति पूरे ॥ २॥ वदन स्रथानिधिग
लित मस्तन मिव रचय वचन मन कले ॥ वि
रह सिवापन यामि पयोधर रोधक मुरसिड
कले ॥ ३॥ प्रिय परि रेभगा रभस वलित मियु
लकित मति डखापम ॥ मधुरसि कुचकल

राशो
गो

तात् ॥४॥ श्लोक ॥ प्रसूतः पुलको करेण निवि
शस्तेष्वेति मेघेण चक्रीडा कृत विलो किते यर
सुधा पाने कथा नर्मभिः श्रान्तेदाभि गमते स
न्मय कला युद्धेण यस्मिन् नभः उद्धतः सतयो
र्धभूत सरता रेभः प्रिये भावकः ॥५॥ मीलह
ष्टि मिलनकोल पुलके सीत्कार थाय वशा द

मय विरादव सादम् । ६ । मामनि विफल रुषावि
फली कृत मव लोकित मधुनेदम् । मीलनि
लजित मिवन यने तव विरम विस्मरति एव
दम् । ७ । श्रीजयदेव कवेरिद मनपद निगदि
त मधुरिष मोदम् । जनयत रसिक जनेषु म
नोरम रति रस भाव विनोदे ॥ राग गेथार

राशे मन्त्रितः कचेथर मभस्यनेन संमोहितः कोतः॥
कामपि तन्निप्रापत दह्ये कामस्य वामायातिः
७८॥ वासो^{माशं}के रतिकेलि संकसरणा^भरेभातया । सा
हस प्राये^{नि}कोत जयाय किंचिदपरि प्रारेभियन्तश्च
मो^{नि}तिस्पेदा जवनस्यली शायिलिता देविलि
रुत्कम्पिते वक्षो^भत्मीलितं मन्त्रि पौरुष

यत्ता कलकेलि काक विक सदेता अथौ ताथ
रे छा सोत्ताम्य ययोथरे भ्रशापरि खेयात ऊरेगी
दृशो र्षोत्कर्ष विमुक्त निः सस्तनो र्थन्यो
ययत्तातनम ॥ ५५ ॥ दोभ्यो से यमितः प
योथर भरेणा पीडितः पाणि जैय विहोदश
नैः सताथरपदः ओणी तदे नास्तः इस्तेता

रागो
गी

श्रोत्र मपि मेहन बोद्धयानिज गाद निरावाथा
या स्वार्थीन भर्त्तका । दश । इति मनसा निरादे
ते सुरतोते सानितोत विन्नागी राथा जगाद
सादर मिदमानेदेन गोविंदम् ॥ दश ॥ राग गे
थार नालतीन ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥ करु यहुन
न्दन चन्दन शिशिरतरेण करेण पयोध

रसः स्वीयो कृतः सिध्यति ॥ ५४ ॥ तस्याः पाटल
पाणिजो कित्तमरो निश कषाये दृशो मतिर्ह
तो थरशोणिमा विललिता सस्तसजो मूर्ध
जाः कोचीदा मदरस्यो चल मिति प्रातन्नि
त्वानै दृशोरेभिः कामशरैस्तद्वृत्तमभूत्य
सर्मनः कोलितम् ॥ ६० ॥ अथ कोते रति

शुभे
गी

मनसिज पाशा विलास करे सुभवेस निवेशय
केडले ॥ ३ ॥ मरु चये रचयेत मपरि रुचि
रे सचिरे मम सत्सखे जित कमले विमले
परिकल्पय नर्मजत कमल केसवि ॥ ४ ॥
मयामदरस ललिते ललिते करु निल कमलि
क रजनी करे ॥ विस्ति कलेक कलेक ।

१॥ मृगा मद पत्र कमल मनोभव मेघाल कलश
सहोदरे ॥ १॥ निजगाद सायड नंदने क्रीडति
हृदया मेदने ॥ दयारुचन लेखित कजल स
जलव प्रियलोचने प्रति कल रोजन मेजन
के रति नायक मोचने ॥ २॥ नयन करेगा
नरेगा विकामिति वास करे प्रति मेरले ॥

रागो
गी

येदेव वचसि जयदे सदये हृदये ऊरु मंडने हरि
चरण स्मरण सत कृत कलि कलष ज्वर वि
डने ॥ ६ ॥ अष्टादी ॥ राग गंधार ताल ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ वचय कचयोऽपरे चित्रे करुष कपोल
यो र्चदय जचने कोची मेच सजा कवरी भ
रम ॥ कलय वलय ऐणी पाणी पदे ।

मत्तानन विप्रमिन्न अम शीकरे ॥ ५ ॥ मम रु
विरे चिकरे ऊरु मानद मानस जयज वाम
रे ॥ रति गलिते ललिते कसमा निशिखिदि
शिखिड कडामरे ॥ ६ ॥ सरसचने जचने मम
शेवर दारणा केदरे ॥ मणी रशना वसना
मदलानि शुभाशय वासय हंदरे ॥ ७ ॥ श्रीज

ग.गो.
मी.

जः ॥ ८५ ॥ पर्येको कृत नाग नायक फणाः
श्रेणी मणीनो गणो संक्रांत प्रति विव संव
लनया विधुद्विभु प्रक्रियाम् ॥ पादो भोरु
ह थारि वारिधि सना मदगो दिद्वः शतैः
काय ब्रह्म मिवाचरे नप चित्ती भूतो हरिः
पात्रवः ॥ ८६ ॥ तिर्यककंद विलोल मौलि

ऊरु नृपरा विति निरादितः प्रीतः पीतो वयो
पि तथा कथेत ॥ ६४ ॥ प्रातर्नील निचोलम
सुतसुरः सेवीत पीतोपके राथाय प्रकिते
तिलोका रसिति खैरे सखी मेदले ॥ श्रीशते
चल मेचले नयनयो राथाय राथानवे खैरे
खैरे सखी वज्रोक्त जगदा नन्दाय नेदात्म

शरी
गी

नवेशे ॥ चलित द्यो चल चेचल मौलिकपोल
विलोल वसंतम् ॥ १॥ शमेश्वरि मिह विहित
विलास ॥ स्मरति मनो मम कृत परिहास ॥
चंद्रकचारु मयूर शिखिडक मेडल दल धित
केशाम् ॥ प्रचर प्रदेव यन रन रेजित मेडर
मदित सवेशे ॥ २॥ गोपकदेव विनेव वती

नरलोते सस्य वेशो हरजीति स्थान कता वथान
ललता लक्षणा सेलदिताः प्रेम्णा कन्दलि
ताः समग्य मथरे तथा खलितौ तथा मथरे
वो मथसूदनस्य ददम देमे कटाक्षोर्मयः ॥
६० ॥ राधा यथारताल ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥
सेचव दथर तथा मथर धति मखरित मोह

श-गं.

हे ॥ पीत पयोधर परि मर मर्दन निर्दय हृदय
कपाटम् ॥ ५ ॥ मणिमय मकर मनोहर कुंड
ल मेरितगंड सुदार ॥ पीत वसन सन्यात
मृति मवज मय मर वर परिवारम् ॥ ६ ॥
विशद कंदेव तले मिलिते कलि कलष भये
शमयेतम् ॥ मामपि किमपि तरेण दने

सखि चेतन लेखित लोभे ॥ देय जीव मयरा
थर पल्लव मल्ल सित सित शोभम् ॥ ३ ॥ वि
पुल पुलक भज पल्लव दलपित दल्लव सब
ति सहस्रम् ॥ कर चरणो दसि माणि गणाम्
षण्ण किरण विभिन्नत मिस्रम् ॥ ४ ॥ जलद
पटल चलदिउ विनिन्दक चन्दन विडलला

रागो-
गी

श्रीगोदस्यते ॥ मामहोत्स विलज्जितस्मितसुधा
मया ननेकानने गोविंदे व्रज संदरी गणा वृ
ते यशसि दृष्टा मित ॥ दद ॥ अंतर्भोजन मौ
लि हृष्टेन चलन मंदम् विसेसनः स्वव्याकर्ष
ण दृष्टि दृष्टेण महा मेरे ऊरेणीदृशो दृष्ट्यात
व ह्य मान दिविष उर्वीमडः लापते ॥ धेसः

गच्छता मनसा वसयेते ॥१॥ श्रीजयदेव भ
णित मति हेदो मोहन मधुविष शृणु । हवि
चरणा स्मरणे प्रतिप्रति शृणु वता मनव
पम ॥ दगायाग गेथार जाल ॥३॥ श्लोक ॥
हस्त स्वस्त विलास वेशम नञ भूवलि म
दलदी हृदोत्तारि ह्योतवी हित मति हेदो

रागो-
गी

माथीक विज्ञान भवति भवतः शक्यै कर्कश
सिद्धात्ते इत्येति केत्वा नमते सत ससि दीर
नीर रसस्ते ॥ माकंदे हृद कोत्ता थर पर
शितले गच्छ यच्छेति यावद्भावे शृंगार सा
रसत मय जय देवस्य विष्णवचासि ॥ ५१ ॥
श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेवी सत श्रीज

केसरिषो व्योहवत्तवो अयोसि वेशोरकः । २५ ।
यस्यार्थकलास कौशल्यमन्त्र ध्यानेन यदैतवे
यम स्नेहार विवेक मन्त्रमपि यत्कावेष ली
लागिते ॥ तत्सर्वं जयदेव पेडित कवेः कृ
लोक तन्मात्मनः सानेदाः परिशोध येन
हृदयेः श्रीगीत गोविन्दतः ॥ २५ ॥ साधी

रा.गो.
गो.

थार गीत गोविंद परिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥

७५

७५

७५

७५

यदेवस्य ॥ पद्मशरादि प्रियवर्ग कंठे श्रीगी
त गोविंद कवित्तमस्त ॥ जय श्रीविष्णवे
हि इव मंदारकस्यैः स्वये सिंहदण्डिपि
पद्मस्य मद्रित इव ॥ भज्या पीड क्रीडा हन
कवलया पीड करिणाः प्रकीर्णा हरिचैर्ज
यति भजदेवो मयसिम् ॥ ५३ ॥ इति रामो

श.दे. कृत सकृत् कामिनी ४ अरुह कलयासिवलया
गी. दिमणि भूषणं । हरि विरह दहन वहनेन वरुह
षणं ५ कुसुम सकुमार तन मतन शरलीलया स
गपि हृदि हेतिमामति विषम शीलया ६ अरुमिर
निवसामित गणित वन वेतसा । सरति मधु सूद
नो मामपि नवेतसा ७ हरि चरण शरण ।

रूप मयि यौवनं १ यामिहेक मिह शरणे सखीजन
वचन वंचिता । यदन्तगमनाय निशिगमन मयि शी
लितं । तेन मम हृदय मिदममम शरकीलितं २
मम मरण मेव वरमति वितथ केतना ॥ किमिह
विसहामि विरहा नलमचेतना ३ मामहह विषु
रयति मधुर मधुयामिनी । कापि हरमनभवति

रा.रा. रागिनी रास कली ताल चव्वरी विस्रपद ॥

२६

मेरी मति रायिका चरण रजमै रहो ॥ इति अस्या

26

ई इहे निहचे कस्यो अपने मनमै थस्यो भूलिके को

उ कसू औरइ फल कहो ॥ इत्यंतरा । अथ आभो

राः करम कोऊ करो ज्ञानइ अभ्यसो सकतिके ज

तन करि वृथा देखो दही ॥ रसिक बलभ चरण

न क्षत कीने ॥ रागिनी रास कली ताल ॥
विस्मयद माई गिरि धरन के गुण गाउं ॥ इति
स्थाई मेरे तो ब्रत पढ़ै निस दिन औरत रुचि उप जा
उं ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । विलन ओगन आ
उ लाडिले नै कहे दरसन पाउं ॥ केभ निद सदि
लग के कारण लाल चला गिर हाउं ॥

रा-रा-

२७

27

उदि वेदि मिलि सीत सौ मेरो हित वचन जिति भूलि
फेरे ॥ रसिक प्रीतम सेवा विहरि रस रेखा सौ क्योन
इव अनेग को सवति वेरे ॥ रागिनी राम कली
ताल ३ विसपद ॥ बेलाल तैरी पैजनीया ऊन
कैंदी ॥ इति प्रख्याई माथेवे तैरे सकट विराजेरी
ऊ गवाल लटकैंदी ॥ श्येत रा । अथ अभागा भईरी

कमल जरा शरण परि यह महा प्रष्टि पय फल
लहो ॥ रागिनी राम कली ताल चवरी वि
स्रपद मानिनी मानि जिति मोन पनो करे आष
पाइन परै नाथ तेरे ॥ इति प्रस्थाई दरस जा को क
रन जगत नर से सदा सो तोर कटक तेरो वदन है
रे ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः हो कहति ससजि

रा-रा

२८

२८

वडे गोपकी वेदी ॥ जे भन दस गिरि धरन लाल
सो भज ओढ़ नील पेदी ॥ रागिनी राम कली
नाल ॥ विस्मयद ॥ हो मोहन हो हारी तम जीते
इति अस्याई ॥ नागर नट पट देऊ हमारे को पत
हेतन सीते ॥ श्येतन ॥ अथ आभोगः रसिक गो
पाल लाल अवलति पर पनी कहा अनीते ॥ पर

चकोर चेशवलि गति मति रति अट कैदी ॥ आसक
रन प्रभ मोहन नागार चरण कमल चित दैदी ॥
रागिनी रास कली ताल ३ विस्रपद । हमारे
दान देरी गुजरेदी ॥ इति प्रस्थाई तित उठि आज्ञा
त चोरि दधि देवन आज्ञा प्रदानक भेदी ॥ इत्येत
रा । अथ आभोगः अति सत रात केसे कुटोरी

रा-रा

२५

29

वरस ऊमारे ॥ रागिनी राम कली ताल ३ विस्र
पद । वनत नही जसना जूकोन हैवो ॥ इति अ
स्थायि । चोली चीर कसले भाजे कदित भयो चर
जैवो ॥ श्येतया । अथ आभोगः । जो हरि हंससो
ऐसी करि होतो इह बाटन ऐवो ॥ श्री विटल गि
रि धरन लालसो वीनती करि चर जैवो ॥ रागिनी

मानेद प्रभु हम सब जानत तब गालबजावत रीते-
रागिनी रामकली ताल ३ विस्रपद मोहन देहो
वसन हमारे ॥ इति अष्टाई । कहैगी जाय ब्रजपति
जहके आगै करत अनोतल लारे ॥ इत्येतत् । अथ आ-
भोगा । तब ब्रज राज कि सोरनेद सन सब दिनके
प्राण प्यारे ॥ गोविंद प्रभु पीयदासी निहारी सुंदर

श-श- ली ^{३-} विस्मयद । मनोवलभा योश पद कमल सु
गले सदा वस तमस त्रिविध रस भाव वलिते ॥
इतिप्रस्थाई । अथ महिमा भास वासना वासिते सा
भवत् जात निज भाव वलिते ॥ इत्येतत् । अथ प्रा
भोगः । भजत् भजनीय मति शयति रुचिरे चिरे
चरण अगले सकल गुण हललिते ॥ वदत् हरिश्

राम कली ताल २ विस्वपद । ग्वालिन मोरानि
वसन अणाने ॥ इति प्रथमः । सीत काल जल
भीतर दाफो आवत नाही दयाने ॥ श्रेयतरा ॥
अथ प्रभोगः । तम ब्रज राज कुमार प्रवल अति
कौत परी यह बाने ॥ हम सब दासी तिसरी ब्र
जपति तम बड निपट सयाने ॥ रागिनी राम क

रा-रा

३१

आवे सखि रही रास रसाभ अमेरो ॥ रागिनी रास

कली ताल ^३ विस्रपद । हेलीन वति केजली

लारस हरित श्रीवल्लभ वनमोरे ॥ ^३ अंग अंग विष
^{इति अष्टाई}

न क्षिप्रत चत दामिनि इति फल फल प्रति दोरे

इत्येतया । अथ आभोगः । करत आवेस विरह

विरहनी प्रति भूतल वरत कदोर ॥ पञ्च ताम

स इति सा भवतु सुकुरुणि भवतु मम देव सुत जन्म
फलिते ॥ रागिनी राम कली ॥ विस्वपद ॥
श्रीमदलभ रूप सुरेयो ॥ इति अष्टाई । नख सिख
प्रति भावनके मूषण वेदावन सेपति अंग अंगे ॥ इमे
तरा । अथ आभोगः । अरस परस गिरि थर जूकी
नई ऐन मैत ब्रज राज उक्तेयो ॥ पद्मनाभ देवे वनि

श-श

३२

32

पद्मनाभ सत हितकीयो मारग नेह सरलिका वे
ह ॥ रागिनी रास कली ताल ३ विस्रपद ।

रुक मिनि चलन सिखा वति पाउन ॥ इति प्रस्था
ई । सतकी राहै प्रेरिया डेलति सोभा कोटिक
भाउन ॥ ३ मंतरा । प्रथम भोग । हम कि हम
कि पग थरत थरति पर लेउ छेरा उर लाउन ॥

मथुरेस विचारत श्री लक्ष्मन भट सुत ओर ॥
रागिनी राम कली ताल ॐ विस्मयद । सखि
री सोभा रस मय भाव प्रकट करि श्रीवल्लभ वर
देह ॥ शतिप्रस्थाई । अंग अंग ब्रज वध विरहनी
व्यापी जगल सनेह ॥ श्येतरा । अथ आभोगः
श्रीवेदायण देह प्रकटित हृदे निगल केदरा देह-

रा-रा

३३

३३

पश्य पश्य स्तुते ॥ दृग्गोचरं कल विहार एव
स्थितिस्तदीये तद एव भूयात् ॥ रागिनी राग
कली ताल ॐ विस्मयद । नैन भरि देखि अव
भोन तनया ॥ इति ग्रन्थाई । केलि पियसों करै
भव रत वही परे अम जलति भरत आनेद मनया
इत्येतया । अथ आभोगः । चलति देखी होइलेति

हेरा वनको चेद श्रीवल्लभलवे लाउऊलराउन ॥
रागिनी राम कली ताल ३ विस्रपद । व्रजपरि
वृद्ध वल्लभे कदा तचरण सरोरुह मीतणास्य देमे
शतिप्रस्थाई । तब तटगत बालका कदाहे सक
ल निजो गगना सदा करिष्ये ॥ ३येतरा । अथ
आभोगः । हेरावने चारु वृह दने मन्मनो रथे

३४
३५
कहत वारे वार सवन के अथारथन निर्हनके ॥ ३५
तया ॥ अथ आभोगः ॥ लेत जसना नाम देत प्रभै
पदथोम रसिक प्रीतम प्रिया वस जो जितके ॥

पिय कौ मोहि इन बिना रहति नहि एक छिनया ॥
रसिक प्रीतम रास करत जसना पास मानो निर्दैन
न कीहौ जयनया ॥ रागिनी राम कली ताल ॐ
विस्वपद । श्याम सखि दाम जहो नाम इनके ॥
इति प्रस्थाई । तिस दिना प्राण पति आय हिय मै व
से जोई गावे सजस भाग्य तिनके ॥ एहि जग मै सार

रा-रा कस दास प्रभ निरिथर न पर वारि होत न प्रोन ॥

३५

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी कसजीके ॥

निपट खोटे कान्ह सति जननी कहु वात ॥ इति अ

स्थाई होत जब समदाउव करत तव सिस भाउ एको

तपाइके नैन भरि ससि कात ॥ इत्येतरा प्रया प्रामो

गः देवि रस रीतिकी प्रीति विपरीति गति मति मोन

राशिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ बोलन कोक
कला निधान ॥ इतिप्रस्थाई मम वचन सुनि उदि च
लहि सखि कादि सेदरि मान ॥ इत्येतदा- अथप्राभोगः
तेव नाम सहित निकज महे पीय करत मरली गान ॥
कैलि कौतम रसिकनी प्रियसु तिहिदे किनि कोन ॥
मेस रजनी वसत उरु पति जन कि भयो विहोन ॥

रा-रा

३६

३७

स्योम सेंदर रेति कहो जागे ॥ इति अस्याई देवि वि

न श्या माल अथर अजन भाल जावक लग्यो

गाल पीक पागे ॥ अनेतरा ॥ अथ अमोरा बाल

उरा मगी अति सिथिल अरा सवती नरे बोल

उर नाव नि दागे ॥ गड्यो केकन पीढ निपट विह

वल दीढ सर्वरी लालनही पलक लागे ॥ कहिये

छाडि सेवा लगी रहो निमि प्रात ॥ जात नही विसरि
देवि ब्रजत जतन थरि समझि कहे चेद देखे कमल
विगसात ॥ इत चूच रजवे लाल जस मति हरे उर कि
यसि थरति पाउ थरि सख किलकात ॥ मनहुं प्राणा
वन वादरी सुरत जिहान प्रानंद सब फूल प्रति जल
जात ॥ रागिनी राम कली ताल ४ ॥ षट् षटी-

रा-रा

३७

३७

^२नि ^३म ^२नि ^३य ^३पै ^३म ^३य ^२प ^३म ^३ग ^३र ^३सै ^३म ^३य ^३नि

पदी पलटि परे पट अट परे अभरन ॥ सिथिले अंग

^३सै ^३नि ^३य ^३पै ^३म ^३य ^३प ^३म ^३ग ^३र ^३सै ^३म ^३य

अंग सबहि देखियत निमाके जागरन ॥ नवप्रिया

^३नि ^३सै ^३नि ^३य ^३पै ^३म ^३य ^३प ^३प ^३ग ^३र ^३सै ^३म ^३य ^३नि

संग प्रहर आरो पलन पाए परन ॥ चतुर्भुज प्र

^३सै ^३नि ^३य ^३म ^३य ^३प ^३म ^३ग ^३र ^३सै

भुजी तिर तिरन कियो रति पति शरन ॥ ॥

^३य ^३म ^३म

रागिनी राम कली नाल ३ षटपदी ॥ मोहन ब

^३पै ^३य ^३पै ^३म ^३ग ^३म ^३य ^३नि ^३सै ^३नि ^३य ^३पै

सन हमारे दीजे ॥ इति अष्टाई वारनै जाउ सुनो नंद

^२नि ^३सै ^२नि ^२थो ^३नि ^३सै ^२नि ^२थो ^२प ^३मो ^२प ^२थो ^३प ^२थो
सोचि बात कारे जीय सक बात कौन त्रिय जाके अउ

^३नि ^२सै ^२नि ^२थो ^२मो ^२थो ^२नि ^३सै ^३थो ^२सै ^२नि ^२थो ^३प ^२मो ^३प
राग रागे ॥ रास के भनलाल गिरि धरन पते पर क

^२थो ^३प ^३मो ^३थो ^३नि ^३सै ^२थो
रत कूटी सोह मेरे आगे ॥ रागिनी रास कली

^३थो ^३प ^२मो ^३थो ^३नि ^३सै ^२थो ^३प ^३मो ^३थो
ताल ३ षट्पदी ॥ भले आण भोर गिरिवर धरन ॥

^३मो ^३प ^२थो ^३नि ^३सै ^२नि ^२थो ^३प ^३मो
इति अस्याई अरुण नैन जे भात आलस धरत उवा

^२ग ^३थो ^३सै
मरो चरन ॥ इत्येतया अथ आभोगः पावा लट

ग. ग. गायित्री राम कली नाल ३ सुलफावता षट्पदी

३८

३८

लालन जागत रैन विहानी ॥ इति प्रस्थाई ॥

देवत पथ आविष्टो अति हारी कही लाल रति

मानी ॥ इत्येतया ॥ अथ आभोगः कटो का

लकेहि लाल सखिन संग एव विविध कहानी

रंग अनग सखत चित आवत हनियो अथि कपिरा

नेदन सीतल गान नन भीजे ॥ अथ आभोगः कौ

न सभाव हृषा अन श्रीसर उनवानन कैसेजीजे ॥

सनि इविपावे वज महर जसो मति जाउ करे अव

हीजे ॥ पसव अवलाजल मोऊ उचारी दारुण इव

कैस सहीजे ॥ प्रभवल राम हमदासो तिहारी जो

भावे सो कीजे ॥ इति आभोगः ॥ ॥

रा.रा.

३५

३९

हारै आवज सभा जवि रही निकसि वेनहि पाउ ॥ वि

न राए पति वने छुटे हमे गोजलगाउ ॥ श्यामगा

न सरोज आनन ललित लैले नाउ ॥ सरहिल

गन कहिन मनकी कहो काहि सनाउ ॥

रागि रास कली नाल ३ ॥ बटपदी । लाल रस

समे नैन आज निमि जागे ॥ ३ निप्रस्थाई अति वि

नी ॥ भोरभये आप मोरे गढ़ देखत सखी हिरानी-
रसिक प्रीतम दोऊ अति यो अरुण भए कहो क
होरे निसि रानी ॥ रागिनी रास कली तालजप ३
षट्पदी ॥ किहि मिस जस मनी के जाउ ॥ इति
अस्याई ॥ सकल सख निधि सख निरखि के नै
न तषा बुजाउ ॥ इत्येता- अथ आभोगः ॥

रा-रा रि कर आरो ॥
४०

५०

साल अर सात अरुण भण रति रन के रेग पाये ॥

इत्येतया । अथ आभोगः सुंदर श्याम सभगना

प्रदपदी येग येग नख लत दोगे ॥ मानद कोप

नि दार सन्नाख सरसाय भण परिभागे ॥ चत्तर

भुज प्रभ गिरि धरत अथिक क्ववि वेदन भुज

दी लागे ॥ मानद सन्नाय चाप भेट थरि रसो जो

रा-रा सरके प्रभ दरस दीजे अरुन कीरन छई ॥ ॥

४१

रागिनी रास कली ताल ४ षट्पदी मैया तेरे

लालको माव देवनरो आई ॥ इतिप्रस्थाई का

लि माव देवि गई दधि वेचन जातहि गयोहे वि।

काई ॥ अंतनरा अथशाभोगः दिनते हनौ दोस

लाभ भयो गाइनि बहिया जाई ॥ आईसवे घेभा

रागिनी राम कली नाल ३ षट्पदी कलजीके
मोहन जागिहों बलि गई ॥ इतिअस्याई बाल
बाल सब द्वार हाफे बेर वनकी भई ॥ इत्येतरा ॥
अथ आभोगा पीत पट करि हरसखतै खादि दे अर
सई ॥ अति अनेदित होत जसमति देवि इतिनित
नई ॥ जागे जेगम जीव पशु त्रिग और वज्र सबई ॥

श-श-

४२

५२

आभोगः गलीजसोकरी एकजनीकी भेट भयो भ
द भयो ॥ अंकदे चली सयानी खालिन हरिको वद
न फिरि हेयो ॥ प्रानही मंगल भयो सावीरी है है स
ब काज भलेयो ॥ परमानंदप्रभ सख निराखत मि
हो भव सागर केरो ॥ रागिनी राम कली ॥
ताल २ छप्परी ॥ हो बलि बलि जोउ कलेउ

य सायकी गिरि थर देऊ जगई ॥ सुनि चिय
वचन विहसि उदि वैदे नागारि निकट बुलाई ॥
परमा नेद सयाती ग्वालिन चली सेकेत बनाई ॥
रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ लाल
को दरसन भये सवेरो ॥ इति प्रस्थाई वदत ला
भ पाउंगी माई दस्यो विकैहै मेरो ॥ इत्येतरा ग्रथ

रा-रा

४३

५३

जे ॥ रागिनी रास कली ताल ॐ षट्पदी ॥

जयति आभीर नागरी शान नाथे । जयति वज्र राज भू

षण जसो मति ललित देतन विनीत मिश्री सहस्राथे-

इति अष्टाई जयति पात परभात दायि श्रीदामा

सेरा अखिल गोथन हृद चरे साथे ॥ इत्येतरा ॥

अथ आभोगः दोर रमणीक हृद विपिन सुभस्थित

1
कीजे ॥ इति अष्टाई खीर खोड चूत अति मीठो
है अब को कोरवक लीजे ॥ अंतर्ग ॥ अष्टाभि
गः वेनी वडे सुनो मन मोहन मेरो कस्यो जो पत्नी
जे ॥ ओहो हूथ सय थोरो को सात चूट जो पीजे ॥
हो वारीया बदन कमल पर अंतरा प्रेम जल भीजे ॥
बहुस्यो जाय विलो जसुना तट गोविंद संग करि ली

श-श-

४४

५५

वि सुदित भई मनहि मन कहति आये वचन भयो
प्राप्ता ॥ इत्येतया । अथ आभोगा । नैन अर सात
अति बार बार जे भात केढ सो लगि जात हरष गा
ता ॥ वदन पौच्छियो जमन जल तिसो थोडके क
ह्यो मस काइ कछु खाइताता ॥ ह्य प्रौढ्यो अति
अधिक मिष्टी सोनि लेऊ सोवन पौनि पाए दता-

सुंदरी केलि गुण गूढ गाथे ॥ जयति तरति जात
त निकट रास मंडल रच्यो तत्तता येई येई तत्तता
थे ॥ चतुर्भुज रास प्रभु विरिथरन बद्धि शुबष्ठी
विदल प्रकट व्रज कियो सनाथे ॥ रागिनी रास
कली ताल ॐ वदपदी ॥ लालहि जगाउ ब
लिगई माता ॥ इतिप्रस्थाई निरावि मराव चेद ब

श-श

४५

तनी श्रंगकीगति दीति जीयल जानी ॥ उपदि
केकन पीढ वक्र विह वल दीढ ईढ नालावी खानी
पाणि पलव अथर दसन सौ गहि रही अरथ बेन
बोलि वचन हार मोनी ॥ मूरप्रभ अंक भरी ओण
पति नागरीन बल नागार उरह्छालि मोनी ॥
रागिनी राम कली नाल २ छटपदी ॥ जैये त

सूर प्रभु कियो भोजन विविध भोजि सौ पियो पय
मोद करि चूट साता ॥ रागिनी राम कली ताल
कं षट्पदी ॥ राधिका श्याम जन देवि मसका
नी ॥ इति अस्याई । हार विन शृणु लेख अथर
भेजन रेख नैन तेमोर तन रात बोनी ॥ इत्येतया
अथ आभोगः ॥ पाग लट पटी बनी उरह झूटी

रा-रा- व्रज प्रियनमै कौनसी नारि वह जाके तम लाल
४६
५६
प्रनराग रागे ॥ वनभोज दास प्रभ गिरि थरा
काहे को करत ऊरी मोह मेरे आगे ॥ रागिनी
राम कली लाल ॐ वटपदी ॥ नैन उनीदे
भए रेग राते ॥ इति प्रस्थाई मनहु गुलाल
ऊखम पर सजनी फिरत भेग मद माते ॥ ३५

हो जहो रेति जाये ॥ इति प्रस्थाई । वनी विन
गुणमाल ओह अंजन भालसै उर लग्यो गेउ पी
क पाये ॥ इमेतरा । अथ प्राभोगः । आरक्त नै
न अति सिथिल सब अंग गति दुग मग तया विन
ही पलक लागे ॥ चपल चानर फीट उपटि केक
न पीट देखियत उर मोऊन खन दगो ॥ सकल

रा'रा' मन मया वैथो मोहन नैन वोनसो ॥ इति अस्याई ॥
४७
५७
गह्रभावकी सैन अचानिकत कितायो भुजरीक
मोनसो ॥ श्रुतया । अथ आभोगः ॥ अथम नाद
वलचेर निकटले मरली समक सर वेथानसो ॥ पाछे
वे कविनै मथुरे हेसि चात करी उलरी सदनसो ॥ व
नभुजदास पीर पातन की मिदतन औषध ओनसो ॥

तया । अथ आभोगः प्रेम पराग पोखरी पल दल
प्रफुलित मदनल नाते ॥ सदा स्ववास विलास वि
लोकनि प्रकट प्रेमके माने ॥ तैसिये मारुत मेद
जन्दा वरि मिलत सदिन खवि नाते ॥ सोचे स्वर
श्याम मानिनि निज हित करिकेलि कलाने ॥
रागिनी राम कली ताल ४ षट्पदी कलजी की

श-या

४८

५४

ते विते सि सत नरा खति केद लगा ३ सेंदर श्यामस
भया मडवा नीलत रात मोयित वनीत खानध
जन भाव जैसै जनावत वाल खरा ॥ चतुर्भुज प्र
भ गिरि थरके वाल विनोद नेद माव देखे हाफे
दयादया ॥ रागिनी राम कली ताल ३ वट्ठ
दी उपमा थीरज तज्यो निरावि कुवि ॥ इति प्रस्था

कैकै सख नवहरी उर अंतर आलियान गिरिधरसजो
नसो ॥ रागिनी राम कली नाल ॥ छटपदी ॥
अेरिया क्वाडिरे गति अरग अरग ॥ इतिप्रस्थाई
नूपर वाजत न्योन्यो थरणी थरत परा ॥ इत्येतया ॥
अथ आभोगः कबड़े कजसौदा माहि भज पसारि
हेसि उग मगाइके उलटिउग ॥ जननी मरित मन वि

राधा रागिनी राम कली ताल ८ षट्पदी । हांछोरीव
रिक्त मारि कौन को किसोर ॥ इति अस्याई सोवरी व
रन मन हरन वेसी थरन काम करण केसी गति जोर
इत्येतरा । अथ आभोगः पवन परसि जात चपल हो
न देवि पियरे पदको चटकी लो छोर ॥ सभग सो
वरी छोटी चटाते निकसि आई वेकवीली बटा कौ जे

ई कोटि मदन अशुनो बल हासो केउल तेज छप्पो
रवि ॥ श्येतगा । अथ आभोगः विजन मीन मया
जहै जेते दीन रहै कौ हूदवि ॥ गिरिधर पटन रह
महिल जावत सकुच तनही खोटे कवि ॥ ईषद हा
मदसन इति निरघन वज्र सिखरस ऊचाने सुरणा
मलीला वपुका छियो पटनर मेदि विराने ॥

रा-रा' इत्येतदा । अथ आभोगः । सब चतुर्गई विस्मरि जातहै
५० खान पान की जात ॥ विन देवे छिन कलन परतहै प
ल भरि कलप विहात ॥ सति भामिनिके वचन मनो
हर सावि मन अति सकचात ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरि
थरन लाल सेवा सदा वसो दित रात ॥ रागिनी रा
स कली ताल ॐ षट्पदी । चतुर चारु चेद्व वली

सो कवीलो ओर ॥ एच्छति पाऊनी खारि हाहा होमे
री आली कहा नाउ कोहै चित वित को चोर ॥ नेददा
सि जाहि वाहि चकचौथी आउ जाउ भूल्योरी भवन
गवन भूल्यो रजनी भोर ॥ रागिनी राम कली ताल
घटपदी । करत हो सवे सयानी वात ॥ इति
प्याई जोलों देखे नाहिन सेदरि कमल नैन मसिकात

रा-रा ५१
५१
ल मरति का दह मोरे ॥ सति कल दस सभ लय वह
थन चरी लाल गिरि धरन सौ हाथ जोरे ॥ रागिनी
राम कली नाल २ घट पदी । देखो मेरे भाग की स
भ चरी ॥ इति अष्टाई । नवल रूप कि सोर मूरति के
दले भुज धरी ॥ इत्येतदा । अथ आभोगा जाके चरण
सरोज गंगा प्रेम ले सिर धरी ॥ जाके चरण सरोज प

साव चकोरे ॥ इति प्रस्थाई अस्तमे चरणेति व्रज
जवति भूषणो कमल लोचन नंद नृपकि सोरे ॥ इत्ये
तरा । अथ प्रामोदः । मोनि मेरो कस्यो अति साल र
सरीति क्यो करावति सावी वद्धनि होरे ॥ मिलेकिति
थार अव केवर चूरान्न रसिक वर भूषल चित्त तो
रे ॥ नव रंग केज महेत वनो महित नाथ कृणित क

रा.रा.

५२

52

रहती करि कोति ॥ अब हम पै कौ सही परति हे
मणि मानिक की होति ॥ बुढ़ विवेक वचन चा
नरी सर्वस लियो बुराय ॥ सूरदास प्रभु के गुण
औ गुण कासौ कहिये जाय ॥ रागिनी राम क
ली ताल ^{गीत} सदृश ॥ यन यह राधिका के
चरन ॥ इति अस्याई । सभरा सीतल अतिस

रसत सिलास नियेत तरी ॥ जाके वदन सरोज निर
खित आस सगरी मरी ॥ सर प्रभुके संग विल सत स
कल कारज मरी ॥ रोगिनी राम कली ताल ३ घट
परी । गोपाले माई वारे हीनै देव ॥ इति प्रस्थाई ॥
जानौ नही कौन पैसी बिचारीके कल छेव ॥ इत्येत
रा । अथ आभोगः कवजेक उरते माखन खाते सुनि

रा-रा-

५३

ल ^{गीत} षट्पदी । यत्न यह राधिकाके चरन ॥ इति

प्रस्थाई । स्वभरा सीतल अति सकोमल कमलके

से चरन ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । नखवेद चा

रु अनूप राजत विविध सोभा धरत ॥ कृणोत न

शर कंज विहरत परम कौतुक करत ॥ रसिक ला

ल मनमोद कारी विहर सागर तरत ॥ विवस

कोमल कमल कैसे वरन ॥ इति श्रेतरा । अथा
आभोगः । नावचेदचारु अन्तर्प राजत विविध
सोभा धरत ॥ ऊणित नूपुर जंज विहरत परम
कौतुक करत ॥ रसिक लाल मन मोदकारी वि
हर सागर तरत ॥ विवस परमानन्द छिनछि
न श्यामजीके शरत ॥ रागिनी राम कली ता

रा.रा.

५४

५५

ग्राम जीतो बोधि अपनी परत ॥ सरके प्रभ तरन
तारन राखि अपनी शरन ॥ रागिनी राम कली ता
ल ३ घटपदी ॥ बहे जोत बहि मान यरि आवे ॥
इति अस्याई । हेदर श्याम बद्धरि सन्नाख कै प्रेबज
वदन दिखावे ॥ इत्येतया । अथ आभोगः । तब
लग मान करु कोऊ कैसे जव लग बह दरसन न

परमा नेद छिन छिन श्याम जीके शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली ताल ^{गीत} षड्पदी । बहि बहि

वात लागी करन ॥ इति अस्याई । श्याम सेदर मद

न मोहन आप तेरे चरन ॥ इत्येतया । अथ आभोगः

उदिम उपर विकर कूटे विकर उपर छरन ॥ काम

को दल साजि आई आउ देदे लरन ॥ विहर को से

श-श'

५५

किति रुत रुत वानी ॥ शंभुतरा । अथ आभोगः

सुतके कर्म गावति आनंदभरि बाल चरित्र जानि

जानी ॥ अम जल बूंद राजे वदन कमल परमन

द्व सरद वर खानी ॥ पुत्र सनेह बुचात पयो थर

प्रसूदित अति हर खानी ॥ गोविंद प्रभु सुट रुत

चलि आप पकरि रई मथानी ॥ रागिनी राम

हि पावे ॥ दृष्टि परमेन मधुकर निर्दिष्टि स्निग्ध सहज
सरोज हि पावे ॥ त्रिभुवन मोह होउ बदै जवति
आरज पणहि दृष्टावे ॥ जेभन दास प्रभ गोवर्धन
थर कुल मरजादा पावे ॥ रागिनी राम कली ता
ल ॐ षट्पदी । अहो दधि मयनि घोषकी रागी ॥
इति प्रस्थाई । दिव्य वीर पश्ये दक्षिण को करि किं

श-श

५६

56

प्यारी तनतै ॥ रसिकटरोजिति दसाश्यामकी कव
हे मेरे मनतै ॥ रागिनी राम कली नाल ३ घट
पदी । चरण कमल की चेरी तेरी छाउझ लालनेद
के ॥ केसोहे दोन कहा किति लीयो दीयो न कवहे
वचन वदन अर विंदके ॥ देखत साखा साखी जन
सगरी चरित चपल ब्रज चंदके ॥ लालनस ऊंचत

कली ताल ॐ षट्पदी । लटकत आवत केज भव
नै ॥ इति अस्थाई । छरि छरि परत रायिका ऊ
पर जागर सिथिल रावनै ॥ इत्येतया । अथ आ
भोगः । चोकि परत कवड़े मारग विच चले सरो
य पवनै ॥ भण्ड सास भरम राथाके सकुच त
ह्यो सरवनै ॥ आलस मिस मारे नहीत हेने कुन

रा. रा.

५७

५७

शेतेत रा । अथ आभोगः ॥ स्नेह प्रणाम कमल
दल लोचन हमहै दासी तिहारी ॥ जो कछु कहो
सोई हम करिहै चरण कमल परवारी ॥ अंग अंग
केपत मन मोहन विलसत सनहु हमारी ॥ हर
दास प्रभु रासिक सिरो मति तम जीते हम हारी ॥
रागिनी रास कली ताल बटपदी ॥ चर्चरी ।

येचरापे चत पारत पावत विविध अट पटे फेटकी ।
मटकी खसत हसत सब ग्वालनि निरावति हारे
छेदके ॥ रसिक सदा मन वसो विविध गुण रस नि
धि आनंद केदके ॥ रागिनी राम कली ताल ३ षट्
पदी ॥ हमारी येवर देखो मराठी ॥ इति प्रस्थान
लेकर चीर कदम पर बैठे हम जल मोक उचारी ॥

रा. रा. दिवङ्मनक सुत वासना भेरा भव जलधि तराणे ॥ वद
५८
५८ न हरि दास इति निज वरणा मात्र कृत गोक्रला थीश
५८ पद कमल वरणे ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । चर्चरी । जयति राधिका रमणा वरचरणा
परिचरणा इति वल्लभा थीश सुत विट लेशे ॥ इति प्र
स्थाई ॥ दास जन लौकिका लौकिके सर्वथा कैवलि

रुचिर तरु वल्लभा दीश चरणो ॥ इति प्रस्यार्थे । प्रसूते
सर्वदा संदया कृति जगन्मोहने हृदि हता विहित कर
णो ॥ इत्येतया । अथ प्राभोगः विहित माया वादवा
दि देव जादि जन संगज नितात्म जनक मति हरणो-
पविल साधन रहित दोष शत कलष मति विमति
भर भरित निज दास शरणो ॥ अजसा कामको पा

रा-रा

५१

59

विद्युसगति निज वलेशे ॥ रागिनी रास कली ता
न ॐ षट्पदी ॥ श्रीगोकुल नाथ निज वप्रथ
स्यो ॥ इति प्रस्थाई । भक्त हेत प्रकटे श्रीवल्लभ ज
गतै निधिरज हस्यो ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः ॥
नेद नेदन भय तव विरि गोप ब्रज उदस्यो ॥ नाथ
विदल सवनकैके परम हित अनु सस्यो ॥ अति प्र

नो दयति हृदय देशे ॥ इत्येतत् । अथ प्राभोगः ॥ स्या
पयत मानसं सततं कृतं लालसं सहजं सख मातु चि
रूप देशे ॥ भालगतं तिलकं मृदादिशोभासहितं
मस्तकावहं सितं कलकेशं ॥ सहजं हासादिभूतं
वदनं पेकजं सरसं वचनं रचनां पराजितं स्वदेशं ॥
अखिलं साधनं रहितं दोषं शतं सहितं मतिं दासं ह

रा.रा.

६

60

गाय श्रणार भव तिथि तारि अपनौ कर्यो ॥ दास मा
यव जस देखे चरण शरण पश्यो ॥ रायिनी राम
कली ताल वटपदी ॥

रा.रा.

६३

६३

खाल वाल बिलन कौ गोरे भन हूँ ॥ ब्रज ज
न सब हाँपी माव देवन अति आरत सब को ॥
उहि बैदे लपगोद जसोदा सेदर सन तिहे लो ॥
रसिक प्रीतम लागि गौँ जननिके मोगत रोटी रो
३ ॥ रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥
दग मग चलति अरु रही भोति ॥ इति अष्टपदी

रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ भोर
भयो जागोहो ललना कहा तम अजरुं रहेहो सोर
इतिअस्थाई पीओ थार अपनी थोरीकी जैसे देह
बल होइ ॥ इत्येतरा अथआभोगः वैनीगुहे देउ
दग अजतन मसि बिडका मख थोइ ॥ हसत वदन
सु सदन निहारौ नान्हो नान्हो दतियो दोइ ॥ देखत

रा-रा

६४

64

नेद कुमार खरत सेवा लीनै सरद विमल की रानी-

कल दास गिरिधर पियके सेवा अथर सधारस

माती ॥ रागिनी राम कली नाल ॥ अष्टपदी-

गवालिन पिछवा रेकै बोल सुनायो ॥ इति अष्टपद्या

ई । कमल नैन हरि करत कलेउ कौरन मखलौ

आयो ॥ इत्येतया । अथ आभोगः । मैया एक गा

तवनि केजते राधा भोमिति प्ररुणा उदैवर जाती
उत्पेतरा । प्रथमामोगा । रतिकी कलि सुमिरि
मृग नैनी बार बार मस काती ॥ बदन जोतिने
सुनिरी भोमिति मेदत उउ पति कोती ॥ निसके
चिन्ह प्रकट देखि यत हैं काम केलि कुल काती ॥
प्रीतम प्राण रतन सेशट कुच भेटि जग ईछाती ॥

रा-रा

६५

65

नीरवालिन उलटि अंक गिरिथर पिय पायो ॥

राशिनी राम कली ताल ३ प्रष्टपदी ॥ मोखन

तनिक देरी माय ॥ इतिप्रस्थाई तनिक कर परत

निकरोटी मोगत चरण चलाय ॥ इत्येतया । अथया

भोगः । कनक भूमि परतनि करेषा करत एकस्यौ

थाय ॥ केपियो गिरिसेस संकयो दधि हेत प्रकलाय-

यवन चार्दे वस्त्रा झाई वसायो ॥ वेन नल ईल ऊ
द नहि लीनी अरवराय कोउ साखान बुलायो ॥ च
क्रित नैन चहे दिस चित वत सत्य इहे कियो सप
नो पायो ॥ फले अंगन मातर सिकवर विभवन एर
रस कत्रनि छायो ॥ मिलि बैठे सेकेत सदन मै
विविध भोति कीनो मन भायो ॥ परमानेद सया

राजा ६६
66
बोदि मन मोखन जो मेरे धन होरी ॥ श्रोतरी ॥ अथ
आभोग ॥ बोधो केचन बिभ कलेवर उभय भजा द
रा होरी ॥ राखो कठिन कठोर ऊचन विच सकेन
कोउ छोरी ॥ अथर दसत तिरों रस गोरस कुवेन का
ऊ कोरी ॥ काम देउ देखे परचर को नाउन लेइव
होरी ॥ तब कुल कोति आनि तिरछी भई तमा अ

मेरे मनके तनिक मोहन लागो मोहि बलाय ॥ तनि
क सख परत निक वतियो बोलत है तनराय ॥ जस
मतीके शाण जीवन थन लीयो उरल पदाय ॥ नेद
ऊवर गिरि थरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥
रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ आज ह
रि पकरा पाप चोरी ॥ इति प्रह्लाद लेखायो चोर

रा.रा.

६७

कोरे लगि देख्यो मेरी जात न आयो ॥ वेनीकी कर
गहरी चामरी चुचट माज द्यवायो ॥ मत रोवो नम
सौ कौन कहत है लेउ छंवा झल रायो ॥ श्रीमखनै
उचरि गई देदतियो नवहेसि केठ लगायो ॥ परमा
नेद प्रभु प्राण जीवन थन विसद विमल जस गायो ॥
रागिनी राम कली ताल ^{गीत} सुष्टपरी । मोहि द

पराय किमोरी ॥ शिव परहाय थराइ हर प्रभसो
च सौच सिर छोरी ॥ शारिनी राम कली ताल ३
अष्टपदी । माखन चोररीमें पायो ॥ इति अष्टपदी
जैयत कहो जान कैसे पैयत वज्रत दिन नही लायो
इत्येतदा । अथ आभोगः । सौज कहति ही होत कहा
है नित उदि भाजन लगन कुछायो ॥ वज्रत वार

रा-रा

६८

६८

श्रीजसनाजी तिहारो दरस मोहि भावै ॥ श्रीगोकु
 लके निकट वसत है लहरन की खवि आवै ॥ सख
 करनी डख हरनी श्रीजसना जो जत प्रात उठि न्यवै-
 मदत मोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जूक होवै-
 हेरा वनमै रास ख्यो है मोहन सरली बजावै ॥ सूर
 रास प्रभ तिहारो मिलन के वेद विमल जश गावै ॥

धि मयन देव लिगई ॥ जाउ बलि बलि बदन उप
र छाडि मया नीरई ॥ इति प्रस्थाई लाले देजे नव
नीत लौंदा आरि कि तत मढई ॥ इत्येतया । अथा
भोगः सतेहेति विलोकी जस मती प्रेम पुल कित
भई ॥ लेउ छंगल गाय उरसौ प्राण जीवन जई ॥
बालकेली गोपालकी व्रज आस करन नित नई ॥

रा-रा

६२

रि सजन की तो प्रथम हे मने के मास ॥ एवर होइ
नेद सत मेरे वन दासों इहि आस ॥ नवरी चीर ह
रे हरि नागर चढि कदम की शरि ॥ परमा नेद
प्रभु वर देवे कोउ यम कियो मरारि ॥ रागिनी
राम कली ताल ३ अष्टपदी । खालिनि अर्पन
वीर लेइ ॥ इति प्रस्थाई । जलनै निहारि निकट

रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी । हरि जस गा
वति चली ब्रज सेदरि श्रीजसना के तीर ॥ इति अष्टा
ई । लोचन लौने बाह जोटि करि अवगति कुल कत
वीर ॥ श्रुतया । अथ आभोगः । वेनी सुथिर चारु
काये परे कटि तट अंबर लाल ॥ हाथनि कूल लीये
इलीया भरि अरु सत्ता मणि माल ॥ जल प्रवेश क

रा-रा- स्वरसुभावहमारोक्त उर पति हो काम भय ॥ के
सौये भोति भजे कोऊ मो जेते सवे संसार जय ॥
रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ समि
रो श्रीविटलेश कुमार ॥ इति प्रस्थाई । अति प्र
गाथ प्रणारभव निधि भयो चाहो पार ॥ इत्येत
रा । प्रथमाभोगः । मैवलि रहत करुणा सिंधु

कै होउ कर जोरि कै सीस देऊ ॥ इत्येतरा । अथ आ
भोगः । कत हो सीत सहन ब्रज सेदरि होत असि
त कस गान सवे ॥ मेरे करे आनि पहिरो पट इत
नो अंग विधि होत अवे ॥ होअंतर जासी जानत
सबन की कत उरा वत लाज के ॥ करि हो श्रन
काम कृपा करि सरद समै ससि शन के ॥ सेतन

१-१-

७२

7/

कोमल सदाचित उदार ॥ गोकुलेश हृदे वसो म
ममल पाल निहाल ॥ माल तिलक नत जीतक
हे परी जदपि प्रकार ॥ श्रेत भक्तन दीयो धीरज भ
पपदशतार ॥ चारजगमै विसद कीरति भक्त
हित अवतार ॥ नव किशोर कल्याणके प्रभुगा
उे वारे वार ॥ रागिनी रास कली नाल । अथ

रा-रा

७२

72

गोप गोपीनवल प्रेम राति वेदिना तट मदिन रहत
जैसे चकोरी ॥ लहरि भावरि ललित बलका सु
भग ब्रज बाल ब्रत हरना रास फलदा ॥ ललित
गिरि वर थरत प्रीयक लिरनेदिनी निकट कस द
स विहरत प्रवलदा ॥ निरावि हरवि ब्रज जवनि
घोष मगारि ॥ यकित जित तित प्रमर सुनि गत

२
राशिनी राम कली ताल ४ अष्टपदी ॥ नमोतति
न नया परम पुनीत जया पावनी कल मन् भावनी
रुचिर नामा ॥ इति अष्टपदी अखिल सख दशनी स
व सिद्धि हेतु श्रीराधिका खन रति करन श्यामा ॥
श्वेतरा । अथ आभोगः । विमल जसु वन नवका
ननो मोद पुत पुलिन अनिरम्य प्रीय वज्र किशोरी ॥

रा-रा- तेज उतारि ॥ केहसो पजनील माणि मय मालरवी
७३ से वारि ॥ नील गिरि वर गारल मानो लाय लई म
73 दनारि ॥ वदन रजतन श्याम मेरित शोभ इहि अनु
हारि ॥ मनहुं प्रेग विभूत राजत शोभ सोई मथहा
रि ॥ विदस पति जस मति के आगे प्रसन को करे
आदि ॥ सुरदास विरेचि जाको जपत जस मात व्यादि-

नेद लाल निहारि ॥ विन वयन सिरके सलट चड़े दि
सा छटकी जारि ॥ सोस पर जानो जटा थारि सिस
रूप कियो विप्रारि ॥ रुचिर रचित ललाटके सारि
विंड सोभा कारि ॥ रोस मनज नदीय लोचन रहे
रिष जन जारि ॥ कुटिल हरित लहिये हरिकें सभ
ग इहि प्रन सारि ॥ इस जन रजनी सखायो भाल

श-श

७४

७५

य ॥ अरु लालन ऊलत पलना खरेदेत ऊलाय-
जमला अर्जन तोरि तोरे हृदे प्रेम बढाय ॥ ऊढक
नात पलाम पलव देऊ देत दिवाय ॥ कीर पिंजरा
देत अंगरी लेत श्याम भजाय ॥ वका सरकी चौच
फारी दृष्टि अव रज लाय ॥ विनाही एक सदनेमै
हरि नेऊ धरतन पाय ॥ अचा सर सख पेदि निक

रागिनी राम कली जाल ३ अष्टपदी ॥ बलि ब
लि चरित्र गोकुल राय ॥ इति अस्याई । सब नल
को पान कीनो पीवत ह्य सिराय ॥ इमेतया । अ
यथाभोगः । एतनाके प्राण सोखि रहे उरल पदा
य ॥ कहति जननी ह्य अरत खोजि कछु बन
लाय ॥ त्रिणा वर्त अकासतै गहि सिलाप दक्यो आ

श-श-

७५

75

लागत पाय ॥ चोष नारित सेग मोहन रच्यो रास व
नाय ॥ कहति जननी व्याहकी तव लजत वदन उ
राय ॥ वृषभ भजन हतन कैसी हन्यो पुच्छ फिरा
य ॥ भजन सावन समेत मोहन देवि व्याई गाय-
सेस सहसा कहिन आवे अनेक रसना पाय ॥ ए
करसना सुर कहा करे प्रेग प्रेग नित भाय ॥ ॥

से बाल वक्ष जिवाय ॥ हरे बालक वक्षन वक्षत
हेत दोरी माय ॥ छूटि पसु जब रहत बनमें डुम
नि फूँफूत जाय ॥ लिख्यो हारे नाग कारो देवि
श्याम उयाय ॥ निर्ते काली फणानि ऊपर सप्त ता
ल वजाय ॥ थर्यो गिरि वर दोहनी करत बाहे
पियाय ॥ सकट भंजन प्रसन्न ऊच जग कहिन

रा-रा कौ उदिभ जोरो माति मेरी निहोर ॥ लेजे ललन
७६ वलाउ तेरी खोरि अंवल थोर ॥ वदन चंद विलो
76 कि सीतल होत हिरदो मोर ॥ वैदि जननी मोदजै
बगलारो गोविंद थोर ॥ रसिक बालक सहज ली
ला करत मोखन चोर ॥ रागिनी राम कली ता
ल ३ अष्टपदी । मानहु वात लालन मेरी ॥

राशिनी राम कली ताल ^{गीत} अष्टपदी ॥ हाहाले
उ एको कोर ॥ इति अष्टपदी । वज्रत वेर भई है भू
खे देवि मेरी ओर ॥ उत्पेतरा ॥ अष्टपदी भोगः ॥
मेलि मिथी दूध ओट्योपी औ कैं है जोर ॥ अबही
खिलन देखै है तेरे ग्वाल भयो अति भोर ॥ जयो पे
छी डुम डुम निप्रति करन लागे सोर ॥ खिलिखे

रा.रा. मेघान उदयो सूरज कमल विकास ॥ माइके स
७७ नि वचन हेसि उर आइल रोशुपाल ॥ कीयो भोज
७७ न दीयो अति सावरसिक नैन विमाल ॥ रागि
नी राम कलो ताल जीत अष्टपदी । बिलज मद
न सेंदर अंग ॥ इति अस्याई । जवति जन मन
निरावि उपजत विविध भाव अनेय ॥ इत्येता ॥

इति अस्याई । करो भोजन रोस भूलो हो जमैया तेरो
इत्येतया । अथ आभोगः । हथ दथ नवनीत चूत
एक परु सियाबी प्यार ॥ कहा लोटत थरनि में मेरे
लाल होति प्रवार ॥ गोद वैदे होति बाऊं गाउं तेरे
गीत ॥ खिलि वेकों तोहि बोलत ग्वाल तेरे मीत-
कहौ जाकों ताहि देखौ वैदे तेरे पास ॥ करौ दथि

श-श- प्रलोकिक बाल लीला कौञ्जेन जानी जाइ ॥ मय

७८

78

तासौ मरु सख रसदेन रसिक मिलाइ ॥ रावि

नी राम कली ताल चर्वरी ताले । ब्रजानेदके

दबोष पति भाग्य भवि जाते ॥ इति प्रस्थाई । रसि

क वर गोपिका पीत रस माननेतव जय तमम ह

शि खजाते ॥ अवे । इत्येतत् । अथ प्राभोगः । रुचि

अथ आभोगः । पकरि वच्छरा ऐच्छै चत अपनी दि
स करजोर ॥ कवड़े वच्छले भजत हरिकों जवति
जनकी ओर ॥ देवि परवस भए प्रीतम भयो मन
आनेद ॥ मैंन आकल भई व्याकल गई लाज अमेद ॥
कोउ देखति गहतिको उह सत छाडति गेह ॥ कर
ति भाया अपने मनको प्रकट करि निज नेह ॥ अति

श-श

७५

७९

निहित निज वाङ्मयति मन्त्र राज राज इव रुचिरे ॥ वि
रह विरहानले चारु प्रस्फुर चलत शीकरे रूप शमय
रुचिरे ॥ प्ररुण तरला पोगा शर निहत झल वधूध
ति तव विलोचन सरोजे ॥ मम वदन स्रष्ट मासुरसि
विल सन्त सन्तत मलस गति निर्जित मनोजे ॥ नेद
गे हल वालो दिनस्वी राग सैक संहृद स्वर वृत्त ॥

१८२ हास गल दमल परि मल लव्य मधुप कुल म
वि कमल सदने ॥ अमृत चय गर्व निर्वासना थर
सिंध पायय मनो जाति शमने ॥ स्मित प्रकटित
चारु दंत रुचि वदन विध कौमदी हन निखिल
तापे ॥ विलसलिलता हय कनक कल सदयो
मारकत मणि विवश्यापे ॥ सुभगा सुसखी केद

रा. रा.

८०

८०

ह जयति हत भाव चित्ते ॥ जो वसी मेतिनी विमुक्त
घट्टेण केल निनद गार्जितस्य सिंह सतते ॥ वचन
करुणा कृत दृष्टि दृष्टी रेखा नव जलद मणि करुस
हसिते ॥ रागिनी राम कली नाल चर्वरी
जयति श्री बलभ सवन उदरणा विभवन फेरिनेद
के भवन की केलि होनी ॥ इति अष्टाई ॥ इष्ट

ब्रजवर कुमारिका बाहु हाट कलना सतत मा प्रयत्न
कृत लक्ष ॥ ब्रजस्नात शृणु रसिकता शृणु गोपना
निशय रुचिर लाप लीले ॥ तादृशी क्षण जनिता
कुसम शरभाव भर प्रवृत्तिषु प्रकट तर निखिले ॥
रुचिर कौमार चापल जय व्रीडया बलवी हृदय मृ
दुशमे ॥ प्रकट यन्त्रिज नावर शरवयै रसम शर सि

रा-रा-

८१

81

नकसे भक्त को सनेदसे पारीतै वसकीयो ब्रह्म रा

सी ॥ मनहु इंदवजीति कस सौकरी प्रीति निरा

मकी चलितोति अति विवेकी ॥ रहित अभि मा

नतै वडे सन मोनके शील अरु दोन गोविंद देकी-

सदा निर्मल बुद्धि अष्ट सिधि नव निधि द्वार सेवन

जहो भक्ति दासी ॥ राम राउ गिरिधर जाति आ

गिरि वर धरणा सदा सेवत धरणा द्वार चारो वरणा
भरत पौनी ॥ इत्येतदा । अथ आभोगः । वेदपथवा
स सेरुन मोन दास से ज्ञान को कपिल से कर्म जोयी
साध लक्ष्मन निषन मद्र व्रज राज प्रकट सखरसि
मनो डेड भोगी ॥ सिध सम रोभीर मिलन रेवा
नीर प्रीतिको जल क्षीर व्रज उपासी ॥ थोन को स

रा. रा. ननु जनापे ॥ इत्येतया । अथशाभोयः ॥ दृष्टित
८२
८२
माया वाद वर्ति वदन येसि विहित निज दास जनप
द पाते ॥ अष्टि पय कयन रचितो नेक स ग्रेय म
थित भागवत पीयूष सारे ॥ रास प्रवती भावसत
त भावित हृदय सदय मानस जनि तमो दभारे ॥
निज चरण कमल थरणो परि क्रमण कृति मात्र

पावित वितत तीर्थजाले ॥ कलसेवन विहित श
रणगत शिष्या लपित सेदेह दासै कपाले ॥ निज
वचन पीयूष वर्षयो वित सतत साहित्य प्ररुषजन
भक्त्युक्ते ॥ विविध वाचो शक्ति निगम वचनोदि
नैरपिच हरित दुष्टजन उरुक्ते ॥ ईदृशे सति शि
रसि सर्वदा बलभे सकल कर्तारि दयालौ ॥ केवप

श-श रि देवता भवति हरि दास के सकल साथन रहित

८३

जन कृपालो ॥

83

रागिनी रास कली ताल ॐ जसनाके पद ॥ जस
नसी नाहिकोउ औरदाता ॥ इति प्रस्थाई ॥ जेइन
की सरण जातहैं दोरिकें नाहिकोतेहि छिन करि
स नाथा ॥ इत्यंतश ॥ अथ प्रभोगः ॥ एहि प्रणामो
नरसाखो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विधा
ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन बारनै सबनकी जी

श-श

८५

वन इनहीके हाथा ॥ रागिनी राम कली नाल
जमनाके पद ॥ श्याम सेरा श्याम कैर हीरो जमने
इति अस्याई ॥ खरत अम विडुतै सिंधु सीवहि चली
मानो आनर आली रहीन भवने ॥ श्येतया ॥ अथ
आभोग ॥ कोटि कामहि वारों रूपनैननि हारों
लाल गिरिथरन सेरा करत रमने ॥ हरषि गोविंद

रागिनी राम कली ताल ॐ जसनाके पद ॥ जस
नसी नाहिकोउ औरदाता ॥ इति प्रस्थाई ॥ जेइन
की सरण जातहैं होरिकें नाहिकोतेहि छिन करि
स नाथा ॥ इत्यंत ॥ अथ आभोगः ॥ एहि गणगो
नरसाखो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विथा
ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन बारनै सबनकी जी

श.श.

८६

86

करै गोविंद जसना की जापर कृपा सोई बलभक्त
ल शरण आयो ॥ रायिनी राम कली ताल ॥
जसना के पद ॥ चरण ऐक जरेण जसना देनी
इति प्रस्थाई ॥ कलि जरा जीव उदारत कारण
काटत पाप अवधार पेनी ॥ इत्येतरा ॥ अथ आभो
गः ॥ शरण प्रति शरण यह आय भक्त न नेह सकल

प्रभु देवि इनकी और मानो नव डल हनी आईग
वने ॥ रागिनी राम कली ताल ॐ जसुना के पद
जसुन जस जगत मै जोई गायो ॥ इति अष्टाई ॥
ताकी आसक्त कै रहत है प्राण पति नैन मै बैन मे
रस जो छाये ॥ इत्यंत रा । अथ आभोगः ॥ वेद
प्रमाण की बात यह प्रगम है प्रेम को ऊन पायो ॥

राधा

८७

87

मन मोहन प्रियके संग भक्तन की कैज भीरे ॥ स्त्री
त स्वामी गिरि धरत श्रीविदलता विना नै कनही
धरत थीरे ॥ रागिनी राम कली नाल जस
नाके पद ॥ जोई सख जसना यह नाम आवे ॥ इ
ति अस्याई ॥ तारुपर कृपा करत श्रीवल्लभ प्रभु
सोई जसना जीको भेट पावे ॥ इत्येतरा ॥ अथ रा

यह सबकी सोज सेनी ॥ गोविंद प्रभु विना रहत न
हि एक बिना अतिहि आनंद चंचल जो नेनी ॥ रागि
नी राम कली नाल ॐ जसना के पद ॥ थाइ के जा
इजे जसना तीरे ॥ इति अम्याई ॥ तिनही की महि
मा कहो लौ वर नीये जाई परसत प्रेम प्रेरा नीरे ॥
इत्येतया । अथ आभोगः ॥ तिस दिन के लि करत